



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड I

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 322]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, अक्टूबर 15, 2009/आश्विन 23, 1931

No. 322]

NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 15, 2009/ASVINA 23, 1931

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 अक्टूबर, 2009

अंतिम जांच परिणाम

विषय: चीन जन. गण. से "टायर क्यूरिंग प्रेसों" जिन्हें टायर वल्कनाइजर अथवा टायरों के लिए रबड़ प्रोसेसिंग मशीनों के रूप में भी जाना जाता है, के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच।

फा. सं. 14/22/2007-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) तथा उसकी सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए:

क. पृष्ठभूमि एवं प्रक्रिया

2. नीचे वर्णित प्रक्रिया जांच के संबंध में है।

क. मै. लार्सन एंड टूब्रो लि., चेन्नई, तमिलनाडु (जिसे आगे आवेदक कहा गया है) ने चीन जन. गण. (जिसे आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल की या वहां से निर्यातित टायर के विनिर्माण के दौरान टायरों की क्यूरिंग हेतु प्रयुक्त सभी प्रकार की टायर क्यूरिंग प्रेसों (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष अधिनियम और नियमावली के अनुसार एक आवेदन प्रस्तुत किया था और संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए जांच शुरू करने का अनुरोध किया था। संबद्ध देश को नियम 5(5) के अनुसार आवेदन की प्राप्ति के बारे में सूचित किया गया था।

ख. प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर आरोपित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और उसके प्रभाव की जांच करने और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की शिफारिश करने, जिसे यदि लागू किया जाएगा तो वह धरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए संबद्ध देश के मूल की या वहां से

निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए 16 अक्टूबर, 2008 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया।

- (ग) नियम 6(2) के अनुसार नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास को जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था।
- (घ) प्राधिकारी ने नियम 6(3) के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों और दूतावास को आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रतियां उपलब्ध कराईं। अगोपनीय आवेदन की प्रति अनुरोध करने पर अन्य हितबद्ध पार्टियों को भी कराई गई थी।
- (ङ) प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी के पास उपलब्ध थे) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उन्हें नियम 6(2) तथा नियम 6(4) के अनुसार पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया। निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के एकमात्र निम्नलिखित उत्पादक/निर्यातक से प्राप्त हुआ है :

गुईलिन रबड़ मशीनरी लि., चीन जन.गण.

- (च) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तु के ज्ञात आयातकों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी के पास उपलब्ध थे) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उन्हें नियम 6(4) के अनुसार पत्र जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने की सलाह दी। आयातक प्रश्नावली का उत्तर भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित आयातकों से प्राप्त हुआ है :

क. जे.के.टायर्स लि.

ख. अपोलो टायर्स लि.

- (छ) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण एक सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।
- (ज) जिन अन्य निर्यातकों, उत्पादकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों ने इस जांच में सूचना नहीं दी है, उन्हें असहयोगी हितबद्ध पार्टियां माना गया है।

- (झ) चीन जन.गण. के सभी ज्ञात निर्यातकों और दूतावास को बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार (एमईटी) की प्रश्नावली भेजी गई थी। यद्यपि, चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य पर जांच शुरुआत के प्रयोजनार्थ चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु की परिकल्पित उत्पादन लागत के आधार पर विचार किया गया था। तथापि, प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों को यह सूचित किया था कि उसका प्रस्ताव यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के मद्देनजर आवेदक के दावे की जांच करने का है। अतः चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से यह अनुरोध किया गया था कि वे पैरा-8 के उप पैरा (3) में यथाउल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सके कि क्या सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया जाए।
- (ञ) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंड) से जांच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था। डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त सूचना से यह पता चलता है कि इसमें संबद्ध वस्तु के आयातों के आंकड़े नहीं हैं अतः आईबीआईएस के आंकड़ों पर इस जांच परिणाम में भरोसा किया गया है।
- (ट) प्राधिकारी ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हुए 5 मार्च, 2009 की अधिसूचना द्वारा अपने प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित किए।
- (ट 1) आवेदक तथा अन्य घरेलू उत्पादकों से भी सूचना मांगी गई थी। सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार भारत में उत्पादन की इष्टतम लागत तथा संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत पर आधारित क्षतिरहित कीमत की गणना अनंतिम रूप से की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (ठ) प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात सभी इच्छुक पक्षकारों से प्रारंभिक जांच परिणामों के संबंध में उनकी टिप्पणियां दर्ज करने के लिए कहा गया था।
- (ड) प्राधिकारी ने इच्छुक पक्षकारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए 08.07.09 को एक सार्वजनिक सुनवाई की जिसमें इच्छुक पक्षकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इच्छुक पक्षकारों से लिखित आवेदन एवं प्रत्युत्तर दर्ज करने के लिए कहा गया। इच्छुक पक्षकारों से प्राप्त लिखित आवेदनों एवं प्रत्युत्तरों को जिस सीमा तक संगत समझा जाता था, उन पर जांच परिणामों में विचार किया गया है।
- (ढ) निर्यातक के आंकड़ों के स्तर सत्यापन पर उन्हें यथासंभव आवश्यक सीमा तक लिया गया।

- (ण) नियमावली सुप्रा के नियम 16 के अनुसार जांच परिणामों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधार ज्ञात इच्छुक पक्षकारों को बता दिए गए हैं और उनसे प्राप्त टिप्पणियों पर अनंतिम जांच परिणामों में विचार किया गया है।
- (त) यह जांच 1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च, 2008 (12 माह) अर्थात् जांच अवधि के लिए की गई है। क्षति विश्लेषण के संबंध में रुझानों की जांच में अप्रैल, 2004-मार्च, 2005, अप्रैल, 2005-मार्च, 2006, अप्रैल 2006-मार्च, 2007 की अवधि तथा जांच अवधि शामिल थी।
- (थ) *** यह चिन्ह इस अधिसूचना में किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

ख. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

3. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद "टायर क्यूरिंग प्रेस" है, जिन्हें टायर बल्कनाइजर या टायरों के रबड़ प्रोसेसिंग मशीनों के रूप में भी जाना जाता है। टायर क्यूरिंग प्रेस एक ऐसी मशीन होती है जिसका उपयोग टायर के विनिर्माण के दौरान टायर की क्यूरिंग के लिए किया जाता है। टायर क्यूरिंग प्रेस एक ऐसी मशीन है जिसमें टायरों को अंतिम रूप तथा थ्रेड पैटर्न प्रदान किया जाता है। तप्त सांचों में टायरों को आकार प्रदान किया जाता है और उन्हें बल्कनाइज किया जाता है। सांचों में थ्रेड पैटर्न होते हैं, विनिर्माता की किनारे पर मार्किंग होती है जो कानूनन अपेक्षित होता है। क्यूरिंग के बाद टायरों को सांचों से निकाल लिया जाता है और उन्हें अंतिम रूप में तैयार कर निरीक्षण हेतु ले जाया जाता है।

4. टायर क्यूरिंग प्रेस के आकार का उल्लेख सामान्यतः डोम के आंतरिक व्यास या प्लेटन के व्यास के अनुसार इंचों में किया जाता है। इस प्रकार उस सांचे के अधिकतम आकार का निर्धारण होता है जिसका उपयोग प्रेस में किया जा सकता है। सांचे का व्यास एक निर्णायक मापदंड होता है जिससे किसी टायर के अधिकतम आकार का निर्धारण होता है। जिसकी क्यूरिंग उक्त प्रेस में की जा सकती है। सामान्यतः प्रेस के आकार में जितनी वृद्धि होती है उसमें उतना ही अधिक व्यास के सांचे को समायोजित किया जा सकता है। और इस प्रकार यह अधिक बड़े टायरों को क्योर कर सकता है। टायरों के विभिन्न खंडों के लिए प्रेस के आकारों का व्यापक वर्गीकरण नीचे दर्शाया गया है :

24"-36" - स्कूटर टायर

40" -52" - यात्री कार तथा एलसीवी टायर

55"- 65.5" - ट्रक कार

78" - ट्रैक्टर तथा कृषि उपकरण टायर

85"-185" - ओटीआर टायर (खनन एवं विशेष उपकरण)

वैकल्पिक रूप में इनमें वर्टिकल चक लोडर, सेगमेंटेड मोल्ड ऑपरेटर तथा पोस्ट क्योर इन्फ्लेटर जैसे रूपों को जोड़ा जाता है जिनसे बेहतर उत्पादकता एवं बेहतर उत्पाद हैंडलिंग क्षमता आदि के स्वचालन के रूप में प्रेस को मदद मिलती है जिन्हें ग्राहकों की जरूरत के अनुसार जोड़ा जाता है।

5. टायर क्यूरिंग प्रेसों सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 84 के उपशीर्ष 8477.51, भारतीय व्यापार वर्गीकरण (सुमेलीकृत वस्तु वर्णन एवं कोडिंग प्रणाली पर आधारित) के अंतर्गत 8477.5100 के तहत वर्गीकृत हैं।

6. आवेदक ने दावा किया है कि उनके द्वारा विनिर्मित उत्पाद और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच ऐसा कोई ज्ञात अंतर नहीं है जिसका कीमत, उपयोग, गुणवत्ता आदि पर कोई प्रभाव पड़ सकता हो। आवेदक ने यह भी दावा किया है कि उनके द्वारा और विदेशी उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी तथा प्राथमिक उत्पादन प्रक्रिया तुलनीय है; तथा प्रत्येक उत्पादक उपलब्ध सुविधाओं तथा जरूरतों के आधार पर अपनी उत्पादन प्रक्रिया को परिष्कृत करता है।

7. चीन जन.गण. के सहयोगी निर्यातक गुईलिन रबड़ मशीनरी फैक्टरी ने अनुरोध किया है कि संबंधित उत्पाद मात्रा के अनुसार उत्पादित उत्पाद नहीं है और इसका उत्पादन विशेष जरूरतों के अनुसार ग्राहक के ऑर्डर के अनुसार किया जाता है। संबंधित उत्पाद के निर्माण को सामान्यतः दो खंडों में विभाजित किया जा सकता है जिसमें से एक इस्पात और तांबा से निर्मित आधारभूत निर्माण है और दूसरा डिजाइन किए गए भाग हैं। एक ही उत्पाद प्रकार के लिए संबंधित उत्पाद के निर्माण समान होते हैं किन्तु अलग-अलग ऑर्डरों के अनुसार संबंधित उत्पाद के डिजाइनों के भागों जैसे कि इलेक्ट्रिक भाग तथा धातु के भाग में काफी अंतर होता है।

8. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद यह निवेदन किया गया है कि :

- (क) घरेलू उद्योग ने वस्तुतः यह सिद्ध नहीं किया कि वे घरेलू बाजार में टीसीपी के बड़े आकार का विनिर्माण कर सकते हैं अथवा उन्हें बेच सकते हैं तथा टीसीपी के बड़े आकार समान उत्पाद नहीं हैं और उन्हें जांच के उत्पाद क्षेत्र से अलग कर दिया जाएगा।
- (ख) टीसीपी के प्रमुख घरेलू क्रेता के रूप में जे के तथा अपोलो का मत घरेलू बाजार की वास्तविक स्थिति और घरेलू उद्योग की वास्तविक क्षमता दर्शा सकता है। साथ ही भारतीय घरेलू उद्योग की बाजार स्थिति के संबंध में प्रति जी आर एम की सूचना और भारतीय आयातकों से सूचना के अनुसार याचिकाकर्ता में प्रारंभिक जांच परिणामों के दौरान टी सी पी के 104" तक के बड़े आकार का विनिर्माण करने की क्षमता नहीं है।

- (ग) चूंकि घरेलू उद्योग के पास घरेलू बाजार में टी सी पी के बड़े आकारों की आपूर्ति करने की क्षमता नहीं है, अतः घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए टी सी पी के बड़े आकारों के संबंध में कहां क्षति हुई है ? 104" से अधिक के टी सी पी के बड़े आकारों को उत्पाद क्षेत्र से बाहर कर देना चाहिए ।
- (घ) एक आकार का टीसीपी दूसरे आकार के टीसीपी का स्थान नहीं ले सकता । इस प्रकार 130" आकार का आयातित टीसीपी घरेलू 48" के टी सी पी का स्थान नहीं ले सकता । इसके अतिरिक्त किसी खास आकार के टीसीपी के अंतर्गत भी डीजीएडी को वास्तविक विशिष्टियों की जांच करनी चाहिए क्योंकि विशिष्टियों में अंतरों से कीमतों में भारी परिवर्तन हो जाता है ।
- (ङ) घरेलू उद्योग एन सी वी की याचिका के अनुबंध-1 में घरेलू उद्योग ने स्वीकार किया है कि वह बड़ी मशीनें नहीं बना सकता और इसीलिए उसने प्रारंभिक जांच परिणामों में ऐसा नहीं किया ।
- (च) चूंकि डिजाइन किए गए उत्पाद की किस्म व मशीन आयातित है अथवा घरेलू रूप से खरीदी गई है, सबसे महत्वपूर्ण बात खरीद के लिए "तकनीकी क्षमता" है । इस प्रकार जे.के. अथवा अपोलो जैसे क्रेता एन टी एम और जी आर एम दोनों को तथा उस कंपनी जो आदेश में दी गई तकनीकी विशिष्टि के अनुसार मशीनों का विनिर्माण कर सके, को अपनी अपेक्षित तकनीकी विशिष्टियां देगा ।
- (छ) डीजीएडी को यह जांच करनी होगी कि क्या आयातित और घरेलू टी सी पी में अलग-अलग सहायक हिस्से-पुर्जे/मॉडयूल/विशेषताएं थीं क्योंकि इन पहलुओं से टी सी पी की कीमत पर भारी प्रभाव पड़ता है । इस मामले में वास्तविक विशेषताओं में अंतरों का समायोजन तुलनीय मॉडलों के लिए किया जा सकता है ।
9. प्रकटन विवरण पर अपनी टिप्पणियों में जीआरएम ने यह उल्लेख किया है कि टीसीपी में विशेषताओं में अंतर महत्वपूर्ण है जिसमें अधिकतम प्रयोक्ता अनुकूल विशेषता होती है और जीआरएम इस बात पर सहमति देने में असमर्थ है कि उसके निर्यात भारतीय उत्पाद के समान वस्तु के हए हैं । जीआरएम ने बताया है कि उन्हें रिकॉर्ड में ऐसे किसी साक्ष्य की जानकारी नहीं है जिससे यह पता चल सके कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान 104-129 इंच के आकार की प्रैसों का वाणिज्यिक रूप से उत्पादन किया है । जीआरएम ने 130 इंच और उससे अधिक के आकार को अलग रखने का अनुरोध किया है क्योंकि इनका उत्पादन जाहिर तौर पर घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान नहीं किया है ।
10. मै. लूथरा एंड लूथरा लॉ आफिसेज ने मैसर्स ऑटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसो., मै. अपोलो टायर्स लि. तथा मै. जे.के. टायर्स लि. की ओर से विचाराधीन उत्पाद अथवा समान वस्तु के दायरे के बारे में निम्नलिखित तर्क दिए हैं:

- (क) हालांकि प्रत्येक टायर क्यूरिंग प्रेस का निर्माण एक समान कच्ची सामग्री से किया जाता है, उसमें एक जैसी प्रौद्योगिकी का उपयोग होता है और उसे एक जैसे ग्राहक में वितरित किया जाता है। तथापि, यह माना जाना चाहिए कि अलग-अलग आकारों की प्रेसों और विनिर्देशन "समान" उत्पाद नहीं हैं।
- (ख) प्रेस के सही विनिर्देशन के अनुसार कीमतों में भारी अंतर होता है। प्रत्येक प्रेस का एक अत्यंत विशिष्ट कार्य होता है और एक प्रेस को दूसरे प्रेस के स्थान पर प्रयुक्त नहीं किया जा सकता जो आकार, प्रकार और अनुषंगी सामग्री जैसे समस्त पहलुओं के पूर्णतः समान नहीं होती है।
- (ग) गुणवत्ता, डिलीवरी अनुसूची का पालन करने की टीसीपी विनिर्माता की क्षमता और अपेक्षित विशिष्ट प्रेस के विनिर्माण की उसकी क्षमता भी निर्णायक कारक होते हैं, जो क्रय संबंधी निर्णय में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- (घ) एलएंडटी तथा अन्य घरेलू विनिर्माताओं को बड़े आकार की प्रेसों का उत्पादन करने की क्षमता की जानकारी नहीं है। वे सामान्यतः 45" से 65.5" के बीच तथा 78" की प्रेसों की सामान्यतः आपूर्ति करते हैं और दुर्लभ मामलों में उन्होंने इससे बड़े आकारों की आपूर्ति की है।
- (ङ) हमारा माननीय डीजीएडी से विनम्र अनुरोध है कि जांच के दायरे को केवल उन्हीं आकारों तक सीमित रखा जाए जिनका उत्पादन आधार वर्ष से जांच अवधि तक एल एंड टी द्वारा किया गया था।

प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद यह निवेदन किया गया है कि :

- (च) विभिन्न आकारों के टी सी पी "समान उत्पाद" नहीं हैं। जैसा कि प्रत्येक टी सी पी कई पहलुओं से दूसरे से भिन्न होता है और कोई वास्तव में यह नहीं कह सकता कि 48" का टी सी पी 91" के टी सी पी के समान है।
- (छ) अलग-अलग टी सी पी में मौलिक अंतरों को ध्यान में रखते हुए पाटन मार्जिन तथा कीमत की कटौती अलग-अलग आकारों के अलग-अलग टी सी पी के लिए की जानी चाहिए और पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के मामलों पर तदनुसार विचार किया जाना चाहिए।
- (ज) विचाराधीन उत्पाद वास्तव में उत्पादित आकारों तथा प्रारंभिक जांच की अवधि के दौरान बेचे गए आकारों तक सीमित होनी चाहिए क्योंकि जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ताओं द्वारा विनिर्मित केवल वही आकार वास्तव में आयात द्वारा क्षतिग्रस्त हुए

कहे जा सकते हैं । ऐसे उत्पादों के विनिर्माण के लिए याचिकाकर्ताओं की कमजोर और अपरीक्षित भावी क्षमता का अनुमान लगाकर डी जी ए डी ने उन आकारों के लिए याचिकाकर्ता को शुल्क संरक्षण प्रदान किया है जो उन्होंने भारत में प्रयोक्ताओं को गंभीर क्षति पहुंचाकर विनिर्मित नहीं किए हैं ।

- (झ) मैग्नेट प्रयोक्ता एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में न्यायाधिकरण के निर्णय की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है जिसमें यह मानने के लिए कहा गया है कि मैग्नेट रिंगों के ग्रेड (विषयगत वस्तु) जिनका विनिर्माण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया गया है, पाटनरोधी जांच परिणामों से अलग किए जाने के अध्वधीन हैं ।
- (ञ.) डी जी ए डी की यह टिप्पणी कि प्रैस के बड़े आकारों के लिए उपलब्ध सुविधाओं का भी प्रैस के छोटे आकारों के लिए प्रयोग किया जा सकता है, सही साबित नहीं होगा ।
- (ट) इसके अतिरिक्त, यह मानते हुए कि डी जी ए डी की टिप्पणियां वस्तुतः सही हैं, तब भी डी जी ए डी के जांच परिणामों का व्युत्क्रम कभी भी सही नहीं हो सकता । एन एंड टी तथा अन्य घरेलू विनिर्माताओं के बारे में यह जानकारी नहीं है कि उनके पास बड़े आकार के प्रैस का उत्पादन करने की क्षमता है अथवा नहीं । वे सामान्यतः 78" तक के और बहुत कम मामलों में उनसे बड़े आकार के प्रैसों की आपूर्ति करते हैं । डी जी ए डी ने यह दर्शाने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया है कि 104" से बड़े आकार के टी सी पी वास्तव में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित किए गए हैं ।
- (ठ) डीजीएडी ने इस संबंध में कोई निष्कर्ष नहीं दिया है कि सुपुर्दगी कार्यक्रम में समय का विलंब क्यों हुआ जो कि एक ऐसा पहलू है जो ऑर्डर देते समय क्रेताओं के दिमाग में होता है, इस पर घरेलू उद्योग को क्षति निर्धारित करते समय विचार नहीं किया जाना चाहिए ।
- (ड) यह अनुरोध किया गया है कि डी जी ए डी को विभिन्न आकारों के टी सी पी की "समान वस्तुओं" के मुद्दे पर अपने जांच परिणामों पर पुनः विचार करना चाहिए और वर्तमान जांच को केवल उन टी सी पी के आकारों तक ही सीमित रखना चाहिए जिनका जांच अवधि के दौरान भारत में आयात किया गया है और उसमें एक विनिर्दिष्ट आकार से अधिक के टी सी पी के निर्माण के लिए घरेलू उद्योग की सीमित क्षमता को ध्यान में रखा जाना चाहिए ।

11. प्रकटन विवरण के बाद मै0 लूथरा एंड लूथरा लॉ आफिसेज ने यह बताया है कि डीजीएडी को विशिष्ट रूप से 130 इंच और उससे अधिक की टीसीपी को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखना चाहिए और जांच परिणामों में स्पष्ट तौर पर यह उल्लेख होना चाहिए कि संस्तुत शुल्क केवल 104 इंच तक की टीसीपी के लिए है ।

12. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद घरेलू उद्योग का अनुरोध

- (क) टायर क्यूरिंग प्रैस का आकार डोम के आंतरिक व्यास अथवा प्लेटन के व्यास द्वारा सामान्यतः इंचों में दर्शाया जाता है। यह उस मोल्ड के बड़े से बड़े आकार को निर्धारित करता है, जिसका प्रयोग प्रैस में किया जा सकता है। मोल्ड का व्यास वह महत्वपूर्ण मानदंड है, जो उस प्रैस में सुरक्षित रखने के लिए टायर के बड़े से बड़े आकार को निर्धारित करता है।
- (ख) खड़े चक लोडर, खंडित मोल्ड ऑपरेटर और पोस्ट क्योर इन्फ्लेटर्स, जो स्वचालन और बेहतर उत्पादकता तथा बेहतर उत्पाद सार-संभाल क्षमता आदि में प्रैस की सहायता करते हैं, जैसे वैकल्पिक संयोजन ग्राहक की आवश्यकताओं के आधार पर जोड़े जाते हैं।
- (ग) इच्छुक पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया था कि विभिन्न प्रकारों के टायर क्यूरिंग प्रैस आपस में बदलकर प्रयोग नहीं किए जा सकते और इसीलिए वे समान वस्तु नहीं हैं। न ही निर्दिष्ट प्राधिकारी ने और न ही घरेलू उद्योग ने परस्पर बदलकर प्रयोग की जा सकने वाली टायर क्यूरिंग प्रैस के विभिन्न आकारों के बारे में विचार किया है।
- (घ) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित टायर क्यूरिंग प्रैस और चीन जनवादी गणराज्य से आयातित प्रैस उत्पाद विशेषताओं, उत्पादन प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रिया, कच्ची सामग्री प्रकार्य और प्रयोग, कीमत, वितरण एवं विपणन, ग्राहक वर्गीकरण, उत्पादन की दृष्टि से समान वस्तु हैं।
- (ङ) घरेलू उद्योग ने 130" तक की प्रैसों का पहले ही विनिर्माण और आपूर्ति की है, जिसके ब्यौरे रिकॉर्ड में हैं। डिजाइन और विनिर्माण दोनों की दृष्टि से वर्तमान सुविधा से 130" से बड़ी प्रैसों का उत्पादन किया जा सकती है।

13. अंतिम विवरण के उत्तर में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :

क. कानून में ऐसी कोई बात नहीं है जिसके तहत पाटनरोधी शुल्क लागू होने वाले विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को सीमित करने की अनुमति हो। यह सत्यापित तथ्य कि 104 इंच से अधिक की टीसीपी का अब तक भारत में आयात नहीं हुआ है। अतः यह कोई कानूनी या तथ्यात्मक आधार नहीं है जिसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि 104 इंच से अधिक की टीसीपी का भविष्य में आयात किया जा सकता है।

ख. कोरिया से एकीलोनाइट्राइल बुटाडिन रबड से संबंधित मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह माना था कि उस स्थिति में किसी उत्पाद को वर्तमान जांच के दायरे से अलग रखना उचित नहीं

होगा जब उसका भारत को निर्यात किया गया हो क्योंकि पाटन की स्थिति को न तो सिद्ध किया गया है और न ही उसका खंडन किया गया है। प्राधिकारी के लिए यह अधिक उचित होगा कि वह उस स्थिति में किसी निर्यातक द्वारा बाहर रखने के विशिष्ट अनुरोध को स्वीकार करे जब उसका विनिर्माण याचिकाकर्ता द्वारा न किया गया हो। अतः प्राधिकारी इन जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ इस बात की पुष्टि करते हैं कि वर्तमान जांच परिणाम के क्षेत्र में इन देशों से एनवीआर के समस्त प्रकार शामिल हैं।

ग. यदि किसी ने उच्च आकार की प्रैस की बाजार में जरूरत होती है तो घरेलू उद्योग उसकी आपूर्ति कर सकता है और नहीं भी। यदि घरेलू उद्योग आपूर्ति कर सकता है जैसा कि प्रकटन विवरण में स्वीकार किया गया है तो उसे अलग रखने का कोई विधित और तथ्यात्मक आधार नहीं है। वस्तुतः प्रस्तावित अलग रखने के कारण से घरेलू उद्योग इस प्रकार के अलग रखे जाने की स्थिति में चीन के उत्पाद के साथ उचित प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति में नहीं होगा।

घ. जहां तक सुझाई गई समीक्षा के विकल्प का संबंध है, यह स्पष्ट नहीं है कि घरेलू उद्योग ने किस प्रकार ऐसी प्रैसों को अलग रखने की मांग की है जब निर्दिष्ट प्राधिकारी ने नियम 23 की व्याख्या इस प्रकार की है ताकि पूर्ण समीक्षा की जा सके और निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विगत में यह निर्णय लिया है कि (भले ही वह उच्चतम न्यायालय के निर्णय के प्रतिकूल हो) उत्पाद के क्षेत्र के बारे में आंशिक अंतरिम समीक्षा अनुमत्य नहीं है।

ड. अनुरोध है कि शुल्क को 130 इंच तक की टीसीपी पर सीमित रखने का प्रस्ताव किसी विधिक और तथ्यात्मक आधार से रहित है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

14. प्राधिकारी ने इस मुद्दे की विस्तार से जांच की है और इस संबंध में यह नोट किया गया है कि प्रैसों के सभी आकारों (चाहे उनका जांच अवधि में आयात किया गया हो अथवा नहीं) का विनिर्माण घरेलू उद्योग की विनिर्माण क्षमता में किया जाता है। आगे यह नोट किया गया है कि प्रैसों के बड़े आकारों के लिए उपलब्ध सुविधा का उपयोग प्रैसों के छोटे आकारों के लिए भी किया जा सकता है। तथापि, तकनीकी जरूरत प्रैस के आकार के अनुसार अलग-अलग होती है। प्रैसों की तुलनीयता के बारे में हितबद्ध पार्टियों द्वारा की गई आपत्ति के संबंध में यह नोट किया गया है कि प्रैसों के सभी आकारों के लिए केवल तकनीकी निर्माण तक विनिर्माण तुलनीय है और यह एक विक्रेय वस्तु है। तथापि, प्रैस विद्युत पैनलों, न्यूमेटिक पैनल तथा वाल्व बैटरी आदि के बिना अधूरी होती है। ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार प्रैस को वर्टीकल चक लोडर, सेगमेंटेड मोल्ड ऑपरेटर तथा पोस्ट क्योर इन्फ्लेटर आदि जैसी अतिरिक्त विशेषताएं जोड़कर ग्राहकों के अनुकूल बनाई जा सकती है जिससे प्रैस को स्वचालन बेहतर उत्पादकता तथा बेहतर उत्पाद हैंडलिंग क्षमता आदि के रूप में मदद मिलती है।

15. घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्रैसों के समान आकार का उपयोग आयातित उत्पाद के स्थान

पर घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित प्रैसों के लिए किया जा सकता है तथा अतिरिक्त विशेषताएं ग्राहकों की वैकल्पिक जरूरत ही होती हैं। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित प्रैसों संबंध देश से आयातित उत्पाद की "समान वस्तु" हैं। जहां तक उत्पादों के दायरे को जांच अवधि के दौरान आयातित आकारों तक सीमित रखने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रैसों के निर्माण उनके आकार को ध्यान में रखे बिना एक समान सुविधा में किया जा सकता है। यद्यपि उच्च आकार की प्रैसों के लिए उच्चतर तकनीकी कुशलता तथा जानकारी की जरूरत होगी। घरेलू उद्योग के पास सभी प्रकार की प्रैसों और प्रैसों के विभिन्न अंतरों का उत्पादन करने की क्षमता है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे को केवल जांच अवधि के दौरान आयातित प्रैसों के आकारों तक सीमित करने का कोई कारण नहीं है। यह भी तर्क दिया गया है कि विचाराधीन उत्पाद घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित आकारों तक सीमित रखा जाना चाहिए क्योंकि उससे घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित न किए गए आकारों को क्षति नहीं हो सकती। प्राधिकारी ने इस मुद्दे की जांच की है और यह नोट करते हैं कि 104" तक की प्रैसों के लिए आयात किया गया है। घरेलू उद्योग केवल इस आकार की प्रैस का ही उत्पादन नहीं कर रहा है बल्कि बड़े आकार की प्रैसों (130 इंच) का भी उत्पादन कर रहा है। इस स्तर पर यह सिद्ध हो गया है कि घरेलू उद्योग 130 इंच तक की प्रैसों का विनिर्माण कर सकता है। घरेलू उद्योग को बड़े आकार की प्रैसों का विनिर्माण अभी करना है, यद्यपि ऐसा कोई संकेत नहीं है कि घरेलू उद्योग बड़े आकार की प्रैसों का विनिर्माण करने की स्थिति में नहीं है। विचाराधीन उत्पाद सभी आकारों की टायर क्यूरिंग प्रैसों हैं अतः विचाराधीन उत्पाद क्षेत्र सीमित करना संभव नहीं है क्योंकि आयात किसी भी आकार (बड़ा अथवा छोटा) का हो सकता है, इसी प्रकार घरेलू उद्योग भी बड़े आकार की प्रैसों का विनिर्माण कर सकता है। तथापि, प्राधिकारी इस तथ्य के मद्देनजर कि घरेलू उद्योग को अभी बड़े आकार की प्रैस का विनिर्माण करना है, अभी तक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित बड़े से बड़े आकार की प्रैसों पर शुल्क लगाए जाने की सिफारिश कर रहे हैं ताकि यदि घरेलू उद्योग बड़े आकार की प्रैस का विनिर्माण करने की स्थिति में नहीं है तो क्रेता को कोई हानि न हो। घरेलू उद्योग बड़े आकार की प्रैस का विनिर्माण करने के लिए उपलब्ध क्षमता/सुविधा के आधार पर भविष्य में जांच परिणामों की समीक्षा की मांग कर सकता है। पाटनरोधी नियमावली में बदली हुई परिस्थितियों की समीक्षा करने का प्रावधान है और समीक्षा का आवेदन प्राप्त होने के बाद इसका पालन किया जाएगा।

ग. घरेलू उद्योग तथा आधार

16. यह आवेदन मैसर्स लार्सन एंड टूब्रो लि., चेन्नई द्वारा दायर किया गया है और आवेदक भारत में संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादकों में से एक है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में संबद्ध वस्तु के अन्य उत्पादक हैं अर्थात् मैसर्स देवन मशीन्स प्रा.लि., चेन्नई; मै. ट्राइमैक मशीनरी मैनु. प्रा.लि., नवी मुंबई; अल्फ्रेड हर्बट (इंडिया) लि., कोलकाता तथा स्पेसिफिक इंजी. कार्पो. प्रा.लि., नवी मुंबई।

17. मैसर्स लूथरा एंड लूथरा लॉ आफ्सीसेज में मै. आटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसो., मै. अपोलो टायर लि. तथा मै. जे.के. टायर्स लि. की ओर से यह अनुरोध किया है कि याचिकाकर्ता ने टीसीपी विनिर्माण बाजार में अन्य प्रमुख उत्पादकों पर आयातों के प्रभाव का विश्लेषण नहीं किया है।

158 जांच शुरुआत के बाद आवेदक के अलावा, संबद्ध वस्तु के किसी भी घरेलू उत्पादक ने जांच से संगत कोई सूचना प्रदान नहीं की है।

19. पहल के बाद आवेदक को छोड़कर विषयगत वस्तु के किसी भी घरेलू उत्पादक ने जांच से संबंधित कोई सूचना नहीं दी है।

20. देश में संबद्ध वस्तु का समस्त ज्ञात उत्पादकों के उत्पादन (आवेदक के अनुमान के अनुसार) को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आवेदक का उत्पादन भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन के 50% से अधिक बनता है और वह यह मानते हैं कि इस जांच के प्रयोजनार्थ मैसर्स लार्सन एंड टूब्रो लि., चेन्नई के पास नियम 5(3) के अनुसार आधार है और वह नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग है।

घ. न्यूनतम सीमाएं

21. प्राधिकारी द्वारा आईबीआईएस से प्राप्त आयात के आंकड़ों और चीन के सहयोगी निर्यातक तथा सहयोगी आयातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात कुल आयात बनते हैं। अतः संबद्ध देश से हुए आयात न्यूनतम स्तर से अधिक हैं।

ड. गोपनीयता

22. प्रकटन विवरण के उत्तर में मै0 लूथरा एंड लूथरा लॉ आफ्सीसेज ने यह अनुरोध किया है कि घरेलू उद्योग को अपनी विस्तार योजना/कार्यकलापों को गोपनीय रखने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उन्होंने आगे यह उल्लेख किया है कि टीसीपी के परिकलित सामान्य मूल्य के घटक और संबद्ध देश के लिए सी एन वी के निर्धारण हेतु किए गए समायोजनों का खुलासा किया जाना चाहिए।

23. जी आर एम ने यह अनुरोध किया है कि याचिकाकर्ताओं द्वारा दायर आंकड़ों और खासकर उनके द्वारा भरोसा किए गए विभिन्न अनुमानों के संबंध में अत्यधिक गोपनीयता बरती गई है। परिकलन हेतु माननीय प्राधिकारी द्वारा भरोसा किए गए आंकड़ों के स्रोत का भी किसी भी चरण पर संबंधित सी एन वी और एनआई पी के बारे में खुलासा नहीं किया गया है और यह ई यू/ ईसी सहित ख्याति प्राप्ति एडी क्षेत्राधिकारों की स्थापित परंपरा के प्रतिकूल है।

24. प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के गोपनीयता के दावों की जांच की है। इस जांच परिणाम में घरेलू उद्योग के क्षमता, उत्पादन और बिक्री तथा आयात के आंकड़ों को गोपनीय रखा गया है। अन्य सूचना को गोपनीय नहीं माना गया है यदि प्रतिवादी पार्टी ने सूचना को गोपनीय रखने का पर्याप्त

औचित्याधार न दिया हो । ग्राहकों, लागत, कीमत और आंकड़ों के संबंध में घरेलू उद्योग के आंकड़ों से उनके प्रतिस्पर्धियों को प्रतिस्पर्धी लाभ मिलेगा जिन्हें गोपनीय रखा गया है । सहयोगी निर्यातक और आयातकों द्वारा प्रदत्त गोपनीय सूचना को उनके दावे के अनुसार गोपनीय रखा गया है ।

च. अनुरोध तथा उठाए गए मुद्दे

25. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु के एक उत्पादक/निर्यातक (गुलियन रबड़ मशीनरी लिमिटेड, चीन जन.गण.) ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर में अपना अनुरोध किया है । ग्राहकों या आयातकों (जे.के.टायर्स लि. और अपोलो टायर्स लि.) ने भी निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर दिया है और वर्तमान जांच से संगत सूचना उपलब्ध कराई है । मै मैसर्स लूथरा एंड लूथरा लॉ आफ्सीसेज नैं मै. आटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसो., मै. अपोलो टायर लि. तथा मै. जे.के. टायर्स लि. की ओर से इस जांच परिणाम में संगत स्थानों पर जिन अनुरोधों पर कार्रवाई की गई है, उनके अलावा, अनुरोध किये हैं ।

छ. पाटन मार्जिन का निर्धारण

छ.1 बाजार अर्थव्यवस्था के दावों की जांच

26. जांच की शुरुआत के चरण पर प्राधिकारी ने किसी पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसार चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में मानते हुए कार्रवाई की थी । जांच शुरुआत के बाद प्राधिकारी ने उक्त देश में उत्पादकों/निर्यातकों को जांच शुरुआत संबंधी सूचना का उत्तर देने और उनके बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के निर्धारण से संगत सूचना उपलब्ध कराने की सलाह दी थी ।

27. प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(3) में निर्धारित मानदंडों के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का खंडन करने के लिए सभी ज्ञात निर्यातकों को एमईटी प्रश्नावली की प्रतियां भेजी थीं । प्राधिकारी ने चीन की सरकार से यह भी अनुरोध किया था कि वह अपने देश के उत्पादकों/निर्यातकों को सूचना प्रदान करने की सलाह दें ।

28. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के पैराग्राफ, अनुबंध 1 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातक पैराग्राफ 8 के उप पैरा(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं और उसके विपरीत सिद्ध करते हैं । चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार विषयक प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

- (क) कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;
- (ख) इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बड़े खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यक्षीन हैं;
- (ग) इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यक्षीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- (घ) विनिमय दर का परिवर्तन ब्याज की दर पर किया जाता है ।

29. ग्यूलिन की मेट तथा निर्यात कीमत के संबंध में घरेलू उद्योग का अनुरोध

- (क) विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन और बिक्री में संलग्न उत्पाद एवं क्रियाकलापों के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए यह तथ्य कि क्या ग्यूलिन ने सीधे ही माल बेचा या किसी अन्य कंपनी के माध्यम से बेचा, इस स्थिति को विकृत नहीं करता कि कंपनी ने प्राधिकारी ने महत्वपूर्ण सूचना छिपाई है ।
- (ख) इस उद्योग में खरीद और बिक्री की निम्नलिखित प्रक्रिया है :- उत्पादन एवं आपूर्ति की क्षमता की स्थापना, ऊर्जा तैयार करना, तकनीकी प्रस्ताव, कीमत प्रस्ताव, बातचीत, आपूर्तिकर्ता द्वारा संशोधित प्रस्ताव, प्रस्ताव की स्वीकृति, क्रय आदेश देना, तकनीकी अनुमोदन, वाणिज्यिक उत्पादन, संस्थापन एवं प्रारंभ करना, स्थल प्रचालन संबंधी प्रशिक्षण और मशीन का रखरखाव। ऐसी स्थिति में कोई भी उत्पादक हमेशा प्रैस के आकस्मिक क्रेता के बारे में जानकारी रखता है, उत्पादक/विक्रेता हमेशा बाजार प्रतिस्पर्धा से अवगत होता है ।
- (ग) ग्यूलिन एक असहयोगी निर्यातक उत्पादक है । ग्यूलिन द्वारा अपने प्रारंभिक प्रश्नावली के उत्तर में किए गए दावों, एटीएमई द्वारा अपनी पहल के उत्तर में किए गए दावों, प्रारंभिक जांच परिणामों से पहले निर्दिष्ट प्राधिकारी के पत्र के उत्तर में ग्यूलिन द्वारा किए गए दावों, प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद ग्यूलिन द्वारा किए गए दावों, मौखिक

सुनवाई के समय ए टी एम ए द्वारा किए गए दावों के कारण अलग से कोई पाटन मार्जिन निर्धारित नहीं किया जाना चाहिए ।

- (घ) संलग्न प्रक्रिया और कानूनी प्रावधानों का ध्यान में रखते हुए किसी भी दशा में भारत में सामान के पहुंचने की तारीख निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए आधार नहीं हो सकती । वर्तमान मामले में निर्यात कीमत आदेश स्वीकार करने की तारीख अथवा क्रय आदेश की तारीख के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए क्योंकि वे बिक्री की वास्तविक शर्तें निर्धारित करते हैं ।
- (ङ) मै. ग्यूलिन रबड़ मशीनरी फैक्ट्री चीन में संबद्ध वस्तु की उत्पादक है जो कि चीन नेशनल केमिकल इक्विपमेंट कार्पोरेशन की सहायक कंपनी है और उसके प्रबंधन का चयन चीन नेशनल केमिकल इक्विपमेंट कार्पोरेशन द्वारा किया जाता है ।
- (च) ग्यूलिन और चीन नेशनल केमिकल इक्विपमेंट कार्पोरेशन सरकारी योगदान प्राप्त उद्यम हैं और उसमें कोई निदेशक बोर्ड तथा ग्यूलिन के लिए शेयरधारक बोर्ड नहीं है । ग्यूलिन का कानूनी प्रतिनिधि एक फैक्ट्री निदेशक है, जिसकी नियुक्ति चीन नेशनल केमिकल इक्विपमेंट कार्पोरेशन द्वारा की जाती है ।
- (छ) इस प्रकार, महत्वपूर्ण व्यापारिक निर्णयों के संबंध में महत्वपूर्ण सरकारी हस्तक्षेप को नकारा नहीं जा सकता ।
- (ज) संबंधित उत्पाद के लिए इस्पात एक प्रमुख निवेश है । विभिन्न मामलों में प्राधिकारी ने पहले ही माना है कि इस्पात की कीमतों से चीन में बाजार मूल्य का अधिक पता नहीं चलता । वर्तमान मामला कोई अपवाद नहीं है ।
- (झ) विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत का प्रभाव जिस सीमा तक इस्पात की लागत पर पड़ सकता है, उसे इस तथ्य से मापा जा सकता है कि इस्पात उत्पादन लागत का लगभग 45% है ।
- (ञ.) चीन विश्व का सबसे बड़ा इस्पात उद्योग है और उसने अपने को विश्व के अग्रणी निर्यातकों में स्थापित किया है । इस्पात के उत्पादन और निर्यात में यह विस्फोटक वृद्धि चीनी सरकार के समर्थन के बिना संभव नहीं हुई होती । चीनी इस्पात उद्योग की संरचना चीनी सरकार की आगे की भूमिका दर्शाती है । चीनी इस्पात उद्योग प्रमुख रूप से सरकारी नियंत्रण वाला उद्योग बना हुआ है । चीनी सरकार इस्पात उद्योग में प्रत्यक्ष रूप से और गहनता से हस्तक्षेप करती है और इसके विकास में उच्चस्तरीय निर्णायक प्राधिकारी बना हुआ है ।
- (ट) चीन की नई इस्पात नीति में विशिष्ट रूप से कर की वापसी, छूटशुदा ब्याज दर और अन्य अधिमान्य नीतियों के रूप में इस्पात उद्योग की सीधी छूट लगातार बनाए रखने

का प्रावधान है । इस नीति में विदेशी निवेश पर प्रतिबंध जैसे अप्रत्यक्ष समर्थन के विभिन्न स्वरूपों का भी प्रावधान है । यह नीति उद्योग को एक प्राथमिकता का समेकन बनाती है और वस्तुतः पिछले वर्ष में सरकारी स्वामित्व वाले उत्पादकों के कई सुप्रकाशित विलय भी किए गए हैं ।

- (ठ) चीनी सरकार इस्पात उद्योग को जिन तरीकों से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ प्रदान करती है, उनमें शामिल हैं- नकद अनुदान, भूमि अनुदान, वाणिज्यिक आधारों के विपरीत स्वामित्व का हस्तांतरण, इस्पात कंपनियों में ऋण का इक्विटी में परिवर्तन, ऋण को माफ करना और गैर-संपादन ऋणों के संबंध में कोई कार्रवाई न करना, चीनी इस्पात उत्पादकों के स्वामित्व वाले ऋणों को बिलियन डॉलर में माफ करना, अधिमान्य ऋण और निर्देशित ऋण, कर प्रोत्साहन, जिनमें कई किस्म के आय-कर छूट तथा कटौती शामिल हैं, लक्षित अवसंरचना विकास, कच्ची सामग्री की कीमतों को कम करना, आयात लाइसेंस योजनाएं, आयातित लौह अयस्क के लिए कीमतों पर नियंत्रण करने के वास्ते कीमत निर्धारण में हस्तक्षेप, चीनी आर एम बी का मूल्य कम करना ।
- (ड) प्रकटन विवरण के बाद घरेलू उद्योग ने निर्यातक के एम ई टी के दावे के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं ।
- i. चूंकि यह कंपनी राज्य की स्वामित्व वाली कंपनी है, इसलिए राज्य के हस्तक्षेप से इंकार नहीं किया जाता है । यद्यपि कंपनी ने यह सिद्ध किया है कि विगत में उसके प्रचालनों में कोई हस्तक्षेप नहीं हुआ है, तथापि कंपनी ने भविष्य में राज्य के हस्तक्षेप की संभावना से इंकार नहीं किया है ।
 - ii. चूंकि कंपनी का कोई स्वतंत्र निदेशक मंडल नहीं है और यह कि चूंकि फ़ैक्टरी निदेशक की नियुक्ति राज्य के स्वामित्व वाले अन्य उद्यम द्वारा की जाती है इसलिए मुख्य कार्यकारी और प्रमुख प्रबंधन कार्मिक की नियुक्ति में राज्य के हस्तक्षेप की संभावना से इंकार नहीं किया जाता है ।
 - iii. राज्य के स्वामित्व वाला एक उद्यम होने के कारण कंपनी के लिए चीन के लेखा मानकों के अनुरोध लेखा बहियां रखने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि इनका रखरखाव सीमित दायित्व वाली कंपनियों द्वारा किया जाता है । इसका अलावा, वह यह सिद्ध करने में समर्थ नहीं हुई है कि कंपनी की लेखा बहियों की स्वतंत्र लेखा परीक्षा अंतर्राष्ट्रीय लेखा मानकों के अनुसार की जाती है । अतः आय तथा व्यय, परिसंपत्ति एवं देयाताओं की विश्वसनीयता सिद्ध नहीं हो सकती ।
 - iv. कंपनी यह सिद्ध करने में विफल रही है कि प्रमुख निविष्टियों की कीमत में बाजार मूल्य का पर्याप्त प्रदर्शन होता है- जो बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार की एक प्रमुख शर्त है । विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में इस्पात एक मूलभूत निविष्टि है । याचिकाकर्ता ने यह प्रदर्शित करने के लिए पुष्ट साक्ष्य उपलब्ध कराया है कि चीन में इस्पात की कीमतें राज्य निर्देशित नीति के अनुरूप होती हैं । निर्यातक के लिए इस बात को सिद्ध करना अधिक संगत और महत्वपूर्ण है कि इस्पात की कीमतों में बाजार मूल्यों का उचित प्रदर्शन होता

है। निर्यातक ने इस संबंध में कोई खास जानकारी नहीं दी है परंतु उपलब्ध साक्ष्यों से यह पता चलता है कि चीन में इस्पात की कीमतों में बाजार मूल्यों का पता नहीं चलता है।

V. कंपनी ने यह सिद्ध नहीं किया है कि वह समस्त वित्त स्वतंत्र रूप से और राज्य के हस्तक्षेप के बिना प्राप्त करती है।

(ण) प्रकटन विवरण के उत्तर में मै0 गुईलिन रबड मशीनरी फैक्टरी ने यह उल्लेख किया है कि एम ई टी क इंकार हेतु माननीय प्राधिकारी द्वारा प्रकटित प्रमुख मुद्दा राज्य के स्वामित्व का है। इस संबंध में अनुरोध है कि भारतीय नियमों में राज्य के स्वामित्व के बारे में एम ई टी से इंकार करने के आधार का कोई विशिष्ट प्रावधान नहीं है और डब्ल्यू टी ओ में भी भारत का यही विचार रहा है।

(त) कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने सुझाव दिया है कि प्राधिकारी को चाहिए कि वे एल एंड टी के चीनी संबद्ध से संबंधित सूचना/आंकड़ों का प्रयोग करें। याचिकाकर्ता प्रमुख निवेशों अर्थात् चीन में इस्पात की कीमत प्रस्तुत करते हैं जो पर्याप्त रूप से बाजार मूल्य नहीं दर्शाते हैं। यह तर्क याचिकाकर्ता की संबंधित कंपनी के लिए भी सही है।

30. प्रारंभिक जांच परिणामों के उपरांत मै. ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसो., अपोलो टायर्स लि. और जे.के. टायर्स तथा इंडस्ट्रीज का अनुरोध

(क) उचित पाटन मार्जिन विश्लेषण के लिए सी एन वी परिशुद्ध होना चाहिए। 48 इंच जैसी कुछ प्रैसों के आकार का पाटन मार्जिन के लिए विश्लेषण नहीं किया गया है, फिर भी वे जांच अवधि के दौरान आयातित की गई। 48 इंच और 65.5 इंच के लिए सामान्य मूल्य तालिका में शामिल किया जाना चाहिए।

(ख) चूंकि प्रैस का सामान्य मूल्य बनाने में समायोजन है, अतः यह उल्लेख किया गया है कि किसी भी समायोजन में गलती होगी तथा बड़ी गलती होने से भारी गलत सामान्य मूल्य होगा। प्राधिकारी को इस समायोजन में गलती स्पष्ट करनी चाहिए।

(ग) प्राधिकारी ने काम के पश्चात निर्यात कीमत निर्धारित करने के लिए वेट और बैंक लेनदेन का ध्यान रखने के लिए सी आई एफ मूल्य (आई बी आई एस से लिया गया) समायोजित किया है। समायोजन में गलती स्पष्ट की जानी चाहिए क्योंकि भारी गलती से निर्माण के बाद निर्यात कीमत गलत हो सकती है तथा गलत पाटन मार्जिन हो सकता है। 48 इंच की प्रैस और 65.5 इंच की प्रैस के लिए निर्माण के बाद निर्यात कीमत भी यहां शामिल की जानी चाहिए।

- (घ) प्रारंभिक जांच परिणामों में 2005-06 में आयात की मात्रा चीन जन.गण. से 2 अदद के रूप में दी गई है, जो सही नहीं है जैसा कि अपोलो ने 2005-06 में 48 इंच के 4 अदद का आयात किया है ।
- (ङ) डी जी ए डी ने निर्मित सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए प्रमुख निवेशों की घरेलू कीमतें किस आधार पर समायोजित की हैं, यह नहीं बताया है ।
- (च) डी जी ए डी ने 48 इंच और 65.5 इंच के टी सी पी का सी एन वी निर्धारित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया है, जो कि जांच अवधि के दौरान वास्तव में आयात किए गए थे ।
- (छ) डी जी ए डी को चाहिए था वे तकनीकी विशिष्टियों में अंतर तथा अलग-अलग टी सी पी की कीमत को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक टी सी पी के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन निर्धारित करते ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

31. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के एक उत्पादक/निर्यातक मै. गुईलिन रबड़ मशीनरी फैक्टरी ने गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन करने के लिए निर्धारित प्रपत्र में सूचना प्रस्तुत की है ।

32. उत्तर से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मै. गुईलिन रबड़ मशीनरी फैक्टरी (गुईलिन), चायना नेशनल कैमिकल एक्जूपमेंट कार्पो. की सहायक कंपनी है और इसके प्रबंधन का चयन चायना नेशनल कैमिकल एक्जूपमेंट कार्पो. द्वारा किया जाता है । यह भी उल्लेख किया गया है कि "गुईलिन" तथा चायना नेशनल कैमिकल एक्जूपमेंट कार्पो. राज्य के अंशदान वाले उद्यम हैं और उनमें निदेशक मंडल अथवा "गुईलिन" के लिए शेयरधारक मंडल नहीं है । "गुईलिन" का विधिक प्रतिनिधि फैक्टरी निदेशक है जिसकी नियुक्ति चायना नेशनल कैमिकल एक्जूपमेंट कार्पो. द्वारा की जाती है ।

33. उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए "गुईलिन" राज्य के स्वामित्व वाला एक उद्यम है और निर्णायक कारोबारी निर्णय के बारे में राज्य के पर्याप्त हस्तक्षेप से इंकार करना संभव नहीं है । चूंकि निर्यातक इस वजह से बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के अपने दावे की पुष्टि करने में समर्थ नहीं रहा है इसलिए बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार की अन्य जरूरतों के बारे में जांच परिणाम दर्ज करना आवश्यक समझा गया है । अतः प्राधिकारी इस जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान नहीं कर रहे हैं ।

छ.3 चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य

34. जैसा कि पूर्व में रिकार्ड किया गया है कि इस जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ गुइलिन को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान नहीं किया गया है। अतः प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य की गणना की है।

35. प्रकटन विवरण के बाद मै0 गुइलिन ने यह उल्लेख किया है कि यह स्पष्ट नहीं है कि क्या घरेलू उत्पाद की तुलना में जीआरएम द्वारा निर्यातित हल्की और सादा प्रैसों के बीच भौतिक विशेषताओं में अंतर हेतु कोई समायोजन किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

36. इस संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में उपबंधित है कि:

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा, जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहां उचित हो उचित समयसीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी।

37. जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में यह सूचित किया गया था कि घरेलू उद्योग ने उपर्युक्त उपबंध के अनुसार चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु भारत का प्रतिनिधि देश के रूप में सुझाव दिया है। तथापि, इस संबंध में किसी सहयोगी निर्यातक या अन्य हितबद्ध पार्टी ने कोई अनुरोध नहीं किया है।

38. चूंकि बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश और ऐसे तीसरे देश से अन्य देशों के लिए कीमतों के बारे में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है अतः प्राधिकारी ने "किसी अन्य उचित आधार" के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

39. सामान्य मूल्य की गणना समान उत्पादों अर्थात् उस संबद्ध वस्तु के लिए की गई है, जिसकी विशेषताएं आई बी आई एस के आंकड़ों में उपलब्ध सूचना के अनुसार जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यातित वस्तु के समान हैं, गुईलिन द्वारा प्रकटित प्रत्यक्ष निर्यातों और आयातों का ब्यौरा आयातकों ने उपलब्ध कराया है ।

40. अलग-अलग प्रकार की मशीनों के लिए पृथक् रूप से विभिन्न संघटकों हेतु अंतर्राष्ट्रीय कीमत उपलब्ध न होने के कारण अंतर्राष्ट्रीय कीमत को प्रदर्शित करने हेतु विधिवत समायोजित समस्त प्रमुख निविष्टियों की घरेलू कीमत को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य की गणना की गई है । सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु खपत के मानकों, परिवर्तन लागत तथा घरेलू उद्योग के एसजीए व्यय को स्वीकार किया गया है । 5% का उचित लाभ मार्जिन जोड़ने के बाद सामान्य मूल्य की गणना की गई है । जहां तक घरेलू उत्पाद की तुलना में जीआरएम द्वारा निर्यातित हल्की और साधारण प्रैसों के बीच भौतिक विशेषताओं के बीच अंतर के समायोजन हेतु मै0 गुईलिन के दावे का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस प्रकार के अंतर हेतु कीमत अंतर का कोई पुष्टिकृत दावा निर्यातक ने नहीं किया है ।

टीसीपी आकार	सामग्री की लागत (लाख रुपए में)	अन्य विनिर्माण लागत (रुपए)	एसजीए तथा वित्तीय लागत (रुपए)	लाभ मार्जिन 5 % की दर से	परिकलित सामान्य मूल्य (सीएनवी)	40.75रु./अम. डॉ. की दर से परिवर्तन दर पर सीएनवी
48" टीसीपी +वीसीएल+एसएमओ	***	***	***	***	***	***
65.5" टीसीपी +वीसीएल+एसएमओ	***	***	***	***	***	***
78" टीसीपी +वीसीएल नियंत्रण रहित						
91" टीसीपी	***	***	***	***	***	***
93" टीसीपी	***	***	***	***	***	***
104" टीसीपी	***	***	***	***	***	***

छ.4 निर्यात कीमत

41. प्रकटन विवरण के उत्तर में निर्यातक मै0 गुईलिन रबड ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :

- i. भारतीय प्राधिकारी और अन्य प्राधिकारियों के अनेक जांच परिणामों में प्रदर्शित कानूनों के अनुसार जीआरएम के लिए असंबद्ध व्यापारियों के निर्यात के आंकड़े प्रस्तुत करना अपेक्षित नहीं है। मौके पर निर्यातक के निर्धारण के बाद अलग-अलग निर्धारण को अस्वीकृत करने का एकमात्र आधार यह है कि प्रस्तुत आंकड़े सत्यापन के दौरान असत्य पाए जाते हैं। यह इस तथ्य के प्रतिकूल है और इस तथ्य से प्रदर्शित होता है कि न तो सत्यापन रिपोर्ट में जीआरएम द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के बारे में यह प्रकटन किया गया है कि ये सत्यापित रिकार्डों के असंगत हैं।
 - ii. व्यापारी और उसके अंतिम ग्राहकों के बीच हुए किसी सौदे में इस प्रकार की सेवा स्वयं व्यापारी द्वारा प्रदान की जा सकती है क्योंकि उसके पास भी तकनीकी क्षमता होती है। प्राधिकारी के पास यह सिद्ध करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं है कि जीआरएम को अग्रिम रूप में व्यापारियों के जरिए निर्यात सौदों में अंतिम ग्राहकों की जानकारी थी। अतः प्राधिकारी के पास अलग-अलग मार्जिन के दावे के संबंध में जीआरएम को इंकार करने का कोई कारण नहीं है।
42. इसके अलावा, मै0 लूथरा एंड लूथरा ने प्रकटन विवरण के बाद निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :
- i. डीजीएडी ने कुछेक व्यय को घटाने और कुछ समायोजन करने के बाद संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत निकाली है। तथापि, प्रकटन विवरण में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि डीजीएडी ने समस्त कटौतियां क्यों की हैं।
 - ii. किसी पूर्वाग्रह के बिना अनुरोध है कि निर्यात कीमत निकालते समय डीजीएडी ने इस तथ्य पर विचार नहीं किया है कि एड ऑन/कंट्रोल वाली टीसीपी बिरली प्रैसों से अलग है।
43. प्रकटन विवरण के बाद घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :
- क. यह तर्क अस्वीकार किए जाने योग्य है कि कंपनी ने अब प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद उन सौदों का पता लगाने के लिए अपने ग्राहकों से संपर्क किया है जिनमें सामग्री का भारत को निर्यात किया गया है। यदि कंपनी यह दावा करती है कि उसे बिक्री के समय ग्राहक की कोई जानकारी नहीं थी तो उसने किस प्रकार निर्यातों का अब पता लगाया है।
 - ख. कंपनी का यह कहना है कि उन्होंने अपने ग्राहकों से अब सूचना एकत्र कर ली है तो उन्होंने प्राधिकारी को किस प्रकार संतुष्ट किया है कि उन्होंने विस्तृत सूचना एकत्र की है।
 - ग. यदि ऐसी कोई कंपनी जिसने वस्तु का वास्तव में पोत लदान नहीं किया है, निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष नहीं आई तो निर्दिष्ट प्राधिकारी खासकर उस स्थिति में जब उत्पादक को बिक्री के समय ग्राहक की जानकारी ही नहीं थी, किस प्रकार निर्यात कीमत की पुष्टि करेंगे। भारत के लिए अंतिम कीमत उस कीमत से अधिक या कम हो सकती है जिस कीमत पर कंपनी ने घरेलू बिक्री की है।

- घ. यदि कंपनी ऐसे ग्राहक की कोई भी जानकारी न होने का दावा करती है जिसने शुरुआत, संस्थापन और बिक्री पश्चात सेवाएं प्रदान की है तो क्या किसी व्यापारी के पास ये सेवाएं लेने के लिए तकनीकी विशेषता होना अपेक्षित है ।
- ड. जब जांच की कार्रवाई के दौरान भारत को निर्यातित अनेक मशीनों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई तो वर्तमान सूचना की विश्वसनीयता किस प्रकार स्थापित की गई है ।
- च. चूंकि कंपनी का यह दावा है कि उसे बिक्री के समय ग्राहक की जानकारी नहीं थी तो रिकार्डों में निर्यात कीमत की पुष्टि हेतु अब पर्याप्त आधार कैसे उपलब्ध है ।
- छ. एक बार कंपनी द्वारा भारत को हुए निर्यातों की जानकारी न होने का दावा किए जाने के बाद ऐसी कंपनी के रिकार्डों का सत्यापन अपर्याप्त हो जाता है ! कंपनी ये स्वयं यह स्वीकार किया है कि उनके रिकार्डों में भारत में हुए निर्यातों की जानकारी नहीं है । अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास यह सिद्ध करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है कि भारत को हुए समस्त निर्यातों को पूर्ण खुलासा किया गया है ।
- ज. एक बार यह सिद्ध हो जाने के बाद कि कुछ अन्य व्यापारियों ने भारत के लिए वस्तु का बीजक प्रस्तुत किया है, निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटन मार्जिन का तब तक निर्धारण नहीं कर सकते जब तक कि ऐसा अन्य व्यापारी प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं करता है । वस्तुतः जिस कीमत पर भारत में किसी ग्राहक को वस्तु की बिक्री की गई है उसका निर्धारण ऐसी स्थिति में नहीं हो सकता है । यह नितांत असंभव है और वस्तुतः ऐसी स्थिति का भान होता है कि गुइलिन ने केवल उन सौदों की सूचना दी है जिनमें उनके लिए कीमत अनुकूल (अर्थात् उच्चतर) रही है । प्राधिकारी के पास इस बात की जानकारी करने का कोई तंत्र नहीं है कि क्या गुइलिन ने भारत को निर्यातित सामग्री की कीमत के समस्त सौदों (कम कीमत के) की सूचना दी है । गुइलिन का स्वयं का दावा यह है कि उसे भारत को हुई निर्यात बिक्री का पता लगाने के लिए अपने क्रेता से पुष्टिकरण पर भरोसा करना होता है । गुइलिन के रिकार्ड भारत को हुए निर्यातों से संगत सौदों का पता लगाने और उसकी पुष्टि करने के लिए अपर्याप्त थे । यही एकमात्र तथ्य ऐसा है जो कंपनी के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन को अस्वीकार करने के लिए भी पर्याप्त है ।
- झ. जहां तकनीकी क्षमता की प्रासंगिकता को कम नहीं आंका जा सकता, वहीं यह किसी ग्राहक को कोई आपूर्तिकर्ता मानने का केवल शुरुआती कदम होता है । यह अंतिम बिन्दु नहीं हो सकता । दूसरे शब्दों में टीसीपी के भारतीय ग्राहक/क्रेता तकनीकी क्षमता के आधार पर ही चीन की किसी कंपनी को ऑर्डर नहीं दे सकते ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

44. चीन जन.गण. के निर्यातक गुइलिन रबड़ मशीनरी फैक्टरी ने जांच अवधि के दौरान किए गए निर्यातों के सौदेवार ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं। तथापि यह देखा गया था कि "गुइलिन" से भारत को कुछ ऐसे निर्यात हुए थे, जिनका उल्लेख निर्यातक द्वारा प्रकटित निर्यात सौदों में नहीं किया गया था। निर्यातक को स्पष्ट करने के लिए कहा गया था और यह उत्तर दिया गया था कि "ग्यूलिन ने जांच अवधि के दौरान उसके द्वारा भारत को भेजी गई बिक्री की सूचना दी। इसके अलावा ग्यूलिन ने कभी-कभी चीन पत्तन को सुपुर्दगी सहित असंबद्ध व्यापारियों को भी चीन के अंतर्गत बिक्री की है। ग्यूलिन को ऐसे असंबद्ध व्यापारियों के अंतिम ग्राहकों के बारे में कोई अंदाजा नहीं है, ग्यूलिन ऐसी बिक्री की सूचना अपनी घरेलू बिक्री के रूप में देता है क्योंकि सामान की आपूर्ति उसके द्वारा की गई थी अथवा चीन में उसके द्वारा एकत्रित किया गया था और उसे चीन, भारत या अन्यत्र अंतिम ग्राहक होने की कोई जानकारी नहीं है तथा सत्यापित की जा सकने वाली ऐसी बिक्री के संबंध में ग्यूलिन द्वारा कोई वैट वापसी का दावा अथवा प्राप्ति नहीं की गई है।" प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद यह सूचित किया गया था कि निर्यातक के व्यापारी के साथ संपर्क हैं और उनसे यह पुष्टि करने के लिए कहा गया था कि क्या उन्होंने भारत को प्रेसों की पुनः बिक्री की है। यह भी सूचित किया गया है कि व्यापारी पुष्टि करने से इंकार करते हैं फिर भी उन्होंने पुष्टि की है कि भारत को प्रेसों की पुनः बिक्री की गई है और ग्राहकों के नाम भी दिए गए हैं। संशोधित सूचना में निर्यातक ने एक व्यापारी के माध्यम से भारत को किए गए निर्यात तथा भारत को सीधे ही किए गए निर्यात का सौदेवार ब्यौरा दिया है। अन्य व्यापारियों के माध्यम से दूसरे देशों को की गई निर्यात बिक्री, भारत को किए गए निर्यात के बारे में कोई सूचना नहीं दी गई है। सत्यापन के दौरान निर्यातक को सुपुर्दगी दस्तावेज दिखाने के लिए कहा गया था। इस संबंध में यह कहा गया था कि उन्हें अंतिम लक्ष्य की जानकारी नहीं थी, यद्यपि उन्होंने प्रेसों की सुपुर्दगी चीन के घटन पर व्यापारी के निर्देश पर की थी। तथापि, निर्यातक संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं कर पाया कि टी सी पी, जिसके विनिर्माण और संस्थापन के लिए, अंतिम ग्राहक के स्थान से, तकनीकी निवेश की आवश्यकता होती है, अंतिम ग्राहक जाने बिना अंतिम ग्राहक को कैसे बेचा जा सकता है। यह भी सूचित किया गया था कि उन्हें अन्य व्यापारियों को बेचे गए टी सी पी के अंतिम लक्ष्य की जानकारी नहीं है। अनुरोध में निर्यातक ने कहा है कि सबसे महत्वपूर्ण बात "तकनीकी योग्यता" है। उत्पाद के स्वरूप के मदेनजर प्राधिकारी निर्यातक के स्पष्टीकरण को स्वीकार करने में असमर्थ हैं और भारत को निर्यात के लिए दिए गए सौदेवार ब्यौरे पर विश्वास नहीं कर सकता। चूंकि निर्यातक निर्यात कीमत के अपने दावों की सही ढंग से पुष्टि नहीं कर सका जो अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण है अतः प्राधिकारी ने "ग्यूलिन" के लिए पृथक पाटन मार्जिन निर्धारित नहीं किया है।

45. जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ, निर्यात कीमत का निर्धारण आई बी आई एस द्वारा भारत में सूचित किए गए आयात-आंकड़ों, ग्यूलिन द्वारा बताए गए सीधे निर्यात तथा आयातकों द्वारा अपने दिए गए आयात ब्यौरों को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

46. आयात के आंकड़ों में सूचना सीआईएफ मूल्य के आधार पर प्रदान की गई है। निर्यात सौदों में किए गए व्यय को कारखाना निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु गुडलिन द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर घटा दिया गया है। कंपनी ने निर्यात पैकिंग व्यय, अंतरदेशीय परिवहन, हैंडलिंग, बैंक प्रभार और अप्रत्यादेय वैट के लिए समायोजनों का दावा किया है। कमीशन के संबंध में किसी व्यय का खुलासा नहीं किया गया है। उसका खुलासा सत्यापन के दौरान किया गया था और अब कारखाना निर्यात कीमत निर्धारित करने के लिए समायोजित कर लिया गया है। कारखाना निर्यात कीमत का निर्धारण ग्यूलिन द्वारा बताए गए उत्पाद के विवरण तथा आयातकों एवं आई बी आई एस के आयात आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए टीसीपी का आकार-वार निर्धारण किया गया है। इस पद्धति से प्रति टीसीपी कारखाना निर्यात कीमत निम्नलिखितानुसार निर्धारित की गई है :

टीसीपी आकार	कारखानागत निर्यात कीमत (अम.डॉ./मशीन)
48" टीसीपी+ वीसीएल + एसएमओ	***
65.5" टीसीपी+ वीसीएल + एसएमओ	***
78" टीसीपी+ वीसीएल कंट्रोल रहित	***
91" टीसीपी	***
93" टीसीपी	***
104 इंच टीसीपी	***

छ.5 पाटन मार्जिन

47. प्रकटन विवरण के पश्चात मै0 लूथरा एंड लूथरा ने यह अनुरोध किया कि पाटन मार्जिन गलत है क्योंकि अलग-अलग आकार की टीसीपी समान उत्पाद नहीं है और उनका इस बात पर निर्भर करते हुए अलग पाटन मार्जिन निकालना होगा कि क्या ये बिरली प्रैस हैं अथवा क्या उनका आयात कुछेक एड ऑन और अतिरिक्त विशेषताओं के साथ किया जाता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

48. पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ समस्त निर्यातकों के लिए उपर्युक्तानुसार निर्धारित कारखाना सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना उसी प्रकार के तुलनीय आकारों और विवरण के साथ की गई है। भारत पाटन मार्जिन का निर्धारण आईबीआईएस के आंकड़ों में प्रकटित आयातों की मात्रा, आयातकों के उत्तरों और गुलियन के प्रत्यक्ष निर्यात को ध्यान में रखकर किया गया है जो निम्नानुसार है :-

	भारित औसत सामान्य मूल्य (अम.डॉ. प्रति मशीन)	भारित औसत निर्यात कीमत (अम.डॉ. प्रति मशीन)	भारित औसत पाटन मार्जिन (अम.डॉ. प्रति मशीन)	पाटन मार्जिन %
चीन जन.गण. के सभी निर्यातक	***	***	***	31.85

ज. क्षति निर्धारण

घरेलू उद्योग के विचार

49. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि उसे चीन जन.गण. से पाटन के कारण वास्तविक क्षति हुई है। उसने अनुरोध किया है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन तथा खपत की तुलना में वृद्धि हुई है। आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है। भारतीय बाजार में चीन के आपूर्तिकर्ताओं की सतत उपस्थिति से घरेलू उद्योग न केवल उन आर्डरों, जिनमें चीन के व्यक्ति मौजूद थे, में कीमत में कमी आई है अपितु उन आर्डरों में भी कमी आई है जिनमें चीन के व्यक्ति मौजूद नहीं थे। यह बताया गया है कि इस जैसे किसी घरेलू उद्योग में बाजार में कम कीमत के उत्पाद की मात्रा मौजूदगी से समस्त आपूर्तिकर्ता बिक्री गंवाने के भय से कम कीमतें उद्धृत करने के लिए बाध्य हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप बाजार हिस्से, लाभ, निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह के रूप में घरेलू उद्योग का निष्पादन विकृत हुआ है। यद्यपि, उत्पादन तथा बिक्री मात्रा के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है, तथापि संबंधित कीमत के रूप में निष्पादन में गिरावट आई है। इसके अलावा, उत्पादन एवं बिक्री के संबंध में निष्पादन में सुधार एक आर्थिक परिणाम है जब लाभ एवं निवेश पर आय के रूप में निष्पादन उत्पादन, बिक्री मात्रा के रूप में निष्पादन के अनुरूप नहीं होता है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

50. क्षति के खतरे के बारे में निम्नानुसार अनुरोध किया गया है:

- (क) आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। वस्तुतः लगभग नगण्य से बढ़कर आयात की मात्रा प्रस्तावित जांच अवधि में ही 24 मशीन हो गई है जो भारत में मांग की 08 % बनती है।
- (ख) चीन के आपूर्तिकर्ताओं द्वारा उद्धृत कीमतें भारतीय उत्पादकों द्वारा उद्धृत कीमतों से काफी कम हैं। टायर उद्योग को उपलब्ध समग्र लागत लाभ के कारण यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समय जिस कीमत पर आयात हो रहे हैं, उससे बाजार में उत्पाद का आगे और आयात करने की मांग में वृद्धि होने की संभावना है।

- (ग) चीन के उत्पादकों के पास पर्याप्त अप्रयुक्त क्षमताएं हैं । इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि चीन के एक उत्पादक ने 64 मशीनों की आपूर्ति का आर्डर प्राप्त किया है जिसकी डिलीवरी अनुसूची 12 माह से कम की थी । कंपनी इस आर्डर को प्राप्त नहीं कर पाती यदि उसके पास आर्डर पूरा करने के लिए अप्रयुक्त क्षमताएं नहीं होतीं ।

51. **प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-**

- (घ) अपने सदस्यों द्वारा आयातित ए टी एम ए द्वारा दावा की गई प्रेसों प्राधिकारी द्वारा विचार की गई आयात मात्रा में शामिल की गई प्रतीत नहीं होतीं । प्राधिकारी को निर्धारण के लिए इन आयातों पर विचार करना चाहिए ।
- (ङ) विभिन्न प्रकार की टायर क्यूरिंग प्रेसों में भार, लागत एवं कीमतों से जुड़ी भिन्नताएं हैं । अतः मांग की एक इकाई के रूप में अंकों का प्रयोग करते हुए विभिन्न मात्रा मानदंडों का मूल्यांकन इन मानदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन को उपयुक्त रूप से नहीं दर्शा सकता ।
- (च) याचिकाकर्ता ने यह दर्शाने के लिए प्रमाण दिया है कि चीनी प्रतिस्पर्धा भारतीय बाजार में नई नहीं है और यह कि भारतीय उत्पादकों को कुछ समय से कम कीमत वाले चीनी आयातों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी है । चीनी उत्पादक द्वारा कीमतों की सूची दी गई है, जिसमें भारतीय बाजार में चीनी टायर क्यूरिंग प्रेस को बेचने की पेशकश की गई है । प्रमाण के रूप में उपभोक्ता द्वारा प्रयुक्त तीसरे देश को टायर क्यूरिंग प्रेस की चीनी आपूर्ति कम कीमतों की पेशकश करने के लिए घरेलू उद्योग को मजबूर करना पड़ा है ।
- (छ) एक आदेश का मूल्य सामान्य रूप से काफी अधिक होता है और करोड़ों रूपए में जा सकता है । ऐसी स्थिति में प्रत्येक क्रेता सामग्री की ज़रूरतदारी और प्रत्येक उत्पादक सामग्री की बिक्री काफी बाजार अनुसंधान करने के बाद करता है ।
- (ज) संबंधित देश से विषयगत सामानों का आयात क्षति अवधि के दौरान काफी बढ़ा है । आयात जो 2004-05 में संख्या में 1 था, वह जांच अवधि में 24 हो गया । उत्पादन की दृष्टि से आयात 2004-05 में 0.39% से बढ़कर जांच अवधि में 5.76% हो गया । भार की दृष्टि से यह 1.09% से बढ़कर 12.65% हो गया और मूल्य की दृष्टि से 2004-05 में 1.07% की अपेक्षा जांच अवधि में 8.95% हो गया ।
- (झ) मांग की दृष्टि से आयात 0.62% से बढ़कर 7.09% (संख्या में) हो गया, भार की दृष्टि से 2.28 % से बढ़कर 15.30% तथा मूल्य की दृष्टि से जांच अवधि में 1.09% से बढ़कर 8.63% हो गया ।

- (ज) घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में वृद्धि हुई, लाभदायकता में काफी गिरावट आई, बाजार हिस्सा कम हुआ। घरेलू उद्योग के पास वे सभी क्षमताएं उपलब्ध हैं, जो घरेलू बाजार में संबंधित उत्पाद के उत्पादन और बिक्री के लिए बेहतर रूप से उपयोग में लाई सकती हैं। टायर उद्योग बहुत ही अच्छे तरीके से विस्तार कर रहा है जो देश में उत्पाद के लिए मांग की दृष्टि से भारी वृद्धि प्राप्त कर रहा है। उचित समय में काफी मात्रा में आर्डर मिलने की आशा है। बाजार में एकत्रित आयात की उपलब्धता के फलस्वरूप घरेलू उद्योग को इस व्यापार के अवसर की हानि होगी।
- (ट) विचाराधीन उत्पाद के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए विभिन्न संभव तरीकों से उपर्युक्त क्षमता और क्षमता उपयोग के बारे में याचिकाकर्ता द्वारा सूचित किए जाने पर भी क्षमता एवं क्षमता उपयोग उपयुक्त रूप से विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए अपेक्षित विभिन्न सुविधाओं के उपयोग के संबंध में स्थिति नहीं दर्शा सकता है।
- (ठ) कुछ वर्षों में याचिकाकर्ता ने कई पक्षकार विकसित किए हैं, जो उत्पाद की ओर से कुछ प्रसंस्करण क्रियाकलाप कर सकते हैं। उत्पादन प्रक्रिया के दिए गए स्वरूप और किसी समय विशेष में विभिन्न मशीनों पर कार्यभार पर निर्भर रहते हुए याचिकाकर्ता उप संविदागत आंशिक प्रसंस्करण क्रियाकलापों द्वारा कई क्रियाकलाप करते हैं।
- (ड) संख्या की दृष्टि से मांग 109% बढ़ी है परंतु, भार की दृष्टि से मांग 226% तक बढ़ी है।
- (ढ) याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि कीमत कटौती के सही निर्धारण के लिए समान आकार वाली प्रेसों की तुलना की जानी चाहिए।
- (ण) कम कीमत पर बिक्री उस देश से एक आकार विशेष की मशीन के आयात की भारित औसत पहुंच कीमत की उसी आकार की गैर-क्षति बिक्री कीमत तथा जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित मशीन की कीमत से तुलना करके निर्धारित की जानी होती है।
- (त) आधार वर्ष से तुलना करके जांच अवधि में बिक्री लागत 221% तक बढ़ी, बिक्री मूल्य केवल 156% तक बढ़ा। यह बात स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि घरेलू उद्योग कीमतों में कमी दर्शाने वाली लागत में वृद्धि के अनुपात में बिक्री मूल्य नहीं बढ़ा सका।
- (थ) घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री निर्धारण उत्पादन लागत में वृद्धि के अनुरूप नहीं बढ़ा है। घरेलू उद्योग का लाभ क्षति जांच अवधि में घटा है। आधार वर्ष की 100 (सूचीबद्ध) से तुलना करके ब्याज पूर्व लाभ जांच अवधि में घटकर 34 हुआ है।
- (द) घरेलू उद्योग का निष्पादन काफी कम हुआ है। लाभप्रदता 29% से घटकर (बिक्री लागत का) जांच अवधि में 3% तक हो गया।

- (घ) बिक्री 150% से अधिक तक बढ़ जाने पर भी कर पूर्व लाभ घटा है । निवेश पर आय और नकद प्रवाह क्षति अवधि में घटा है ।
- (न) कर्मचारियों की संख्या और भुगतान की गई मजदूरी यह दर्शाती है कि रोजगार बढ़ा है । घरेलू उद्योग को चीनी पाटन के कारण काफी ऑर्डरों का नुकसान हुआ है ।
- (प) क्षति अवधि में सामान की मांग काफी बढ़ी । पाटित आयात की मात्रा भारत में उत्पादन और खपत की दृष्टि से भी समूचे रूप में काफी बढ़ी । आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतें कम हुई हैं । फलस्वरूप घरेलू उद्योग को इस सीमा तक न्यूनतम कीमतों की पेशकश करने के लिए मजबूर होना पड़ा है कि लाभप्रदता लगाई गई पूंजी पर आय और नकद लाभ बहुत अधिक प्रभावित होने शुरू हो गए । घरेलू उद्योग का निष्पादन बाजार हिस्से, लाभ, लगाई गई पूंजी पर आय और नकद प्रवाह की दृष्टि से कमजोर पड़ गया, फिर भी उसमें उत्पादन एवं बिक्री की दृष्टि से सुधार आया । बाजार हिस्से में गिरावट लगाई गई पूंजी पर आय और नकद लाभ, उत्पादन एवं बिक्री की मात्रा में सुधार को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं । उत्पादन एवं बिक्री का उद्देश्य लाभ कमाना है और वही उद्देश्य विफल हो गया, जब उत्पादन एवं बिक्री में वृद्धि पाटन के कारण निवेश पर आय एवं लाभ में कमी आने लगी ।
- (फ) आयात काफी बढ़े हैं । लगभग नगण्य से आयात की मात्रा प्रस्तावित जांच अवधि के दौरान ही 24 मशीनों तक बढ़ी है जो भारत में मांग का 8% दर्शाता है ।
- (ब) चीनी आपूर्तिकर्ताओं द्वारा दर्शायी जा रही कीमतें भारतीय उत्पादकों द्वारा दर्शायी जा रही कीमतों से कहीं कम हैं ।
- (भ) चीनी उत्पादकों के पास भारी अनुपयुक्त क्षमताएं हैं । यह इस तथ्य से सिद्ध है कि एक चीनी उत्पादक ने 64 मशीनों की आपूर्ति के लिए अकेले ही एक ऑर्डर प्राप्त किया है, जबकि सुपुर्दगी कार्यक्रम 12 महीने से कम का था ।
- (म) इस मामले में आपूर्तिकर्ता की वस्तुओं की मालसूची संगत पहलू नहीं है । यह बात बताई गई है कि सामान का उत्पादन केवल पुष्ट ऑर्डरों के अनुसार ही किया जाता है और उनका लदान निर्धारित/प्रतिबद्ध अवधि के भीतर होता है ।
- (य) घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री काफी है । उत्पादन एवं क्षमता की दृष्टि से घरेलू उद्योग अपना निष्पादन सुधार रहा है जैसाकि कुल उपस्कर उपयोग 80% की श्रृंखला में था । तथापि, वित्तीय निष्पादन का विश्लेषण घरेलू बिक्री के लिए ही किया गया है ।

- (कक) घरेलू उद्योग द्वारा पेश की गई सहायक अनुकूलतम कीमतों से कंपनी के निवेशों पर आय, नकद प्रवाह तथा लाभ पर सीधा प्रभाव पड़ा है ।
- (खख) कीमतों में काफी कमी करने के फलस्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा पेश की गई सहायक अनुकूलतम कीमतों के बावजूद विषयगत देश से आयात के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है ।
- (गग) चीनी उत्पादकों द्वारा प्रस्ताविक कम मूल्य को देखते हुए घरेलू उद्योग ग्राहकों की पुछताछ का उत्तर देते समय कम कीमत की पेशकश करने के लिए बाध्य है ।
- (घघ) उत्पादन के अंतर के संबंध में - प्रकाशित वार्षिक रिपोर्ट में रबड़ संसाधन मशीनरी के लिए उत्पादन दर्शाया जाता है और टायर क्यूरिंग प्रेस, रबड़ संसाधन मशीनरी का हिस्सा है । रबड़ संसाधन मशीनरी निम्नलिखित है- टायर क्यूरिंग प्रेस, टी सी पी (वी सी एल, एसएमओ, पीसीआई) की एक्सेसरीज बैंड बिल्डिंग मशीन, टायर, बिल्डिंग मशीन, ट्यूब हीटर, ड्रम, ट्यूब प्रेस, बेल्ट बिल्डिंग ड्रम, ट्यूब सप्लाइसर, बाती मैन्ड्रिन।
- (ङङ) पाटनरोधी अधिनियम की पाद टिप्पणी-7 में प्रावधान है कि बिक्री की तारीख, आर्डर की तारीख, लदान की तारीख और भारत में माल पहुंचने की तारीख से अलग हो सकती है ।
- (चच) प्रत्येक टीसीपी के लिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन को अलग-अलग निर्धारित किया गया है । तथापि प्राधिकारी से अपेक्षा है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए भारित औसत क्षति मार्जिन और पाटन मार्जिन का निर्धारण करे ।
- (छछ) बेंड लिनन के मामले में डब्ल्यू टी ओ का निर्णय का संदर्भ दिया जाता है और उस पर भरोसा किया जाता है ।
- (जज) बाजार हिस्सा, लाभ और निवेश के प्रतिफल और नकद लाभ के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में तेजी से ह्रास हुआ है । नियमों में इस बात की जांच की अपेक्षा नहीं है कि घरेलू उद्योग बी आई एफ आर कंपनी की स्थिति की ओर बढ़ रहा है या नहीं ।
- (झझ) केवल ऐसा नहीं है कि याचिकाकर्ता भारत में विचाराधीन उत्पाद का एकमात्र उत्पादक नहीं है, बल्कि उसे याचिकाकर्ता अन्य घरेलू उत्पादकों तथा चीनी विनिर्माताओं के अनुचित मूल्य निर्धारण से प्रतिस्पर्धा भी करनी होती है ।
- (ञञ) निर्यात बिक्री और घरेलू बिक्री दो अलग-अलग बातें हैं, इसलिए घरेलू बिक्री से संबंधित आंकड़ों का निर्यात से होने वाले घाटे, यदि कोई हों, घर कोई खास असर नहीं पड़ता ।

- (टट) एल एंड टी एक इंजिनियरी मिश्रित रूप है जिसका कारोबार 35,000 करोड़ रु. का है । इसलिए एल एंड टी को सी एफ ओ का ए आर विवरण, सामान्य व्यापार परिदृश्य के संबंध में अधिक है तथा इसमें रबड़ संसाधन मशीनरी के प्रति विशिष्ट कुछ भी नहीं है ।
- (ठठ) लाभ प्राचल और "रोस" के संबंध में आर पी एम अच्छी तरह चल रहा है, इसे आधार रूप में नहीं लिया जा सकता । जरूरी नहीं कि समेकित रिपोर्ट के परिणाम से प्रत्येक उत्पाद की वास्तविक जमीनी सच्चाई का पता चले और माननीय डीजीएडी के पास एल टी एम की लाभप्रदता और "रोस" से संबंधित सभी ब्यौरे उपलब्ध हैं ।
- (डड) यह दर्शाने के लिए पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराए गए हैं कि भारतीय और चीनी उत्पादकों को ऑर्डर देने में मूल्य ही मुख्य विचारणीय तथ्य होता है ।
- (ढढ) तकनीकी प्राचल महत्वपूर्ण मानदंड हैं । जब तकनीकी प्राचल पूरे किए जाते हैं तभी मूल्य की तुलना और बातचीत होती है ।
- (णण) ई-मेल और मूल्य सूची से यह तथ्य स्थापित होता है कि वर्ष 2002 में चीनी प्रतिस्पर्धा मौजूद थी ।
- (तत) आज तक किसी कथित गुम आदेश का कोई साक्ष्य नहीं मिला है । एन एंड टी तारीख, नाम, टी सी पी के प्रकार, आर्डर किए गए नाम आदि का ब्यौरा, मूल्य जैसी गोपनीय सूचना का खुलासा किए बिना उपलब्ध करा सकता है ।
- (थथ) विचाराधीन उत्पाद को 104" तक सीमित करने का कोई औचित्य नहीं है ।
- (दद) ए टी एम ए की गलत सोच प्रतीत होती है न कि निर्दिष्ट प्राधिकारी की । प्राधिकारी का कथन है कि एक विशेष प्रेस का उत्पादन करने की सुविधाओं से युक्त टी सी पी संयंत्र उस आकार से छोटे आकार का उत्पादन भी कर सकता है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह कहीं नहीं कहा है कि संयंत्र किसी भी आकार का उत्पादन कर सकता है ।
- (धध) इन अनुदेशों के साथ एक विवरण संलग्न है जिसमें आपूर्ति में विलंब और उस विलंब के कारण दिए गए हैं । यह देखा जा सकता है कि ग्राहकों ने विस्तृत डिजाइन और ड्राइंग को अंतिम रूप देने में देर कर दी है । अनेक बार भुगतान करने में देर हुई है।
- (नन) डीजीएडी को ग्राहक की ई-मेल कापी/ जे के द्वारा प्राप्त किए जा रहे एक्सेसरीज के आंकड़े प्रस्तुत किए गए जो इस बात का सबूत है कि एल टी एम उन मुद्दों पर ग्राहकों का समर्थन करता रहा है जो उनके "प्रेस" से संबंधित नहीं हैं ।

52. आयातकों तथा प्रयोक्ताओं के विचार

मैसर्स लूथरा एंड लूथरा लॉ आफ्फीसेज नें मै. आटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसो., मै. अपोलो टायर लि. तथा मै. जे.के. टायर्स लि. की ओर से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में निम्नलिखित अनुरोध किये हैं :

- (क) एल एंड टी तथा अन्य घरेलू विनिर्माता नियत तारीख पर आपूर्ति नहीं कर पा रहे हैं जिससे आयातकर्ताओं की परियोजना अनुसूची में विलंब हुआ ।
- (ख) कथित रूप से आई बी आई एस के अनुसार "प्रेसों" के आयात के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़े आयातकों द्वारा जांच अवधि के दौरान या जांच अवधि से पूर्व किए वास्तविक से बिल्कुल मेल नहीं खाते । जे.के. द्वारा 2004-05 में आयात किए गए 91" प्रेस और 2005-06 में अपोलो द्वारा आयातित 48" को छोड़कर शेष अन्य आंकड़े गलत हैं ।
- (ग) "टी सी पी का भारत में आयात" से संबंधित अनुलग्नक 1.2, "याचिकाकर्ता द्वारा टीसीपी के मुम हुए आदेशों" से संबंधित अनुलग्नक 1.6 और "आईबीआईएस आयात आंकड़ों" से संबंधित अनुलग्नक 4 के बीच विसंगति है ।
- (घ) मुम हुए आदेशों से संबंधित आंकड़े पूरी तरह से अस्पष्ट हैं । जिस आधार वाक्य के आधार पर मुम हुए आदेशों की सूची तैयार की गई है वह स्पष्ट नहीं है ।
- (ङ) याचिकाकर्ता ने कुछ ऐसी सूचनाओं को गोपनीय रखा है जो गोपनीय प्रकृति की नहीं हैं । ये सूचनाएं संबंधित "मुम आदेशों" तथा उसकी विस्तार योजना के संबंध में हैं ।
- (च) एक सार्वजनिक सूचीबद्ध कंपनी होने के कारण एस एंड टी के लिए अपनी विस्तार योजनाओं को जनता और निवेशकों के समक्ष लाना आवश्यक है ।
- (छ) पाटनरोधी नियमावली में पाटनरोधी करार का अनुच्छेद 4.1 मुन: उद्धृत किया गया है और उसमें यह भी अपेक्षित है कि क्षति का निर्धारण घरेलू विनिर्माताओं के "प्रमुख" भाग के लिए किया जाए ।
- (ज) याचिकाकर्ता ने क्षति के किसी पहलू के बारे में अन्य प्रमुख तथा महत्वपूर्ण उत्पादकों पर आयातों के प्रभाव का विश्लेषण नहीं किया है और उसने अपने आंकड़ों में क्षति का कोई विश्लेषण नहीं किया है जो स्वयं असंगत तथा गलत है ।
- (झ) व्यापक क्षति विश्लेषण के लिए अपेक्षित है कि आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन कुल घरेलू उत्पादन के एक "बड़े" भाग के लिए किया जाए और याचिकाकर्ता के लिए न केवल कंपनी विशिष्ट आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए अपितु अन्य घरेलू विनिर्माताओं से

संबंधित आंकड़ों को भी ध्यान में रखते हुए क्षति संबंधी कोई विश्लेषण करना अपेक्षित होता है। याचिकाकर्ता द्वारा किया गया वर्तमान क्षति विश्लेषण अपूर्ण तथा समूचे घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव के विश्लेषण की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण है और इस वजह से डीजीएडी द्वारा उसे अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए।

- (ज) याचिकाकर्ता ने केवल पाटनरोधी कार्यवाही के प्रयोजनार्थ आयात आंकड़ों में उल्लिखित मात्रा एवं मूल्य के अंकों में हेराफेरी की है।
- (ट) कुल वेतन एवं मजदूरी से संबंधित सूचीबद्ध आंकड़ों के बारे में IV-क में त्रुटि है।
- (ठ) याचिकाकर्ता ने डब्ल्यूटीओ पाटनरोधी करार तथा भारतीय पाटनरोधी नियमावली का उल्लंघन करते हुए जांच अवधि के लिए क्षति विश्लेषण करने में जांच अवधि के दौरान भारतीयों द्वारा प्रस्तुत और सुपुर्द चीन की प्रैसों के लिए मानी गई बिक्री/आर्डरों को शामिल करने की कोशिश की है।
- (ड) माननीय डीजीएडी द्वारा गंवाए गए आर्डरों के रूप में याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत अपुष्टिकृत आंकड़ों को अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए।
- (ढ) एल एंड टी के आंकड़ों के आधार पर एल एंड टी ने अधिकांश क्षति मापदंडों के संबंध में कोई क्षति या नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित नहीं की है। एल एंड टी की खुद की स्वीकारोक्ति के अनुसार समस्त क्षति मापदंड के अनुसार वर्ष दर वर्ष सकारात्मक वृद्धि हुई है।
- (ण) एल एंड टी आरोपित पाटन तथा जांच अवधि के दौरान उसे हुई क्षति के बीच "कारणात्मक संबंध" स्थापित करने में असमर्थ रहा है।
- (त) टीसीपी की क्षमता, क्षमता उपयोग, उत्पादन एवं बिक्री में सतत वृद्धि से इस निष्कर्ष को बल नहीं मिलता है कि भारत में टीसीपी की क्षमता, क्षमता उपयोग, उत्पादन या बिक्री में गिरावट आई है या गिरावट आने की संभावना है।
- (थ) सभी तीन निर्णायक कारकों अर्थात् घरेलू उत्पादन, घरेलू बिक्री तथा घरेलू बिक्री प्राप्ति में वृद्धि हुई है और यह वृद्धि मामूली या नगण्य नहीं है बल्कि इससे किसी अन्य अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान कंपनी की व्यापक वृद्धि का पता चलता है।
- (द) कंपनी ने अधिक उत्पादन, अधिक बिक्री की है, घरेलू बाजार में बड़ी मात्रा में निर्यात बिक्री की है और जांच अवधि के दौरान उच्चतम घरेलू बिक्री राजस्व अर्जित किया है। इसे भी डीजीएडी के समक्ष क्षति अर्थात् उत्पादन, बिक्री तथा बिक्री प्राप्ति में वास्तविक या संभावित गिरावट जैसे क्षति के सर्वप्रथम एवं अग्रणीय संकेतकों के रूप में

जांच के निर्धारण हेतु एक आधार होना चाहिए जिसे एल एंड टी ने सिद्ध नहीं किया है ।

- (घ) अन्य घरेलू उत्पादकों की तुलना में एल एंड टी के बाजार हिस्से में भी लगातार वृद्धि हो रही है । घरेलू बिक्री की मात्रा एवं मूल्य दोनों रूपों में एल एंड टी ने बाजार के बड़े हिस्से को अर्जित किया है ।
- (न) उत्पादकता, रोजगार, वेतन एवं मजदूरी में वृद्धि हुई है जो क्षति के उसके दावे के विपरीत है ।
- (प) माननीय डीजीएडी को लाभ में अधोगामी प्रवृत्ति की जांच करनी चाहिए और याचिकाकर्ता को उस ढंग से प्रकटन करने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए जिस ढंग से इस तथ्य के मद्देनजर विशेष तौर लाभों की गणना की गई है कि बिक्री, उत्पादन तथा बिक्री प्राप्ति से लाभ में इतनी भारी गिरावट को समर्थन नहीं मिलता है ।
- (फ) याचिकाकर्ता द्वारा शुरू की गई विस्तार परियोजनाएं भी घटे हुए लाभ का एक प्रमुख कारण हैं न कि आयात जैसा कि याचिकाकर्ता ने तर्क दिया है ।
- (ब) जांच अवधि के दौरान लाभ में गिरावट को निर्यात मात्रा तथा निर्यात बिक्री प्राप्ति में गिरावट का एकमात्र कारण माना जा सकता है जिन पर विनिमय दर में घट-बढ़ के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ।
- (भ) एल एंड टी "पूँजी जुटाने की क्षमता" के कारण हुई क्षति के कारक का विश्लेषण करने में समर्थ नहीं हुआ है । इस प्रकार क्षति विश्लेषण अपूर्ण, त्रुटिपूर्ण एवं मनगढ़ंत है और इसमें क्षति तथा पाटित आयातों के आरोपों के बारे में किसी साक्ष्य का अभाव है ।
- (म) एल एंड टी ने इस बात की जांच नहीं की है कि क्या कीमत हास या न्यूनीकरण हुआ है । डीजीएडी को "समान उत्पादों" का कीमत विश्लेषण करना चाहिए और पर्याप्त कीमत कटौती, कीमत हास या न्यूनीकरण होने की स्थिति में ही क्षति पाई जानी चाहिए ।
- (य) याचिकाकर्ता ने पाटनरोधी नियमों में यथापेक्षित विभिन्न आर्थिक मापदंडों के आधार पर ऋणात्मक परिणाम प्रदर्शित करने की अपनी क्षमता के मद्देनजर "क्षति के खतरे" का झूठा दावा किया है ।
- (र) क्षति के प्रतिकूल सकारात्मक वृद्धि हुई है और इस कारण से डीजीएडी को वर्तमान वास्तविक क्षति और वास्तविक क्षति के खतरे दोनों के आधार पर यह जांच समाप्त कर देनी चाहिए ।

- (ल) याचिकाकर्ता आयातों एवं लाभ में गिरावट (अन्य कारकों से कोई क्षति नहीं हुई है) के बीच स्पष्ट कारणात्मक संबंध की पुष्टि करने में विफल रहा है और इस कारण से जांच समाप्त कर दी जानी चाहिए ।
- (व) चीन के निर्यातकों को एमईटी व्यवहार से इंकार किए जाने की स्थिति में एल एंड टी के क्विंगडांग फैक्टरी हेतु लागत संबंधी आंकड़ों का उपयोग प्रतिनिधि मूल्य के प्रयोजनार्थ किया जाना चाहिए ।
- (श) निर्यात कीमत निकालते समय डीजीएडी को व्यापारियों कमीशन के लिए किसी कटौती की अनुमति दी जानी चाहिए क्योंकि उत्पादों का आयात सीधे किया गया है । जहां तक वैट के लिए कटौती का संबंध है, याचिकाकर्ता को यह सिद्ध करना होता है कि संदर्भाधीन उत्पाद पर वैट वापसी मिलती है ।
- (ष) माननीय प्राधिकारी को एल एंड टी पर कम से कम इस बात का प्रकटन करने का दबाव डाला जाना चाहिए कि एल टी एम प्रभाग को आवंटन एवं लागत निर्धारण की पद्धति क्या है ताकि उसकी तार्किकता की जांच की जा सके ।

53. प्रारंभिक जांच परिणामों के संबंध में अपोलो टायर्स लि. द्वारा किए गए अनुरोध

- (क) याचिकाकर्ता ने एकाधिकारवादी परिपाटियों का प्रदर्शन किया है । टी सी पी पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से याचिकाकर्ता की एकाधिकारिता सुदृढ़ होगी तथा घरेलू टायर उद्योग को भारी नुकसान पहुंचाएगी ।
- (ख) टी सी पी ऐसा पूंजीगत सामान है जो ग्राहकों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है । कीमतें काफी हद तक आपूर्तिकर्ता और ग्राहक के बीच हुई सहमति के अनुसार आपूर्ति के विस्तार क्षेत्र के आधार पर निर्भर करती हैं । दो "प्रेसों" को "समान प्रेस" कहने से पूर्व उनके आकार, प्रकार, वीसीएल, एसएमओ, सर्ज कनवेयर, सेंट्रल मेकैनिज्म, पाइपिंग माड्यूल, कंट्रोल सिस्टम के बारे में पर्याप्त जानकारी हासिल की जानी चाहिए । इस प्रकार के मूल्य के लिए पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन विश्लेषण करने से पूर्व भी, वे प्रेसों "वस्तु" हैं जिनकी तुलना की जा रही है ।
- (ग) 48" आयातित प्रेस और 48" घरेलू प्रेस की तुलना से स्पष्ट है कि चीन से आयातित प्रेस का पहुंच मूल्य काफी है जो घरेलू प्रेस उत्पादक (एल टी एम), के प्रेस के निवल मूल्य से अधिक है ।
- (घ) घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान कुछ आकार के प्रेसों का विनिर्माण नहीं किया है और आज भी कुछ आकारों का विनिर्माण नहीं हो रहा है । प्रेस के आकारों के क्षति

विश्लेषण का आधार नहीं है जिसे याचिकाकर्ता ने नहीं किया है और जिसके लिए विनिर्माण क्षमता की कमी है ।

- (ड) क्षति विश्लेषण के लिए आंकड़ों के सही स्रोत का इस्तेमाल किया जाना चाहिए जब वह रिकार्ड पर उपलब्ध है । आयात के लिए आंकड़े "बिल ऑफ एंट्री" बीजक से लिए जाने चाहिए । आई बी आई एस में दिया गया मूल्य और मात्रा विश्वसनीय नहीं है इसलिए किसी विश्लेषण के लिए विचार नहीं किया जाना चाहिए ।
- (च) किसी प्रकार की हानि (क्षति) नहीं है क्योंकि अधिकांश मापदंडों ने वृद्धि दर्शाई है भले ही वह संख्या (154%) की दृष्टि से हो, उत्पादन (114%) के कारण हो, बाजार हिस्सा (22%) के कारण हो । नकद लाभ में भी वृद्धि हुई । इसे हानि नहीं माना जा सकता ।
- (छ) प्रतिकूल विनिमय दर के वर्तमान माहौल में पाटनरोधी शुल्क से आयात और महंगा हो जाएगा और इससे घरेलू टायर विनिर्माण उद्योग को भारी नुकसान होगा ।
- (ज) एल टी एम, 2006-07 में 30% क्षमता उपयोग और 2007-08 में 36.67% क्षमता उपयोग सिद्ध करने का प्रमाण देगा जैसा कि याचिका में कहा गया है ।
- (झ) चूंकि याचिकाकर्ता ने अपने बाजार हिस्से में लगभग 8% की वृद्धि की है, इसलिए इस आधार पर याचिकाकर्ता को कोई क्षति नहीं हुई है । इस बात की जांच की जानी चाहिए कि अन्य उत्पादकों ने 15% बाजार हिस्सा खो दिया है परंतु प्राधिकारी को जांच करने के लिए आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए ।
- (ञ) कीमत कटौती के निर्धारण के लिए प्राधिकारी ने 1.086% (सीमाशुल्क और हैंडलिंग प्रभार) के परिवर्तन कारक का प्रयोग किया है ताकि आकलन करने योग्य मूल्य को जमीनी मूल्य में परिवर्तित किया जा सके । प्रयुक्त परिवर्तन कारक सही नहीं है । युक्तियुक्त परिवर्तन कारक, सीमाशुल्क भी अन्य संबंधित करों के आधार पर 1.14 से 1.19 के बीच होना चाहिए । इन कारकों का इस्तेमाल होने पर जमीनी मूल्य में 5 से 10% की वृद्धि हो जाएगी जिससे मूल्य में 5.10% से 0-10% तक की कमी हो जाएगी ।
- (ट) 91% प्रेस के मामले में मूल्य में कमी करने के लिए सभी संव्यवहारों पर विचार नहीं किया गया है । कुछ संव्यवहारों का मूल्य अधिक है और उनसे मूल्य में आगे और उल्लेखनीय कमी आएगी ।
- (ठ) क्षतिरहित कीमत का पता लगाने और आकलन प्रक्रिया में त्रुटि को रहस्योद्घाटित करने का अनुरोध किया गया है ।

- (ड) संसाधनों के अप्रभावी प्रबंधन और घरेलू उद्योग द्वारा अकार्यकुशल कच्चे माल की खरीद मूल्यहास तथा कमी के कारण हैं। सही और पूर्ण वित्तीय आंकड़ों तक पहुंच न होने के कारण इनका विश्लेषण नहीं किया जा सकता।
- (ढ) एक ही प्रभाग में बहुत से उत्पादों का विनिर्माण किए जाने के कारण वित्तीय आंकड़ों की परिशुद्धता और प्रमाणिकता पर भरोसा नहीं किया जा सकता। सक्षम प्राधिकारी द्वारा रिकॉर्डों की भली-भांति लेखा परीक्षा परिशुद्ध आंकड़ों की पुष्टि के लिए आवश्यक होगी।
54. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद मै. ऑटोमेटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, अपोलो टायर्स लि. और जे.के. टायर्स लिमिटेड द्वारा किए गए अनुरोध
- (क) 15% वार्षिक की दर से डीजीएडी द्वारा लेवी अनंतिम पाटनरोधी शुल्क का प्रस्ताव करते समय प्रारंभिक जांच के दौरान उद्घाटित अनेक भ्रामक तथ्यों पर विचार नहीं किया गया है।
- (ख) डीजीएडी ने तुरंत पाटनरोधी अन्वेषण की जांच करते समय गलती की है और उसका यह तर्क गलत है कि चीन जन.गण. से टी सी पी के आयात के कारण घरेलू उद्योग को माल की क्षति हुई है।
- (ग) घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़े प्रामाणिक नहीं हैं और अविश्वसनीय हैं और डी जी ए डी को वर्तमान जांच शुरू ही नहीं करनी चाहिए थी।
- (घ) आई बी आई एस द्वारा इस प्रकार उपलब्ध कराये गए आंकड़े, आयातकों के वास्तविक आयात आंकड़ों से बिल्कुल मेल नहीं खाते। अनुरोध है कि डी जी ए डी को आई बी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए गए दूसरे स्रोत के आंकड़ों की अपेक्षा प्रविष्टि बिलों, इनवाइस, आदि के रूप में हमारे द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों पर विश्वास करना चाहिए था।
- (ङ) प्रारंभिक जांच परिणामों से "टी सी पी का भारत को आयात" से संबंधित अनुलग्नक 1.2, "याचिकाकर्ता द्वारा टी सी पी के गुम हुए आदेशों" से संबंधित अनुलग्नक 1.6 में विसंगति विषय हमारी आपत्ति के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है।
- (च) टायर क्यूरिंग प्रैस प्रक्रियाएं पूंजीगत वस्तु है जिनकी गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धी मूल्य पर उपलब्धता, प्रापण उद्योग अर्थात् टायर विनिर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण है।
- (छ) याचिकाकर्ताओं के स्वयं के आंकड़ों से स्पष्ट है कि अन्य विनिर्माताओं का हिस्सा मूल्य आधार पर घरेलू उद्योग से अधिक था। अर्थात् यदि मूल्य की दृष्टि से देखें तो अन्य घरेलू विनिर्माता एल एंड टी से ऊंचे स्तर का दावा करते हैं।

- (ज) पाटनरोधी प्रक्रिया ऐसी प्रक्रिया नहीं है जिसके तहत किसी घरेलू उद्योग को बाजार में एकाधिकार बनाने की स्थिति आने दी जाए। पाटनरोधी जांच का मुख्य उद्देश्य एक उद्देश्य से आगे देखना तथा घरेलू टी सी पी विनिर्माण उद्योग में सभी संबद्धों की कथित पाटन के प्रभाव को ध्यान में रखना है।
- (झ) डी जी ए डी को "गुम आदेशों" से संबंधित आंकड़ों को उस सीमा तक गोपनीय नहीं मानना चाहिए था जिस सीमा तक कथित आदेश केवल प्रयोगकर्ता उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए हों। अभी कथित आंकड़े घरेलू बाजार आसूचना पर आधारित हैं। इससे याचिकाकर्ता के दावे की प्रमाणिकता के सत्यापन का अवसर निकल गया है और उचित सुनवाई के उनके अधिकार का घोर उल्लंघन हुआ।
- (ञ) प्रारंभिक प्राप्त तथ्यों में अंतर्निहित भ्रम प्रतीत होता है जहां सभी क्षति प्राचलों द्वारा ऊपरी सम्मान दर्शाए जाने के बावजूद अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई है।
- (ट) जिस क्षति का विरोध किया गया है उसके बारे में निर्णय केवल एक कारक अर्थात् घरेलू उद्योग की लाभप्रदता के आधार पर लिया गया है। इस प्रकार डी जी ए डी ने क्षति के निर्धारण के लिए व्यापक दृष्टिकोण नहीं अपनाया है।
- (ठ) यदि लाभप्रदता की पुनर्गणना ब्याज एवं कर पूर्व लाभ (पी बी आई टी) आधार के बजाए ब्याज पूर्व आय, कर, मूल्यहास तथा एमोर्टिसेशन (ई पी आई टी डी ए) के आधार पर की जाती है तो लाभ के प्राचलों से भी पूंजी विस्तार के मद्देनजर भिन्न परिणाम प्राप्त हो सकता है।
- (ड) अन्य अनेक कारक हैं जिनसे याचिकाकर्ताओं की लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा होता है। जांच अवधि के दौरान लाभों में कमी के लिए पूरी तरह निर्यात में कमी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।
- (ढ) विनिमय दरों में उतार-चढ़ाव का भी घरेलू उद्योग के लाभों पर प्रभाव पड़ा है।
- (ण) डीजीएडी ने पीबीआईटी के आयोजन में त्रुटि की है। इसमें इस कारण कमी आई है कि आयात कम हुआ है जैसाकि उपर्युक्त आंकड़ों ने स्पष्ट तौर पर स्थापित किया है कि यह विचार पूरी तरह से अस्वीकार्य है और इसे समर्थन नहीं दिया जा सकता।
- (त) कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री से प्राप्त तथ्य और घरेलू उद्योग द्वारा भेजे जा रहे कम बिक्री के प्रभाव सही नहीं हैं और इनकी गणना गलत की गई है। डी जी ए डी द्वारा इस्तेमाल में लाए गए आंकड़ों का दायरा सीमित है तथा कथित क्षति के

मार्जिन के निर्धारण के उद्देश्य से परिणामी विश्लेषण का सार्वजनिक तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता ।

- (थ) उपर्युक्त निवेदनों के कारण, घरेलू उद्योग द्वारा झेली जाने वाली सामग्री क्षति के लिए कोई आसन्न खतरा या सुझाव नहीं है । इसके अतिरिक्त, डी जी ए डी ने स्वयं द्वारा प्राप्त प्रारंभिक जांच परिणामों में "सामग्री की क्षति का भय" के अस्तित्व पर विचार नहीं किया है । "सामग्री की क्षति का भय" के अस्तित्व पर विचार नहीं किया गया है । "सामग्री की क्षति का भय" का आंकलन न किए जाने से मौजूदा जांच की विश्वसनीयता पर संदेह उत्पन्न होता है ।
- (द) प्राधिकारी द्वारा परिकल्पित क्षति मार्जिन गलत है क्योंकि उसकी गणना के लिए डी जी ए डी द्वारा प्रयुक्त आंकड़े भ्रामक हैं और उसमें हेराफेरी की जा सकती है ।
- (ध) डी जी ए डी ने छानबीन करते समय, याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के संबंध में आयातकर्ताओं द्वारा की गई आपति पर कोई टिप्पणी नहीं की है ।
- (न) घरेलू उद्योग के शेयरों में वृद्धि हुई है और अन्य उत्पादकों के शेयरों में गिरावट आई है । अनंतिम तौर पर शुल्क लगाने से पूर्व जिन कारकों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना अपेक्षित है वह हैं घरेलू बाजार में याचिकाकर्ताओं की एकाधिकारवादी स्थिति को ध्यान में रखना क्योंकि इस प्रकार के अधिरोपण ने इस एकाधिकारवादी स्थिति को मजबूती मिलेगी ।

55. प्रकटन विवरण के बाद हितबद्ध पार्टियों द्वारा क्षति के बारे में कोई नया अनुरोध नहीं किया गया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

56. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में यह उपबंध है कि किसी क्षति निर्धारण में " ... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातकों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए ..." घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संकेत देने वाले कारकों की जांच शामिल होगी । कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करना आवश्यक है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती ।

57 भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा एवं

मार्जिन आदि जैसे घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों पर उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार विचार किया गया है।

क) पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव: आयात की मात्रा एवं बाजार हिस्सा

अ) आयात की मात्रा और संबद्ध देशों का हिस्सा:

58. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

59. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंड एस से सौदेवार सूचना प्राप्त की है। आंकड़ों के अवलोकन से यह नोट किया गया कि उक्त आंकड़ों में संगत सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष के अंतर्गत टीसीपी के आयातों के किसी सौदे का उल्लेख नहीं है। अतः प्राधिकारी ने संबद्ध देश तथा अन्य देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा की जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ आईबीआईएस आंकड़ों द्वारा उपलब्ध सौदेवार आयात आंकड़ों के आधार पर की (यद्यपि आईबीआईएस के आंकड़ों में सभी आयात नहीं आ पाए हैं), तथापि, प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण के लिए आंकड़ों के एक सेट पर विश्वास किया है।

मात्रा नग में.

अवधि	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
देश	मात्रा	मात्रा	मात्रा	मात्रा
चीन जन.गण.	1	2	4	24
अन्य	0	0	0	0
प्रवृत्ति	-	-	-	-
कुल	1	2	4	24
संबद्ध देश का हिस्सा	100%	100%	100%	100%

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
आयात	नग	1	2	4	24
आयात	मी.ट.	54	109	76	1225
भारतीय उत्पादन की मात्रा	नग	257	316	355	417
भारतीय उत्पादन की मात्रा	मी.ट.	4980	6600	8626	9685
भारतीय मांग	नग	162	204	224	338
भारतीय मांग	मी.ट.	2,386	3,556	5,015	8,006
नग आधार पर भारतीय उत्पादन की तुलना में आयात	%	0.39%	0.63%	1.13%	5.76%
नग आधार पर मांग की तुलना में आयात	%	0.62%	0.98%	1.79%	7.09%

भारत आधार पर भारतीय उत्पादन की तुलना में आयात	%	1.09%	1.65%	0.88%	12.65%
भारत आधार पर घरेलू खपत की तुलना में आयात	%	2.28%	3.06%	1.52%	15.30%

60. आयात के आंकड़े नग इकाई में उपलब्ध कराए गए हैं । गणना के अनुपात के प्रयोजनार्थ मशीनों के आकार के आधार पर इसे भार इकाई में परिवर्तित किया गया है ।

61. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है । आयात वर्ष 2004-05 में 1 नग से बढ़कर जांच अवधि में 24 नग हो गए हैं । क्षति अवधि के दौरान अन्य देशों से कोई आयात नहीं हुआ था । जहां तक उत्पादन का संबंध है, आयात नग के रूप में वर्ष 2004-2005 में 0.39% से बढ़कर जांच अवधि में 5.76% हो गए । भार के रूप में यह 1.09% से बढ़कर 12.65% हो गए । मांग के रूप में यह नग रूप में 0.62% से बढ़कर 7.09% हो गए ; भारत रूप में यह 2.28% से बढ़कर 15.30% हो गए ।

उत्पादन एवं क्षमता उपयोग पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव:

62. घरेलू उत्पादन की मात्रा एवं घरेलू उद्योग के घरेलू प्रचालन पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा घरेलू बिक्री के संबंध में की गई है ।

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
नगों के रूप में					
उत्पादन मात्रा	नग	117	162	183	217
	सूचकांक	100	138	156	185
घरेलू बिक्री मात्रा	नग	59	89	95	150
	सूचकांक	100	151	161	254
भार रूप में					
उत्पादन मात्रा	मी.ट.	3032	4309	6046	6793
	सूचकांक	100	142	199	224
घरेलू बिक्री मात्रा	मी.ट.	1403	2256	3422	4787
	सूचकांक	100	161	244	341

क्षमता उपयोग

63. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस मामले में टीसीपी निर्माण की क्षमता तकनीकी जनशक्ति, फैब्रिकेशन उपकरण, मैचिंग एवं संयोजनशाला आदि जैसे अनेक कारकों पर निर्भर करती है। उत्पादन उत्पादित मशीन के आकार तथा ग्राहकों की अपेक्षानुसार अतिरिक्त विशेषताओं पर निर्भर करती है। घरेलू उद्योग ने यह उल्लेख किया है कि जरूरतों के आधार पर कुछ विनिर्माण प्रक्रियाओं को आउटसोर्स करने की संभावना है अतः क्षमता एवं क्षमता उपयोग का सही-सही मूल्यांकन करना संभव नहीं है।

64. तथापि, प्राधिकारी ने कंपनी के रिकार्ड के आधार पर समग्र उपकरण क्षमता की जांच की है और यह नोट किया है कि उपकरण उपयोग 70-80% के बीच रहा था। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा और निवेश करने के बाद उपकरण बढ़ाए गए हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के अनुरोध को ध्यान में रखते हुए क्षमता में आगे और कोई वृद्धि किए बिना मशीनों का विनिर्माण संभव है क्योंकि विनिर्माण क्षमता केवल एक पहलू अर्थात् उपकरण उपयोग के लिए प्रासंगिक नहीं है।

बाजार हिस्से पर वास्तविक और संभावित प्रभाव:

65. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव और बाजार हिस्से की जांच निम्नानुसार की गई है:

मांग-नग आधार पर		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
घरेलू उद्योग की बिक्री	नग	59	89	95	150
	सूचकांक	100	151	161	254
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	नग	102	113	125	164
	सूचकांक				
चीन से आयात	नग	1	2	4	24
	सूचकांक	100	200	400	2400
मांग	नग	162	204	224	338
	सूचकांक	100	126	138	209
मांग-भार आधार पर					
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	1403	2256	3422	4784
	सूचकांक	100	161	244	341
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	929	1191	1516	1995
	सूचकांक	100	128	163	215
चीन से आयात	मी.ट.	54	109	76	1225
	सूचकांक	100	202	141	2268
मांग	मी.ट.	2386	3556	5015	8006

	सूचकांक	100	149	210	336
नग आधार पर मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	36.47%	43.71%	42.45%	44.33%
	सूचकांक	100	120	116	122
अन्य भारतीय उत्पादक	%	62.91%	55.31%	55.76%	48.58%
	सूचकांक	100	88	89	77
चीन	%	0.62%	0.98%	1.79%	7.09%
	सूचकांक	100	159	289	1147
भारत आधार पर मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	58.78%	63.44%	68.24%	59.79%
	सूचकांक	100	108	116	102
अन्य भारतीय उत्पादक	%	38.94%	33.49%	30.24%	24.91%
	सूचकांक	100	86	78	64
चीन	%	2.28%	3.06%	1.52%	15.30%
	सूचकांक	100	134	67	671

66. घरेलू मांग का निर्धारण घरेलू उद्योग द्वारा की गई बिक्री, अन्य उत्पादकों की बिक्री (घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत अनुमान) तथा सभी देशों से हुए आयातों को ध्यान में रखकर किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मांग में नगों के रूप में 109% की वृद्धि हुई है तथापि भार रूप में मांग में 226% की वृद्धि हुई है।

उत्पादन

67. आकड़ों से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि नगों के रूप में उत्पादन में 85% की वृद्धि हुई है ; तथापि, भार रूप में उत्पादन में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 124% की वृद्धि हुई है।

बिक्री

68. आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में नग के रूप में 154% की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान भार रूप में बिक्री में 241% की वृद्धि हुई है।

69. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातों में समग्र रूप में वृद्धि होने के कारण आयातों का हिस्सा मात्रा के रूप में 0.6% से बढ़कर 7% हो गया और भार रूप में यह 2% से बढ़कर 15% हो गया।

70. घरेलू उद्योग ने मांग में हिस्सा 36.47% से बढ़ाकर 44.33% कर लिया जबकि नगों के रूप में अन्य उत्पादकों का हिस्सा 62.91% से घटकर 48.58% हो गया। भार रूप में घरेलू उद्योग का हिस्सा 58.78% से बढ़कर 59.79% हो गया जबकि अन्य भारतीय उत्पादकों का हिस्सा 38.94% से घटकर 24.91% हो गया। संबद्ध देश का हिस्सा वर्ष 2004-05 में .62% से बढ़कर नग रूप में जांच अवधि के दौरान 7.09% हो गया जबकि भार रूप में यह 2.28% से बढ़कर 15.3% हो गया।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

71. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती।

कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव

72. कीमत कटौती का निर्धारण करने के लिए एक समान आकार की प्रैसों की तुलना करते हुए तुलना की गई है। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की गणना 1% हैंडलिंग प्रभार और लागू मूल सीमाशुल्क को संबद्ध देश से आयात कीमत के बारे में आईबीआईएस आंकड़ों में सूचित मूल्य में जोड़कर की गई है।

73. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करते समय घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित रिबेट, छूट तथा कमीशन और संदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क में छूट दी गई है।

74. जांच अवधि के दौरान आयातित मशीनों के आकार की तुलना करते समय कीमत कटौती का निर्धारण किया गया है। भारत औसत कीमत कटौती निम्नानुसार है :

कीमत कटौती

निम्नलिखित व्यास आकार वाली टीसीपी	निवल बिक्री कीमत- घरेलू (रु./नग)	पहुंच मूल्य (चीन जन.गण)	कीमत कटौती (रु./नग)	कीमत कटौती (%)
48" टीसीपी+वीसीएल +एसएमओ	***	***	***	***
65.5" टीसीपी+वीसीएल +एसएमओ	***	***	***	***
78" टीसीपी+वीसीएल कंट्रोल के बिना	***	***	***	***
91" टीसीपी	***	***	***	***
93" टीसीपी	***	***	***	***

104" टीसीपी	***	***	***	***
कीमत कटौती सीमा % में		***	***	***

75. कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण संबद्ध देश से मशीन के आकार के आयातों की भारत औसत पहुंच कीमत की तुलना उसी आकार की मशीनों की क्षतिरहित बिक्री कीमत तथा जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित अतिरिक्त विशेषताओं वाली मशीन के साथ तुलना करने के बाद किया गया है। भारत औसत कम कीमत पर बिक्री निम्नानुसार रही है :

कम कीमत पर बिक्री

निम्नलिखित व्यास आकार की क्षतिरहित टीसीपी	कीमत (रु./नग)	पहुंच मूल्य (चीन जन. गण)	कम कीमत पर बिक्री (रु./नग)	कम कीमत पर बिक्री (%)
48" टीसीपी+वीसीएल +एसएमओ	***	***	***	***
65.5" टीसीपी+वीसीएल +एसएमओ	***	***	***	***
78" टीसीपी+वीसीएल कंट्रोल के बिना	***	***	***	***
91" टीसीपी	***	***	***	***
93" टीसीपी	***	***	***	***
104" टीसीपी	***	***	***	***
कीमत कटौती सीमा % में	***	***	***	(-) 7% से 18 %

76. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि पाटित आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से काफी कम था और कीमत कटौती प्रैस के आकार के अनुसार घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के (-)1 से 19% के बीच थी। पहुंच मूल्य भी प्रैसों के तुलनीय आकारों की क्षतिरहित कीमत से कम रहा था जिसके परिणामस्वरूप कम कीमत पर बिक्री (-)7 से 18% के बीच रही थी।

ii) पाटित आयातों का कीमत हासकारी तथा न्यूनकारी प्रभाव:

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि	2004-05 की तुलना में जांच अवधि में वृद्धि
बिक्री लागत	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	191	190	321	221%
बिक्री कीमत	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	137	155	256	156%

77. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में 221% की वृद्धि हुई है। रुपए के रुप में लागत में *** लाख रुपए की वृद्धि हुई है और तदनुरूपी बिक्री मूल्य में रुपए के रुप में 156% की वृद्धि हुई है। इसमें *** लाख रुपए की वृद्धि हुई है। इससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग लागत में वृद्धि के अनुपात में बिक्री मूल्य में वृद्धि नहीं कर सका जिससे कीमत ह्रास का पता चलता है।

क्षति के अन्य कारकों की जांच

78. पूर्ववर्ती खंड में मात्रा एवं कीमत प्रभाव की जांच करने के बाद प्राधिकारी ने क्षति के अन्य अनिवार्य मापदंडों की जांच निम्नानुसार की है :

क) लाभ/हानि तथा निवेश पर आय

79. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू उद्योग को हुए लाभ का ब्यौरा निम्नानुसार है: -

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
बिक्री की घरेलू लागत	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	191	190	321
घरेलू बिक्री मूल्य	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	137	155	256
कर पूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-44	35	34
ब्याज	लाख रुपए	***	***	***	***

कर एवं ब्याज पूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-38	38	38
घरेलू बिक्री हेतु लगाई गई पूंजी					
निवल नियत परिसंपत्तियां	लाख रुपए	***	***	***	***
निवल कार्यशील पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***
घरेलू बिक्री हेतु लगाई गई कुल पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-28	16	9
जांच अवधि के दौरान अभिवृद्धियों के बिना लगाई गई पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-28	16	10

80. निवल नियत परिसंपत्तियों और कार्यशील पूंजी में वृद्धि के कारण आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी में वृद्धि हुई है। एनएफए में वृद्धि के प्रभाव को कम करने के लिए उसे लगाई गई पूंजी पर आय की गणना करने के लिए घटाया गया है।

81. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री प्राप्ति में वृद्धि उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप नहीं हुई है। क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लाभ (पीबीआईटी) में गिरावट आई है। आधार वर्ष के 100 (सूचीबद्ध) की तुलना में यह जांच अवधि में घटकर 38 हो गया है। तथापि आधार वर्ष की तुलना में यह 2005-06 में घटकर (-) 38 हो गया। वर्ष 2005-06 में क्षतियों के संबंध में यह स्पष्ट किया गया है कि घरेलू उद्योग को इस अवधि में वित्तीय घाटा हाइड्रोलिक प्रैसों के संबंध में वास्तविक लागत अनुमान गलत लगाए जाने के कारण हुई है जो उस वर्ष में पहली बार शुरू किया गया था और यह चीनी आपूर्तिकर्ताओं द्वारा की गई प्रतिस्पर्धा के कारण ही हुआ। उसके बाद 2006-07 में और जांच अवधि में इसमें सुधार आ कर यह 38 हो गया। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री हेतु लगाई गई पूंजी पर आय (जांच अवधि के दौरान अभिवृद्धि पर विचार किए बिना) में जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में पर्याप्त गिरावट आई है। लगाई गई पूंजी पर आय 2005-06 में आधार वर्ष के 100 की तुलना में (-) 28 तक गिरावट आई है। प्रतिकूल आय उस वर्ष में शुरू की गई हाइड्रोलिक मशीनों की बिक्री पर हुई क्षति के कारण ही हुई है। यह स्थिति 2006-07 में 16 तक सुधरी और पुनः जांच अवधि में 10 (सूचीबद्ध) तक हो कर घट गई। तथापि, आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग का निष्पादन

जाच अवधि में काफी घटा है जिसे 2005-06 में शुरू की गई हाइड्रोलिक प्रैसों प्रारंभ किए जाने के कारण हुई क्षतियों की वजह से नहीं माना जा सकता है ।

82. यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग लाभ में बना रहा है । तथापि प्राधिकारी यह मानते हैं कि नियमों में यह प्रावधान नहीं है कि घरेलू उद्योग क्षति का सकारात्मक जांच परिणाम दर्ज किए जाने से पूर्व वित्तीय घाटा वहन करे । इसके बजाए नियमों में प्राधिकारी के लिए यह अपेक्षित है कि वह इस बात पर विचार करे कि क्या लाभ और निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है । इसके अलावा, जांच से यह पता चलता है कि जहां घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं बिक्री में सुधार हुआ है (ऐसा प्राकृतिक परिणाम जिसकी वजह से लाभ एवं लगाई गई पूंजी पर आय में सुधार होना चाहिए था) वहीं लाभ एवं लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट आई है ।

ख) नकद प्रवाह

83. संबद्ध वस्तु के लिए नकद प्रवाह की गणना विचाराधीन उत्पाद के लिए अलग-अलग की गई है । अतः क्षति अवधि की तुलना में संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग का नकद लाभ निम्नानुसार दर्शाया गया है:

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
कर पूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
घरेलू बिक्री पर मूल्यह्रास	लाख रुपए	***	***	***	***
घरेलू बिक्री के लिए नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	-33	41	45

84 उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद लाभ में पर्याप्त गिरावट आई है ।

ग) रोजगार एवं मजदूरी

85. कर्मचारियों की संख्या और प्रदत्त मजदूरी से यह पता चलता है कि रोजगार में वृद्धि हुई है । आधार वर्ष की तुलना में मजदूरी में भी वृद्धि हुई है ।

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
रोजगार	नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	107	125	133
मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचकांक	100	132	133	174
प्रति कर्मचारी औसत मजदूरी	रूपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	122	107	131

घ) मालसूचियां

86. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में उत्पाद की मालसूची कोई उचित मापदंड नहीं है क्योंकि वस्तु का उत्पादन ग्राहक के विशिष्ट आर्डर पर किया जाता है ।

ङ) ऑर्डर गंवाना

87. घरेलू उद्योग ने यह आरोप लगाया है कि उन्होंने ऑर्डर गंवाए हैं । यह मामला जांचाधीन है । तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अवलोकन से यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य में दम प्रतीत होता है क्योंकि एक खास क्रेता के साथ प्रैस के विशेष आकार के बारे में बातचीत की परिणति चीन जन.गण. से आयात के रूप में हुई है ।

च) उत्पादकता

88. घरेलू उद्योग द्वारा अलग-अलग आकार और प्रकार की संबद्ध मशीनों का उत्पादन किया जाता है और श्रम घंटों की जरूरत आकार दर आकार और प्रकार दर प्रकार अलग-अलग होती है । अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिदिन या कर्मचारी उत्पादकता वर्तमान मामले में उचित मापदंड नहीं है ।

छ) वृद्धि

89. घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन की समग्र मात्रा और बिक्री के रूप में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित की है । तथापि, निवेश पर आय एवं नकद प्रवाह सहित लाभप्रदता के रूप में जांच किए जाने पर यह वृद्धि नकारात्मक है ।

ज) नया निवेश जुटाने की क्षमता

90. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की घरेलू मांग में बेहतर वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग ने उत्पाद की मांग में पर्याप्त वृद्धि के मद्देनजर जांच अवधि के दौरान विस्तार हेतु नया पूंजीनिवेश किया है ।

झ) पाटन मात्रा

91. संबद्ध देश और आवेदक निर्यातक के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तर से अधिक है ।

अ.) कीमत को प्रभावित करने वाले कारक

92. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि हुई है जबकि बिक्री कीमत में वृद्धि बिक्री लागत के अनुपात में नहीं हुई है । समूची क्षति अवधि के दौरान आयातों द्वारा बिक्री कीमत में कटौती जारी रही है। यह भी नोट किया गया है मूल सीमाशुल्क भी वर्ष 2004-05 में 20% से घटकर जांच अवधि में 7.5% हो गया है ।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

93. नगों के रूप में वस्तु की मांग आधार वर्ष में 162 से बढ़कर जांच अवधि में 338 हो गई है अर्थात् 109% की वृद्धि हुई है । भार रूप में भी इसमें 236% की वृद्धि हुई है । इसी अवधि के दौरान घरेलू बिक्री में 154% की वृद्धि हुई है । जैसा कि पूर्व में नोट किया गया है, उपकरण का उपयोग 70-80% के बीच रहा है । अतः घरेलू उद्योग ने बाजार में मांग में हुई वृद्धि का लगातार लाभ उठाया है । तथापि, घरेलू उद्योग के आर्डर चीन के विनिर्माताओं के पास चले गए हैं । कीमत कटौती (-) 1% से 19% के बीच रही है । बिक्री लागत में 221% की वृद्धि हुई और मूल्य के रूप में इसमें केवल 156 प्रतिशत की वृद्धि हुई । परिणामतः लाभ (पीबीआईटी) आधार वर्ष की तुलना में घटकर 62% हो गया और निवेश पर आय में 90 प्रतिशत की तीव्र गिरावट आई । यह नोट किया गया है कि 2005-06 में वित्तीय निष्पादन में भारी गिरावट आई है जो उन हाइड्रोलिक प्रैसों की बिक्री पर घरेलू उद्योग द्वारा लागत का गलत हिसाब लगाए जाने और चीन के आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत प्रतिस्पर्धा के कारण है जो उस वर्ष में शुरू की गई थीं । यह कारक बाद के वर्षों में नहीं रहा अतः निष्पादन 2006-07 में सुधर गया । तथापि, आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग का निष्पादन जांच अवधि में काफी कम हुआ है ।

94. उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग मात्रा एवं मूल्य दोनों रूप में बिक्री बढ़ाने की स्थिति में था, तथापि लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई जिससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चलता है ।

95. प्राधिकारी ने नोट किया है कि उत्पादन एवं बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग निष्पादन में सुधार प्रदर्शित करने में समर्थ रहा है । तथापि, उत्पाद के आयातों एवं घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच से स्पष्टतः यह पता चलता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में वृद्धि हुई है । आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग कीमत में

पर्याप्त कटौती हुई है और पाटित आयतों के प्रभाव से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत में ह्रास हुआ है । कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्ध के अनुपात में नहीं हुई है । इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि पाटित आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । इसके अलावा समान उत्पाद की कीमत की तुलना में भारत में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है और ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली उस वृद्धि में गिरावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती । जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, बाजार हिस्से, लाभ, नकद लाभ एवं निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है । यद्यपि उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है । तथापि, प्राधिकारी यह मानते हैं कि ये नकारात्मक सुधार से इतर हुए हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादन एवं बिक्री में वृद्धि के परिणामस्वरूप लाभ एवं लगाई गई पूंजी पर आय में सुधार होना चाहिए था । तथापि, इसके बजाए उनमें अत्यधिक गिरावट आई है जिससे घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति का पता चलता है ।

96. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमों में सूचीबद्ध मापदंडों की संख्या पर विचार करते हुए उस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच और निर्धारण करना अपेक्षित है । इसके अलावा, जहां नियमों में समस्त सूचीबद्ध मापदंडों की जांच और निर्धारण का प्रावधान है वहीं इनमें यह प्रावधान नहीं है कि प्रत्येक मापदंड के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आनी चाहिए । इसके अलावा, नियमों में यह निर्धारण करने का प्रावधान है कि क्या घरेलू उद्योग के निष्पादन में इन मापदंडों के संबंध में गिरावट या विकृति आई है और क्या ऐसी विकृति काफी अधिक रही है । उदाहरणार्थ नियमों में यह प्रावधान नहीं है कि घरेलू उद्योग को यह निष्कर्ष निकालने के लिए वित्तीय घाटा होना चाहिए कि उसे वास्तविक क्षति हुई है । यदि घरेलू उद्योग के निष्पादन में केवल एक या कुछ मापदंडों के संबंध में गिरावट आई है तो प्राधिकारी को यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है बशर्ते कि प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इन मापदंडों में गिरावट अन्य मापदंडों में हुए सुधार की तुलना में अधिक रही है । अतः पाटनरोधी जांच में घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में विभिन्न मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन के आधार पर क्षति का समग्र निर्धारण करना अपेक्षित होता है । घरेलू उद्योग उपलब्ध साधनों और घरेलू उद्योग की क्षमता के आधार पर पाटन के अनुचित व्यवहार पर प्रतिक्रिया दे सकता है । यह आवश्यक नहीं है कि गिरावट को विधिक-आर्थिक मापदंडों की समग्रता या अपूर्णता के संबंध में दर्ज किया जाए । यद्यपि एक या अधिक विधिक-आर्थिक मापदंडों से क्षति का यह निर्धारण करना पर्याप्त हो सकता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति (पाटनरोधी करार का अनुच्छेद 3.2) हुई है । आगे यह नोट किया जाता है कि यह जरूरी नहीं है कि घरेलू उद्योग पाटन की शुरुआत पर जांच शुरू करने के लिए प्राधिकारी से तुरंत संपर्क करे । घरेलू उद्योग उसके उत्पादकों की क्षमता के आधार पर अलग-अलग प्रतिक्रिया दे सकता है । तथापि, जब घरेलू उद्योग अनुचित व्यापार के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ है तो वह जांच हेतु प्राधिकारी से संपर्क कर सकता है । ऐसे किसी मामले में क्षति का संकेत पूर्ववर्ती वर्षों और जांच अवधि में अनुपलब्ध तीव्र गिरावट के रूप में उपलब्ध होगा । यही वजह है कि क्षति का विश्लेषण एक से अधिक वर्ष के लिए किया जाता है जबकि पाटन मार्जिन के निर्धारण का प्रयोजन केवल एक वर्ष की अवधि का होता है ।

झ. कारणात्मक संबंध एवं अन्य कारक

97 घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री तथा कीमत ह्रासकारी और न्यूनकारी प्रभाव के संबंध में पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति और उनके मात्रा एवं कीमत प्रभाव की मौजूदगी की जांच करने के बाद भारतीय नियमावली तथा पाटनरोधी करार के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य सांकेतिक मापदंडों की जांच की गई है ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि क्या पाटित आयातों से भिन्न किसी अन्य कारक से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है। तदनुसार निम्नलिखित मापदंडों की जांच की गई है :

i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमत

98 आईबीआईएस के आंकड़ों से यह पता चलता है कि संबद्ध वस्तु का आयात जांचाधीन देशों से भिन्न देशों से नहीं किया जा रहा है। अतः अन्य देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू बाजार में कीमत प्रभावित नहीं होती है ;

ii) मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

99 समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में बेहतर वृद्धि प्रदर्शित हुई है और इसलिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का देश में मांग में अभाव से कोई लेना-देना नहीं है। खपत एवं मांग से संबंधित आंकड़ों से उत्पाद की खपत की पद्धति में किसी परिवर्तन का पता नहीं चलता है।

iii) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

100. यह वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है। आवेदक संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादकों में से एक है और उसका घरेलू उत्पादन तथा बिक्री में पर्याप्त हिस्सा बनता है। प्राधिकारी की जानकारी में प्रतिस्पर्धा अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार की स्थितियों का कोई अन्य साक्ष्य नहीं आया है।

iv) प्रौद्योगिकी विकास

101. प्रौद्योगिकी में पर्याप्त परिवर्तन का ऐसा कोई आरोप नहीं लगाया गया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

v) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

102. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री काफी अधिक रही है। उत्पादन एवं क्षमता के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा अपने निष्पादन में सुधार किया जा रहा है क्योंकि समग्र उपकरण उपयोग 80% के आसपास रहा था।

तथापि, वित्तीय निष्पादन का विश्लेषण केवल घरेलू बिक्री के लिए किया गया है । इस प्रकार निर्यात निष्पादन के कारण घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री पर क्षतिकारी प्रभाव नहीं पड़ा है । अतः निर्यात निष्पादन पर घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारक के रूप में विचार नहीं किया जा सकता ।

निर्यात	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जाच अवधि
निर्यात बिक्री	नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	146	157	130

vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

103. कुल उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है अतः इसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता ।

104. उपर्युक्त कारणोत्तर विश्लेषण से यह पता चलता है कि पाटित आयातों से इतर किसी अन्य ज्ञात कारक से घरेलू उद्योग प्रभावित हुआ प्रतीत नहीं होता है ।

कारणात्मक संबंध

105. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन के विश्लेषण से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में वास्तविक गिरावट आई है । अतः पाटित आयातों एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की पुष्टि निम्नलिखित आधारों पर की जाती है :

- क. क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक कम कीमतों पर तेजी से वृद्धि हुई है जिससे पर्याप्त कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग उत्पादन लागत में वृद्धि के अनुरूप अपनी कीमत नहीं बढ़ा सका जिससे वित्तीय घाटा हुआ ।
- ख. आयात की मात्रा में वृद्धि और घरेलू कीमत में ह्रास के कारण कंपनी के लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ।
- ग. अत्यधिक सकारात्मक कीमत कटौती से संबद्ध देश से हुए आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई । ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग ने अपनी कीमत का ह्रास कर आयात कीमत में आई गिरावट का सामना किया है जिससे वित्तीय घाटा हुआ है ।

106. अतः प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और घरेलू उद्योग को हुई क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है ।

झ. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

107. प्रकटन विवरण के बाद मै0 लूथरा एंड लूथरा ने यह अनुरोध किया है कि डीजीएडी ने हितबद्ध पार्टियों की ओर से पाटन मार्जिन के प्रकटन को ग़लत ढंग से रोका है । यह खासकर उस स्थिति में कष्टदायक है जब पाटन मार्जिन की गणना समस्त हितबद्ध पार्टियों को उपलब्ध कराई गई है । उन्होंने आगे यह अनुरोध किया है कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण कुछेक आनुमानिक आंकड़ों के आधार पर किया गया है जिसके ब्यौरों का हमें पता नहीं है ।

108. प्राधिकारी द्वारा निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित अलग-अलग प्रकार की टीसीपी की क्षतिरहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु टी सी पी के विवरण और समान आकार के लिए संबद्ध देश से हुए आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है । संबद्ध देश के निर्यातकों की भारत औसत पहुंच कीमत और उनके क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है :

	क्षति मार्जिन
चीन जन.गण. से सभी निर्यातक	5% से 15%

ज. निष्कर्ष

109. हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए मुद्दों और किए गए अनुरोधों तथा इस जांच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों की जांच करने के बाद प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :

- (i) संबद्ध देश से भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु ने निर्यातक देश के घरेलू बाजार में उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर प्रवेश किया है ;
- (ii) संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन अत्यधिक और न्यूनतम सीमा से ज्यादा है
- (iii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और घरेलू उद्योग को यह क्षति संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मूल्य एवं मात्रात्मक प्रभाव दोनों की वजह से हुई है ।

ट. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

110. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है और भारतीय बाजार में ऐसी खुली और

उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल करना है जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होगा और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

ठ. सिफारिशें

111. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पार्टियों को दी गई थी और निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पार्टियों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के विभिन्न पहलुओं के बारे में सकारात्मक सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था । निर्धारित नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंधों के बारे में जांच शुरू करने और प्रारंभिक जांच करने के बाद तथा संबद्ध देश के खिलाफ सकारात्मक पाटन मार्जिन की अनंतिम रूप से पुष्टि एवं ऐसे पाटन आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि जांच पूरी होने तक पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए उपाय लागू करना अपेक्षित है ।

112. अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे उल्लिखित प्रपत्र और तरीके से अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हैं ।

113. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके । प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि उत्पाद की क्षमता और कीमत के संबंध में पर्याप्त अंतर है अतः संदर्भ कीमत या निर्धारित शुल्क के रूप में अनंतिम शुल्क इस मामले में उचित होगा । अतः प्राधिकारी संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के सीआईएफ मूल्य के प्रतिशत के रूप में निकाले जाने वाले मूल्यानुसार शुल्क के रूप में अनंतिम उपाय को लागू करने की सिफारिश करते हैं । तदनुसार चीन जन.गण. के मूल की या वहां से निर्यातित सभी प्रकार की टायर क्यूरिंग प्रेसों के आयात पर इस जांच परिणाम के जारी होने की तारीख से शुल्क तालिका के कालम 9 में उल्लिखित प्रतिशत को लागू कर निकाली गई राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की जाती है ।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	टैरिफ मद	वस्तु का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	सीआईएफ मूल्य का %
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1.	8477.5100	टायर क्यूरिंग प्रेस	सभी आकार	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	10%
2	8477.5100	टायर क्यूरिंग प्रेस	सभी आकार	चीन जन.गण.	कोई	कोई	कोई	10%
3	8477.5100	टायर क्यूरिंग प्रेस	सभी आकार	कोई	चीन जन.गण.	कोई	कोई	10%

114. उपर्युक्त के अध्यक्षीन प्राधिकारी दिनांक 5 मार्च, 2009 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं ।

115. केन्द्र सरकार द्वारा जन जांच परिणामों को स्वीकार कर लिए जाने के बाद इनके विरुद्ध कोई भी अपील 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ नियम, 1995 के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th October, 2009

Final Findings

Sub: Anti-Dumping Investigation involving Import of "Tyre Curing Presses" also known as Tyre Vulcanisers or Rubber Processing Machineries for tyres from China PR.

F.No. 14/22/2007-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

A. Background and Procedure

2. The procedure described below has been with regard to the investigation:

- a) M/s Larsen and Toubro Limited, Chennai, Tamil Nadu, (herein after referred to as the applicant) filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as this Authority), in accordance with the Act, and the Rules, alleging dumping of all kinds of tyre curing presses, used for curing tyres during manufacturing of a tyres (hereinafter referred to as the subject goods), originating in or exported from the China PR (herein after also referred to as subject country) and requested for initiation of an investigation for levy of anti dumping duties on the subject goods. The subject country was informed about receipt of application in accordance with the Rule 5(5).
- b) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants issued a public notice dated 16th October 2008, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

- c) The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigations in accordance with Rule 6(2).
- d) The Authority provided copies of the non confidential version of the application to the known exporters and the Embassies of subject country in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential application was also provided to other interested parties, wherever requested.
- e) The Authority forwarded a copy of the public notice to the known exporters (whose names and addresses were available with the authority) and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter in accordance with the Rules 6(2) & 6(4). Response to exporter's questionnaire has been received from the following only one producer/ exporter of the subject goods from the subject country:

Guilin Rubber Machinery Ltd., China PR

- f) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose names and addresses were available with the authority) of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(4). Responses to the Importer's questionnaire have been received from the following importers of the subject goods in India:

J.K. Tyres Ltd.
Appolo Tyres Ltd.

- g) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- h) Other exporters, producers and other interested parties who have not supplied information in this investigation have been treated as non-cooperating interested parties.
- i) A Market Economy Treatment (MET) questionnaire was forwarded to all the known exporters and Embassy of China PR. While for the

purpose of initiation the normal value in China PR was considered based on the constructed cost of production of the subject goods in China PR, the Authority informed known exporters that it proposes to examine the claim of the applicant in the light of para 7 and para 8 of Annexure I of Anti Dumping Rules, as amended. The exporters/producers of the subject goods from China PR was therefore requested to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 to enable the Authority to consider whether market economy treatment be granted to cooperative exporters/producers.

- j) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the period of investigations. The information received from DGCI&S shows that it had not captured the imports of the subject goods, therefore data from IBIS has been relied upon in the findings.
- k) Information was sought from the applicant and other domestic producers also The Non-injurious Price based on the optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- l) The Authority notified its preliminary findings vide Notification dated 5th March 2009 recommending provisional anti-dumping duty on import of subject goods from the subject country.
- m) After preliminary findings, all interested parties were asked to file their comments on preliminary findings.
- n) The Authority held a public hearing on 8.07.09 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of interested parties. The interested parties were asked to file written submissions and rejoinder. The written submissions and rejoinders received from interested parties to the extent considered relevant have been considered in the findings;
- o) On the spot verification of the data of exporter was carried out to the extent necessary.
- p) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for the findings have been disclosed to known

interested parties and comments received on the same have been considered in Final Findings.

- q) Investigation has been carried out for the period starting from 1st April 2007 to 31st March 2008 (12 months) i.e. the period of investigation (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from April 2004 - March 2005, April 2005 - March 2006, April 2006 - March 2007 and the POI.
- r) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

B. Product under Consideration and Like Article

3. The product under consideration in the present petition is "Tyre Curing Presses" also known as Tyre Vulcanisers or Rubber Processing Machineries for tyres. Tyre Curing Press is a machine used for curing tyre during manufacturing of a tyre. Tyre curing press is a machine where tyres get their final shape and tread pattern. Hot molds shape and vulcanize the tyres. The molds are engraved with the tread pattern, the sidewall markings of the manufacturer and those required by law. After curing, the tyres are removed from their molds and taken to final finish and inspection.

4. The size of the Tyre Curing Press is normally indicated in inches by the internal diameter of the Dome or the diameter of the platen. This in turn determines the maximum size of the mold that can be used in the press. The mold diameter is the critical parameter that determines the maximum size of a tyre that can be cured in that press. Generally as the press size increases it can accommodate a bigger diameter mold and hence it can cure bigger tyres. The broad classification of press sizes for various tyre segments are as shown below:

24"-36" – Scooter tyres

40" -52" – Passenger car and LCV tyres

55"- 65.5" – Truck tyres

78" – Tractor and agricultural equipment tyres

85"-185" – OTR tyres (Mining and special equipment)

Optional Add ons such as vertical chuck loader, segmented mould operator and post cure inflators which help the press in terms of automation better productivity and better product handling capacity etc. are added depending upon the requirement of the customers.

5. Tyre Curing Presses is classified under Chapter 84 of the Customs Tariff Act, 1975 under subheading 8477.51 under subheading 8477.5100 under the

Indian Trade Classification (Based on Harmonized Commodity Description and Coding system).

6. The applicant has claimed that there is no known difference between the products manufactured by them and the subject goods imported from the subject country, which can have any impact on price, usage, quality etc. The applicant also claims that the technology and primary production process employed by them and the foreign producers are comparable; however, every producer, fine-tunes its production process based on available facilities and necessities.

7. Guilin Rubber Machinery Factory (GRM), co-operating exporter from China PR, has submitted that the product concerned is not a kind of volume-produced product, and is produced according to the order of client with special requirements. The construction of product concerned can normally be divided into two segments, one is the basic construction mainly made of steel and copper and the other is the designed parts. For same product type, the basic constructions of product concerned are same, but the designed parts such as electric parts and metal parts of the product concerned are highly different according to different orders.

8. After the preliminary findings, it has been submitted by GRM that:

- a) The Domestic Industry did not actually prove that they can manufacture or sell larger size of TCP in domestic market, and the larger sizes of TCP is not like product and shall be excluded from the product scope of investigation.
- b) As the major domestic purchaser of TCP, JK and Apollo's opinion can reflect the real situation of domestic market and the actual capacity of Domestic Industry. Also, per GRM's information regarding the market situation of Indian domestic industry and feedback from Indian importers, the petitioner has not the ability to manufacture larger size (up to 104') of TCP during the POI.
- c) As the Domestic Industry has not the ability to supply larger sizes of TCP in domestic market, where is the injury suffered regarding the larger sizes of TCP claimed by Domestic Industry? The larger sizes of TCP above 104' should be excluded from the product scope.
- d) A TCP of one size cannot replace a TCP of another size. Thus, an imported TCP of size 130" cannot replace a domestic TCP of 48". Further even within TCPs of a certain size, DGAD must examine the exact specifications because variations in specifications lead to significant price changes.

- e) In Ann 1 of the Domestic industry NCV Petition, domestic industry has admitted it cannot make the larger machines and did not do so in the POI.
- f) As the kind of designed product, that whether a machine is imported or domestically purchased the most important consideration for purchase is "technical ability". Thus buyers like JK or Apollo will provide their required technical specifications to both LTM and GRM and the company that can manufacture machines as per the technical specification is given the order.
- g) DGAD will have to examine if the imported and domestic TCP had different accessories/modules/features etc as these factors significantly affect the price of the TCP. In this case, the adjustment for differences in physical characteristics may be carried out for the comparable models.

9. In their comments to the disclosure statement, GRM stated that the differences in features are critical in TCP with such high customization and GRM is unable to concur that its exports are like articles with Indian produce. GRM stated that they are unaware of any evidence on record indicating that the Domestic Industry commercially produced presses of 104-129" sizes during the POI. GRM requested for exclusion of sizes of 130" and above as these were admittedly not manufactured by the Domestic Industry during the POI.

10. M/s Luthra & Luthra Law Offices on behalf of M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, M/s Apollo Tyres Ltd. and M/s JK Tyres Ltd. made the following argument on the scope of product under consideration or like article:

- a) While every tyre curing press is made of the same raw materials, uses similar technology and is distributed to the same set of customer, it should be understood that presses of different sizes and specification are not "like" products.
- b) Prices differ greatly depending on the exact specification of the press. Each press is ordered for a very specific function and one press cannot be replaced by another that is not exactly alike in all respects such as the size, type or accessories.
- c) The quality, the ability of a TCP manufacturer to honors delivery schedules and its ability to even manufacture the specific press required are critical deciding factors that play a major role in the purchasing decisions.
- d) L&T and other domestic manufacturers are not known to have the capability to produce presses of a larger size. They generally supplied presses in the range of 45" to 65.5" and upto 78" presses

and in the rare instance they have supplied presses above these sizes.

- e) It has been stated that DGAD should limit the scope of this investigation to only those sizes that were produced by L&T from the base year to the POI.

After the preliminary findings, it has been submitted that:

- f) TCPs of varying sizes are not "like products" in as much as each TCP differs from the other in numerous aspects and one cannot really say that 48" TCP is similar to a 91" TCP.
- g) Keeping in mind the fundamental differences between individual TCPs, the dumping margin and price undercutting should be arrived at for individual TCPs of different sizes, and the cases for levy of anti-dumping duty should be considered accordingly.
- h) Product under consideration should be limited to sizes actually produced and sold during the period of investigation (POI) as only those sizes that have actually been manufactured by the petitioners during POI can be said to have been injured by imports. The DGAD by presuming a purported and untested future capability of the petitioners to manufacture such products has provided the petitioners duty protection for sizes they have to date not manufactured to the serious detriment to the users in India.
- i) Attention has been drawn to Tribunal judgment in the matter of Magnet Users Association Vs. Designated Authority, wherein it has been stated to be held that the grades of magnet rings (subject goods) which are not manufactured by the Domestic Industry during POI are subject to be excluded from the anti-dumping investigations.
- j) The DGAD's observation that facilities available for bigger sizes of press can also be used for smaller sizes of press shall not prove to be correct.
- k) Further assuming that the DGAD's observations are factually correct then also the inverse of DGADs findings can never be correct. L&T and other domestic manufacturers are not known to have the capability to produce presses of a larger size. They generally supplied presses up to 78" and in rare instances, presses above these sizes.
- l) The DGAD has not provided any evidence to show that TCP's of size higher than 104" have actually been manufactured by the Domestic industry during POI.
- m) The DGAD has not given any finding as to why the time delays in the delivery schedule, one of the aspects which us kept in mind by the buyers while placing an order, should not be considered while determining the injury to the domestic industry.

- n) It has been requested that DGAD should re-consider its findings on the issue of "like articles" of TCPs of different sizes and restrict the present investigation only to the TCP sizes which have been imported into India during POI keeping in mind the restricted capacity of the domestic industry to manufacture TCP beyond a specified size.

11. After the disclosure statement, M/s Luthra & Luthra Law Offices stated that DGAD should specifically exclude TCPs of 130" and above from the scope of product under consideration and the findings should clearly state that the duty recommended is only for TCPs upto 104".

12. Submissions of Domestic industry after preliminary findings

- a) The size of the Tyre Curing Press is normally indicated in inches by the internal diameter of the dome or the diameter of the platen. This in turn determines the maximum size of the mold that can be used in the press. The mold diameter is the critical parameter that determines the maximum size of a tyre that can be cured in that press.
- b) Optional Add Ons such as vertical chuck loader, segmented mould operator and post cure inflators which help the press in terms of automation and better productivity and better product handling capacity etc. are added depending upon the requirement of the customers.
- c) It was argued by interested parties that different types of tyre curing press cannot be interchangeably used and are therefore not like product. Neither the Designated Authority nor the domestic industry has considered various sizes of tyre curing press can be interchangeably used.
- d) Tyre curing press produced by the domestic industry and imported from China PR are like article in terms of Product characteristics, Production technology and production process, Raw materials, Functions & uses, Pricing, Distribution & marketing, Customs classification, Production.
- e) Domestic industry has already manufactured and supplied presses upto 130", details of which are on record. The present facility both in terms of design and manufacturing can produce presses beyond 130".

13. In response to the disclosure statement, domestic industry made the following submissions:

- a. Under the law, there is nothing which permits restriction of the scope of the product under consideration attracting anti dumping duty. It is established that TCP beyond 104" have not been imported into India so far. There is therefore no legal & factual basis to conclude that TCP above 104" cannot be imported in future.
- b. In the matter relating to Acrylonitrile Butadiene Rubber from Korea, the Designated Authority held that it would not be appropriate to exclude a product from the scope of the present investigation in case it has not been exported to India, as the fact of dumping can neither be proved nor disproved. It would be more appropriate for the Authority to accept a specific request by any exporter for exclusion in case it is not being manufactured by the petitioner. The authority, therefore, confirms, for the purpose of these findings, that the scope of the present findings covers all types of NBR from these countries.
- c. if a new higher size press is required in the market, the domestic industry can either supply or not supply. If the domestic industry can supply, as admitted in the disclosure statement, there is no legal & factual basis for its exclusion. In fact, given proposed exclusion, the domestic industry would not be able to compete fairly with the Chinese product in the event of such exclusion.
- d. With regard to the option for review suggested, it is not clear how the domestic industry can seek inclusion of such presses, when the Designated Authority has interpreted Rule 23 to mean only "full review" and the Designated Authority has held in the past [albeit, contrary to the decision of the Supreme Court] that partial interim reviews on product scope are not permissible.
- e. It is submitted that proposed restriction of duty to TCP upto 130" is without any legal & factual basis.

Examination by the Authority

14. The authority examined the issue in details and in this regard it has been noted that all sizes of presses (upto 130") (whether or not imported during POI) are manufactured in the manufacturing facility of the domestic industry. It has been further noted that facility available for bigger sizes of presses can also be used for smaller sizes of presses. The technical requirement however differs depending upon the size of press. Regarding objection of the interested parties about comparability of presses, it has been noted that for all sizes of presses, manufacturing is comparable up to bare mechanical construction and it is a salable commodity. The press is, however, incomplete without electrical panels, the pneumatic panel and valve battery, etc. Depending upon the requirement of

the customers, the press can be customised by adding extra features such as vertical chuck loaders segmented mould operator and post cure inflators, etc. which help the press in terms of automation better productivity and better product handling capacity etc.

15. In view of the submissions made by the domestic industry and other interested parties, the authority notes that for same size of presses imported product can be substituted with the presses manufactured by the domestic industry as add on features are only optional requirement of the customers. Therefore the authority holds that the presses made by domestic industry is 'like article' of the product imported from the subject countries. Regarding limiting the scope of products to sizes imported during POI, the Authority notes that the presses can be made in the same facility irrespective of their sizes, though higher sizes presses would require higher technical different skills and know-how. The domestic industry has capability to produce different sizes and their variation of presses. Therefore the authority holds that there is no reason to restrict the scope of product under consideration to the sizes of presses imported during POI only. It has also been argued that the product under consideration should be restricted to the sizes manufactured by the domestic industry as there cannot be an injury to the sizes not produced by the domestic industry. The Authority has examined the issue and note that the imports have been made for the presses up to 104 inches. The domestic industry is producing not only this size of press but also higher sizes of presses (130 inch). At this stage, it has been established that domestic industry can manufacture presses up to 130 inches. The domestic industry is yet to manufacture higher sizes of presses, though there is no indication that the domestic industry is not in position to manufacture higher sizes of presses. The product under consideration is the Tyre Curing Press of all sizes, therefore, it is not possible to restrict the scope of product under consideration as imports can be of any size (higher or lower), similarly the domestic industry may also manufacture higher sizes of presses. The Authority, however, in view of the fact that the domestic industry is yet to manufacture higher size of press, is recommending the duty on the presses of the maximum size that has been produced by the domestic industry so far so that buyer may not be put to disadvantage, in case domestic industry is not in position to manufacture higher size of press. The domestic industry may, however, seek the review of the findings in future depending upon the capacity/ facility available to manufacture the higher size of press. The Anti-dumping Rules provide for the Changed Circumstances Review and the same will be followed on receipt of the application for review.

C. Domestic Industry and Standing

16. The application has been filed by M/s Larsen & Toubro Ltd., Chennai, and the applicant is one of the major producers of the subject goods in India. The Authority notes that there are other producers of the subject goods in India i.e., M/s Devon Machines Pvt. Limited, Chennai; M/s Trimac Machinery

Manufacturing Pvt Limited, Navi Mumai; Alfred Herbert (India) Limited, Kolkata and Specific Engineering Corporation Pvt. Limited, Navi Mumbai.

17. M/s Luthra & Luthra Law Offices on behalf of M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, M/s Apollo Tyres Ltd. and M/s JK Tyres Ltd. submitted that the Petitioner has not analyzed the impact of the imports on other important producers in the TCP manufacturing market.

18. Subsequent to Initiation, No domestic producer of the subject goods other than the applicant provided any information relevant to the investigation.

19. After preliminary findings, Alfred Herbert (India) Limited has supported the investigation. However it did not supply the information for injury analysis.

20. After taking into account the production of all the known producers (as estimated by the applicant) of the subject goods in the Country, the Authority notes that the applicant commands more than 50% of the production of the subject goods in India and holds that for the purpose of this investigation the applicant M/s Larsen & Toubro Ltd., Chennai commands the standing in terms of Rule 5(3) and constitutes the domestic industry in terms of Rule 2(b).

D. De Minimis Limits

21. As per the import data received by the Authority from IBIS, as well as the data furnished by the cooperating Chinese exporter and co-operating importers, the imports of the subject goods from the subject country constitute total imports. Therefore, the imports from subject country are above the de minimis level.

E. Confidentiality

22. In response to disclosure statement, M/s Luthra & Luthra Law Offices submitted that the domestic industry should not be allowed to keep its expansion plans / activities confidential. They further stated that constituents of the constructed normal value of TCPs and the adjustments made for determination of CNV for the subject country should have been revealed.

23. GRM submitted that there has been excessive confidentiality in respect of the data filed by the Petitioners and especially in respect of various estimates relied on by them. Even sources of data relied on by the Hon'ble Authority for constructing the respective CNV and NIP has not been disclosed at any stage and this is contrary to the established practices of reputed AD jurisdictions including the EU/EC.

24. The Authority has examined the confidentiality claims of the interested parties. In this findings, the data of the domestic industry concerning capacity, production and sales and imports data have not been kept confidential. The other information has not been considered as confidential unless the responding party has given sufficient justification for keeping the information as confidential. The data of domestic industry in respect of customers, cost, prices and the data that would give competitive advantage to their competitors have been kept confidential. The confidential information provided by co-operating exporter and importers as confidential have been kept confidential as claimed by them.

F. Submissions and issues raised

25. The Authority notes that the a producer/ exporter (Guilin Rubber Machinery Ltd., China PR) of the subject goods in China PR have submitted their response to the exporter's questionnaire. The consumers or importers (J.K. Tyres Ltd. and Appolo Tyres Ltd.) have also responded to the Designated Authority and provided the information relevant to the present investigation. M/s Luthra & Luthra Law Offices on behalf of M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, M/s Apollo Tyres Ltd. and M/s JK Tyres Ltd. have made the submissions that have dealt with at relevant places in this findings.

G. Determination of Dumping Margin

G.1 Examination of Market economy claims

26. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption by treating China PR as a non-market economy country as per para 8(2) of Annexure 1 of the Rules, for purposes of an anti dumping investigation. Upon initiation, the Authority advised the producers/Exporters in the country to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status.

27. The Authority sent copies of the MET questionnaire to all the known exporters for rebutting presumption of non market economy in accordance with criteria laid down in para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China to advise producers/exporters in their country to provide information.

28. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove to the contrary. The cooperating exporter/producer of the subject goods from People's Republic

of China PR are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

29. Submissions of Domestic industry on MET and export price of the Guilin

- a) Having regard to the nature of the product and activities involved in producing and selling the product under consideration, the fact that whether Guilin sold material directly or through some other company does not vitiate the position that the company has suppressed vital information from the Authority.
- b) Following is the process of sales purchase in this industry - Establishment of capacity and capability to produce and supply, Floating an enquiry, Technical proposal, Price offer, Negotiations, Revised offer by Supplier, Offer acceptance, Placement of purchase order, Technical approvals, Commercial production, Installation & commissioning, on site" training on operation and maintenance of the machine. Such being the case, A producer is always aware of the eventual buyer of a press, the producer/seller is always aware of the market competition
- c) Gulian is non cooperative exporter producer. No separate dumping margin should be determined because of - Claims made by Guilin in its initial questionnaire response; Claims made by ATMA in their response to initiation; Claims made by Guilin in response to the Designated Authority's letter before the Preliminary Findings; Claims made by Guilin after the Preliminary Findings; Claims made by ATMA at the time of oral hearing.
- d) Considering the process involved and legal provisions, date of arrival of goods in India in any case cannot become the basis for determination of export price. The export price in the present case must be established on the

basis of the date of order acceptance or date of purchase order, as the same establishes material terms of sale.

- e) M/s Guilin Rubber Machinery Factory is a producer of the subject goods in China is a subsidiary of China National Chemical Equipment Corporation and its management is selected by China National Chemical Equipment Corporation.
- f) 'Guilin' and China National Chemical Equipment Corporation are state contributed enterprises and there is a no Board of Directors and Board of Shareholders for 'Guilin'. The legal representative of 'Guilin' is a factory director who is appointed by China National Chemical Equipment Corporation.
- g) Thus, it cannot be ruled out the significant state interference concerning critical business decisions.
- h) Steel as a major input for product concern. In different cases, Authority has already held that the prices of steel do not substantially reflect market values in China. The present case is no exception.
- i) The extent to which cost of steel can have an influence of the cost of production of the product under consideration can be gauged from the fact that steel constitute for about 45% of cost of production.
- j) China has the world's largest steel industry and has established itself as one of the world's leading exporters. This explosive growth in production and exports of steel would not have been possible without the support of the Chinese government.
- k) The structure of the Chinese steel industry reflects the Chinese government's ongoing role. The Chinese steel industry continues to be primarily state-owned. The Chinese government intervenes directly and extensively in the steel industry, and retains a high degree of decision-making authority over its development.
- l) China's new Steel Policy specifically provides for continued direct subsidization of the steel industry in the form of tax refunds, discounted interest rates, and other preferential policies. The policy also provides various forms of indirect support, such as restrictions on foreign investment. The policy makes consolidation of the industry a priority, and in fact, there have been several well-publicized mergers of state-owned producers in the last year.
- m) The ways in which the Chinese government provides direct and indirect benefits to the steel industry include: Cash grants, Land grants, Transfers of

ownership interest on terms inconsistent with commercial considerations, Conversion of debt to equity in steel companies, Debt forgiveness and inaction regarding non-performing loans, forgiven billions of dollars in bad debts owed by Chinese steel producers, Preferential loans and directed credit, Tax incentives, including a variety of income tax exemptions and reductions, targeted infrastructure development, Manipulation of raw material prices, Import license schemes and intervention in price negotiations to control prices for imported iron ore, Manipulation of the value of the Chinese RMB.

n) After the disclosure statement, the domestic industry made the following submissions on MET claim of the exporter:

- I. Since the company is State owned company, possibilities of State interference are not ruled out. Even if it has been established by the company that there was no interference in its operations in the past, the possibility of State interference in future has not been ruled out by the company.
- II. Since the company does not have an independent Board of Directors and further since the Factory Director is appointed by another State owned enterprise, possibility of state interference in the appointment of Chief Executive and key management personnel is not ruled out.
- III. Being a State owned enterprise, the company is not required to maintain its books of account in line with Chinese accounting standards and as are required to be maintained by limited liability companies. Above all, it has not been able established that the books of accounts of the company are independently audited in accordance with International Accounting Standards. The reliability of income and expenses, assets and liabilities therefore, cannot be established.
- IV. The company has failed to establish that price of key inputs substantially reflect market values – one of the vital conditions for market economy treatment. Steel is a basic input in production of the product under consideration. Petitioner has provided voluminous evidence to show that the prices of Steel in China are a result of State directed policy. It was all the more relevant and important for the exporter to establish that its steel prices reflected reasonably the market values. Not only nothing significant has been provided in this regard by the exporter; but also, available evidence suggests that the prices of steel in China are not reflective of market values;
- V. The company has not established that it obtained all finances independently and without any State interference.

- o) In response to Disclosure Statement, M/s Guilin Rubber Machinery Factory stated that the critical issue disclosed by the Hon'ble Authority for denying MET is State ownership. In this respect it is submitted that the Indian Rules do not specifically provide for State ownership as a ground to deny MET and this is also India's known stand at WTO.
- p) Some interested parties have suggested that the authority should use data/information pertaining to Chinese affiliate of the L&T. The petitioner submits price of major inputs i.e. Steel in China do not substantially reflect market values. The argument is true for petitioner's related company also.

30. Submissions by M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, Apollo Tyres Ltd. & JK Tyres & Industries after Preliminary Findings

- a) CNV should be accurate for correct dumping margin analysis. Some sizes of presses like 48" has not been analyzed for Dumping Margin, even though they were imported during POI. Normal value for 48" and 65.5" should be included in the table.
- b) Since there is an adjustment in constructing the Normal Value of Press, it has been pointed out that any adjustment will have an error and a significant error will lead to a grossly wrong normal value. Authority should clarify the error in this adjustment.
- c) Authority has adjusted the CIF value (taken from IBIS) to take care of VAT and bank transaction, to arrive at ex-works export price. The error in adjustment should be clarified because a significant error would lead to an incorrect ex-works export price and incorrect dumping margin. Ex-works export price for 48" press and 65.5" press should also be included here.
- d) In the Preliminary Findings, the volume of imports in 2005-06 is given as 2 Nos. from China PR, which is not correct, as Apollo has imported 4 Nos. of 48" press in 2005-06.
- e) The DGAD has not revealed the basis on which the domestic prices of major inputs has been adjusted for arriving at the Constructed Normal Value.
- f) The DGAD has not taken any efforts to arrive at CNV of 48" and 65.5" TCP, which was actually imported during the POI.
- g) The DGAD should have arrived at separate dumping margin for each TCP keeping in mind the difference in technical specifications and price of individual TCP.

Examination by Authority

31. The Authority notes that M/s Guilin Rubber Machinery Factory (Guilin), a producer/ exporter of the subject goods from the subject country, has submitted information on prescribed format to rebut non-market economy presumption.

32. The Authority notes from the response that M/s Guilin Rubber Machinery Factory (Guilin) is subsidiary of China National Chemical Equipment Corporation and its management is selected by China National Chemical Equipment Corporation. It has also been stated that 'Guilin' and China National Chemical Equipment Corporation are state contributed enterprises and there is a no Board of Directors and Board of Shareholders for 'Guilin'. The legal representative of 'Guilin' is a factory director who is appointed by China National Chemical Equipment Corporation.

33. In view of the above facts, 'Guilin' is a state owned enterprise and is not possible to rule out significant interference by State concerning critical business decisions. Since the exporter has not been able to establish its claim of market economy status on this account, it has not been considered necessary to record findings on other requirements of market economy treatment. Therefore, the Authority is not granting market economy treatment to exporter for the purpose of this findings.

G.3 Normal Value for China PR

34. As recorded in Para 33 above, market economy treatment has not been granted to Guilin for the purpose of this findings. Therefore, the authority has constructed the normal value for China PR on the basis of Para-7 to Annexure-I to the Rules.

35. After the disclosure statement, M/s Guilin stated that it is not clear whether there has been any adjustment for differences in physical characteristics between the lighter and simpler presses exported by GRM compared to the domestic product.

Examination by the Authority

36. In this connection Para 7 of Annexure I of the Anti-dumping Rules provide that:

In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a

reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.

37. In the Initiation Notification, it was informed that domestic industry has suggested India as surrogate country for determining normal value for China PR in terms of the above provision. However, no submissions have been made by co-operating exporter or other interested parties in this regard.

38. As no information about prices has been made available in respect of market economy third country and also prices from such third country to other countries, the Authority has therefore determined normal value on basis of 'Any other reasonable basis'.

39. The Normal Value has been constructed for the like articles, i.e., those subject goods with similar features which have been exported to India during POI as per information available in IBIS data, the direct exports revealed by Guilin and imports details provided by importers.

40. The Normal Value has been constructed taking into account domestic price of all the major inputs duly adjusted to reflect international prices due to non-availability of international price for various components separately for machines for different sizes. Consumption norms, conversion cost, and SGA expenses of the domestic industry have been adopted for determination of the normal value. After adding a reasonable profit margin of 5% constructed normal value has been worked out. As regard the claim of M/s Guilin for adjustment of differences in physical characteristics between the lighter and simpler presses exported by GRM compared to the domestic product, the Authority notes that no such duly substantiated claim of price difference for such difference has been made by the exporter.

TCP Size	Material Cost (Rs. In lacs)	Other manufacturing Cost (Rs.)	SGA & Finance cost (Rs.)	Profit margin @ 5 %	Constructed Normal Value (CNV)	CNV @ Exchange Rate @ Rs. 40.75/US\$ (USD)

48" TCP+VCL+S MO	***	***	***	***	***	***
65.5 TCP+VCL+S MO	***	***	***	***	***	***
78" TCP+VCL without controls	***	***	***	***	***	***
91" TCP	***	***	***	***	***	***
93" TCP	***	***	***	***	***	***
104" TCP	***	***	***	***	***	***

G.4 Export Price

41. In response to the disclosure statement, the exporter, M/s Guilin Rubber made the following submissions:

- i. As per law reflected in numerous findings of the Indian Authority and other Authorities GRM is not required to furnish export data of unrelated traders. The only basis for rejecting individual determination following the on-spot exporter determination is if the data furnished was found at verification to be incorrect. This is contrary to fact and reflected in the fact that there is no disclosure nor mention in verification report either that data furnished by GRM was inconsistent with its records verified.
- ii. In a transaction between trader and its final customers, such service can be conducted by trader itself as it also has the technical ability. The Authority has not any evidence to prove that GRM know the final customers in the export transactions through traders in advance. There is no reason for the Authority to refuse GRM's claim for individual margin.

42. Further, M/s Luthra & Luthra made the following submissions after disclosure statement:

- i. The DGAD has arrived at the export price of subject goods by deducting certain expenses and making few adjustments. However it has not been explained in the disclosure statement as to what all deductions have been made by the DGAD.
- ii. Without prejudice, it is submitted that while arriving at the export price the DGAD has not taken into account the fact that TCP with add-ons / controls are different from bare press.

43. Post disclosure, the domestic industry made the following submissions:

- (a) The argument that the company has now, post preliminary findings, contacted its customers to identify transactions where material was exported to India, at the least, deserves to be rejected. If the company claims that it had no knowledge of the customer at the time of sale, how are they able to identify exports now.
- (b) If the company says that they now collected confirmation from their customers, how do they satisfy the Authority that they have exhaustively collected the information.
- (c) If the company who has actually shipped the goods has not come before the Designated Authority, how the Designated Authority would establish export price, particularly when the producer was not even aware of the customer at the time of sale. The eventual price to India may be higher or lower than the price at which the company has sold domestically.
- (d) If the company claims no knowledge of the consumer, who did commissioning, installation and post sales services. Can a trader possess requisite technical expertise to undertake these services.
- (e) In a situation where the number of machines exported to India itself has progressively increased during the course of the investigations, how is the credibility of the current information established.
- (f) Since the company claims that it was not aware of the customer at the time of sale, how records would now suffice for establishing export price.
- (g) Once the company claims ignorance on exports to India, verification of records of such company becomes insufficient. The company itself has admitted that its records do not identify exports to India. Therefore, there is no way the Designated Authority can now establish that all exports to India have been fully disclosed.
- (h) Once it is established that some other trader has invoiced the goods to India, the Designated Authority cannot determine dumping margin, unless such other trader cooperates with the Authority. In fact, the price at which goods have been sold to a customer in India itself cannot be determined in such situations. It is quite likely and indeed appears to be the situation that Gulian has reported only

those transactions where the price was favorable [i.e., higher] to them. The Authority has no mechanism to know whether Gulian has reported all [those low] priced transactions where material has been exported to India. It is Gulian's own claim that it had to rely upon a confirmation from its purchaser in order to identify its export sales to India. Gulian's records were insufficient to identify and establish transactions relevant to exports to India. This fact alone is also sufficient to reject individual dumping margin to the company.

- (i) While relevance of technical ability cannot be undermined, the same is only starting point for a customer to consider a supplier. It cannot become end point. In other words, the Indian consumer/purchaser of TCP cannot place an order on a Chinese company merely based on technical ability.

Examination by the Authority

44. The Guilin Rubber Machinery Factory, the exporter from China PR provided transaction-wise details of exports made during POI. However, it was noticed that some exports were made to India from 'Guilin' which was not reflected in export transactions disclosed by the exporter. The exporter was asked to clarify and it was replied that Guilin has reported its sales shipped by it to India during POI and negotiated directly with Indian customers. Apart from these Guilin has sales within China including also to unrelated traders, sometimes even delivered to China ports. Guilin has no idea of the final customer of such unrelated traders. Guilin reports such sales as its domestic sales since goods were delivered by it or collected from it in China and it has no knowledge of the final customer in China, India or elsewhere and since no VAT-refund has been claimed or received by Guilin in respect of such sales as can be verified". After the Preliminary Findings, it was informed that the exporter has contracts with the trader and asked them to confirm whether they have re-sold the presses to India. It has also been intimated that the traders refuse to cooperate however they have confirmed that presses were re-sold to India and the names of customers have also been provided. In the revised information, the exporter has given the transaction-wise details of export directly made to India and exports made to India through one of the trader. No information has been provided about the export sales made to other countries or exports made to India through other traders. During the verification, the exporter was asked to show the delivery documents, in this regard it was stated that they were not aware of the final destination though they have delivered the presses at the direction of the trader on China's port. The exporter however could not explain satisfactorily that how the TCP which require technical inputs, for manufacturing and installation from final customer's place, could be sold to trader without knowing the final customer. It was also informed that they are not aware of final destination of the TCP sold to other traders. In the submissions, the exporter has stated that most

important consideration is "technical ability". The Authority in view of the nature of the product, is unable to accept the explanation of the exporter and cannot rely on the transaction-wise details provided for exports to India. Since the exporter has not been able to correctly establish its export price claims, which is most vital for determination of individual dumping margin the Authority has not been able to determine separate individual dumping margin for the exporter 'Guilin'.

45. For the purpose of findings, export price has been determined separately for comparable types by taking into account the data of imports as reported in India by IBIS data, the direct exports revealed by Guilin and imports details provided by importers in their responses.

46. In the imports data, the information has been provided on CIF value basis. The expenses incurred in export transactions have been deducted on the basis of information provided by Guilin to determine the ex-factory export price. The company has claimed the adjustments on account of export packing expenses, inland transportation, handling, bank charges and non-refundable VAT. No expenses were disclosed in respect of commission. The same was disclosed during the verification and has now been adjusted to arrive at the ex-factory export price. The ex-factory export price has been determined size-wise of the TCP by taking into account the description of the product disclosed by the Guilin and in the imports data of the IBIS and importers. By this methodology, the ex-factory export price per TCP has been determined as under:

TCP size	Ex-factory export price (USD/Machine)
48" TCP+VCL+SMO	****
65.5" TCP+VCL+SMO	****
78" TCP+VCL without controls	****
91" TCP	****
93" TCP	****
104" TCP	****

G.5 Dumping Margins

47. After the disclosure statement, M/s Luthra & Luthra submitted that Dumping margin is inaccurate in as much as the TCPs of different sizes are not like product and will have separate dumping margin depending on whether they are bare presses or whether they are imported with certain add-ons and additional features.

Examination by the Authority

48. For the purpose of determination of dumping margin, for all exporters, the ex-works normal value and export prices as determined above have been compared for the same comparable sizes and description. The weighted dumping margin has been determined by taking into account the volume of imports disclosed in IBIS data, importers responses and direct export of Guilin as follows:

	Weighted average Normal Value (USD per Machine)	Weighted average Export Price (USD per Machine)	Weighted average dumping margin (USD per Machine)	DM %
All exporters from China PR	****	****	****	31.85

H. INJURY DETERMINATION

Views of domestic industry

49. The domestic industry has claimed that they have suffered material injury as a result of dumping from China PR. They have submitted that the imports of the product under consideration have increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India. Imports are undercutting the prices of the domestic industry. Continued presence of the Chinese suppliers in the Indian market forced the domestic industry to reduce its prices not only in those orders where the Chinese were present, but also in those orders where the Chinese suppliers were not present. It has been stated that mere presence of the low priced product in the market in an industry like this would force all the suppliers to quote a lower prices on fears of loss of sales. Performance of the domestic industry deteriorated, as a consequence, in terms of market share, profits, return on investment and cash flow. Even though the performance of the domestic industry improved in terms of production and sales volumes, performance deteriorated in terms of associated prices. Moreover, improvement in performance in terms of production and sales is of economic consequence when the performance in terms of profits and return on investments is not in tandem with the performance in terms of production, and sales volumes. It can thus be concluded that the domestic industry suffered material injury.

50. In respect to threat of injury, it has been submitted the following:

- (a) Imports have increased significantly. In fact, from almost negligible, the volume of imports increased to 24 machines during the proposed POI itself, representing 08% of demand in India.
- (b) The prices being quoted by the Chinese suppliers are significantly lower than prices being quoted by the Indian Producers. Given the overall cost advantages to the tyre industry, it is evident that the imports are entering at a present that is likely to increase demand for further importation of the product in the market.
- (c) Chinese producers are holding significant unutilized capacities. This is established by the fact one Chinese producer alone has obtained an order for supply of 64 machines where delivery schedule was less than 12 months. The company would not have obtained the order, had it not been having unutilized capacities to execute the order.

51. After preliminary findings, the domestic industry has made following submissions:-

- (d) ATMA claimed presses imported by its members do not appear to be included in the import volumes considered by the Authority. The Authority should consider these imports as well for determination.
- (e) Various types of Tyre Curing Presses have significantly different associated weights, costs and prices. Therefore, assessment of various volume parameters using numbers as a unit of measurement may not appropriately reflect the performance of the domestic industry with regard to these parameters.
- (f) Petitioner has provided evidence to show that Chinese competition is not new in the Indian market and that the Indian Producers have been forced to compete with low priced Chinese imports for quite some time. Price list floated by a Chinese producer in the Indian market offering to sell Chinese tyre curing press. Chinese supply of tyre curing press to third country used by a consumer as evidence to force the domestic industry to offer low prices.
- (g) Value of a single order is in general quite high and might even go to couple of crores. Such being the case, every purchaser buys and every producer sells the material after lot of market research.
- (h) The imports of the subject goods from the subject country have increased substantially during the injury period. The imports increased from 1 in number in 2004-05 to 24 in POI. In relation to the production, imports increased (in Nos.) to 5.76% in POI from 0.39% in 2004-05. In weight, it

increased from 1.09% to 12.65% and in value from 1.07% in 2004-05 to 8.95% in POI.

- (i) In relation to demand, import increased, (in number) from 0.62% to 7.09%; in weight, from 2.28% to 15.30% and in value from 1.09% to 8.53% in POI.
- (j) Production and sales of the domestic industry increased, the profitability declined significantly, market share declined, domestic industry had available capacities which could be better utilized for production and sale of the product concerned in the domestic market, the tyre industry is expanding in a significant manner, which is resulting in robust growth in demand for the product in the Country; significant volume of orders are expected in due course. Availability of dumped imports in the market would result in loss of this business opportunity to the domestic industry.
- (k) Even when petitioner has reported above capacity and capacity utilization in various possible manners, having regard to the nature of the product under consideration, capacity and capacity utilization may not appropriately reflect the position with regard to utilization of various facilities required for production of the product under consideration.
- (l) Over the years, petitioner has developed a number of parties who can undertake some of the processing activities on behalf of the product. Given the nature of the production process and depending upon the workloads on various machines at any point of time, petitioner undertakes lot of activities by sub contracting part-processing activities.
- (m) The demand has increased by 109% in terms of numbers; however, in terms of weight the demand has increased by 226%.
- (n) The petitioner submits that for the accurate determination of price undercutting, the presses with same size should be compared.
- (o) Price underselling is to be determined by comparing the weighted average landed price of imports of a particular size of the machine from subject country with the Non-injurious selling price of the same size and add on of machine produced by the domestic industry during the POI.
- (p) Cost of sales increased by 221% in POI as compared to base year, sales value increased by 156% only. This clearly indicates that domestic industry could not increase sales value in proportion to increase in cost indicating the suppression of prices.
- (q) The domestic sales realization of the domestic industry has not increased in line with the increase in cost of production. The profit of the domestic

industry has declined over the injury investigation period. As compared to 100 (indexed) of the base year, profit before interest declined to 34 in POI.

- (r) Performance of the domestic industry deteriorated significantly. Profitability declined from above 29% (of cost of sales) to 3% in POI.
- (s) Even when sales increased by more than 150%, profits before tax declined. Return on investments and cash flow declined over the injury period.
- (t) Number of employees and wages paid indicates that employment has increased. Domestic industry has lost substantial orders due to Chinese dumping.
- (u) The demand of goods increased significantly over the injury period. Volume of dumped imports increased significantly in absolute terms as also in relation to production & consumption in India. Imports have been undercutting the prices of the domestic industry. Consequently, the domestic industry has been forced to offer sub-optimal prices to such an extent that the profitability, return on capital employed and cash profits started suffering significantly. Performance of the domestic industry deteriorated in terms of market share, profits, return on capital employed and cash profits, even though the same improved in terms of production & sales. The deterioration in market share, profits, return on capital employed and cash profits clearly outweigh the improvements in production & sales volumes. The purpose of production & sale is to earn profits and the same got defeated when the increase in production & sales led to decline in profits and return on investments due to dumping.
- (v) Imports have increased significantly. From almost negligible, the volume of imports increased to 24 machines during the proposed POI itself, representing 8% of demand in India.
- (w) The prices being quoted by the Chinese suppliers are significantly lower than prices being quoted by the Indian Producers.
- (x) Chinese producers are holding significant unutilized capacities. This is established by the fact one Chinese producer alone has obtained an order for supply of 64 machines where delivery schedule was less than 12 months.
- (y) Inventories of the articles with the suppliers is not relevant consideration in the present case, given that the goods are produced only against confirmed orders and shipped within the stipulated/committed period.

- (z) The export sale of the domestic industry is significant. In respect of production and capacity, the domestic industry is improving its performance as overall equipment utilization was in range of 80%. However, the analysis of financial performance has been done for domestic sales only.
- (aa) Sub-optimal prices offered by the domestic industry directly affected the profits, cash flow and return on investments of the company.
- (bb) Significant price undercutting resulted in increase in market share of imports from the subject country inspite of sub-optimal prices offered by the domestic industry.
- (cc) Given the low prices offered by the Chinese producer, the domestic industry has been forced to offer low prices while responding to the enquiries from the customers.
- (dd) Regarding difference in production – In the published annual report, production is given for rubber processing machinery and tyre-curing press is a part of rubber processing machinery. Following are rubber processing machinery - Tyre Curing Press, Accessories of TCP (VCL, SMO, PCI), Band Building Machine, Tyre Building Machine, Tube heater, Drum, Tube Press, Belt Building Drum, Tube Splicer, Bati Mandrin
- (ee) Footnote '7' of the Anti Dumping Act provides that date of sale can vary from date of order to date of shipment to date of arrival of the goods in India.
- (ff) The dumping margin and injury margin has been determined separately for each TCP. However, the Authority is required to determine weighted average injury margin and dumping margin for the product under consideration. The decision of the WTO in the matter of Bed linen is referred to and relied upon
- (gg) There is steep deterioration in the performance of the domestic industry in terms of market share, profits, and return on investment and cash profits. Imports are significantly undercutting prices of the domestic industry, which is leading to price suppression/depression.
- (hh) The rules do not state that injury occurs only when the domestic industry is suffering loss. The rules required an examination of whether the performance of the domestic industry deteriorated. The rules do not require an examination of whether the domestic industry is leading to a situation of BIFR Company.

- (ii) Not only that the petitioner is not the sole producer of the product under consideration in India, but also petitioner faces competition from other domestic producers as also unfair pricing by Chinese manufacturers.
- (jj) Export sales and domestic sales are different and hence the figures pertaining to domestic do not have any influence on the losses, if any, on exports. Claimed injury is not on account of exports. The claimed injury is on account of domestic operations
- (kk) L&T is an engineering conglomerate with a turnover of over Rs.35,000 Cr. Hence the AR statement by the CFO of L&T is more on the general business scenario and not anything specific to Rubber Processing Machinery.
- (ll) The cannot be taken as the basis that RPM is doing well with regard to the profit parameter and ROCE. The consolidated report results need not reflect the actual ground reality for each & every product and the Honorable DGAD has all the details with respect to LTMs profitability and ROCE.
- (mm) Sufficient evidence has been provided to show that price is the primary consideration for placing orders on Indian and Chinese producers.
- (nn) Technical parameters are important criteria. It is only when technical parameters are met, the price comparisons are made and negotiations are held.
- (oo) The email and price list in fact establish that Chinese competition existed as early as in 2002.
- (pp) No evidence provided of any alleged lost order to date. L&T can give details like date, name, type of TCP and number ordered without divulging confidential information like value.
- (qq) There is no justification for restricting the product under consideration to 104".
- (rr) Incorrect understanding appears on the part of ATMA and not the Designated Authority. What the Authority has stated is that TCP plant having facilities to produce a particular press can produce a size lower than such size. The Designated Authority has nowhere stated a plant can produce any size.
- (ss) A statement showing delays in supplies and identifying therein the reasons for such delay is enclosed with these submissions. It would be

seen that the customers have delayed finalization of detailed design and drawing. A number of times, the payment have been significantly delayed.

- (tt) Email copy from customer/data of accessories being procured by JK has been submitted to DGAD, which is a proof that LTM has been supporting customers on issues, which are not related to their presses

Views of Importers & Users

52. M/s Luthra & Luthra Law Offices on behalf of M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, M/s Apollo Tyres Ltd. and M/s JK Tyres Ltd. have made the following submissions on injury to domestic industry:

- a. L&T and other domestic manufacturers are not meeting delivery deadlines that have caused delays in the project schedule of the Importers.
- b. Data submitted by the petitioner regarding import of presses, allegedly as per IBIS data, does not even remotely match the exact imports made by the importers either during POI or before the POI. Except for the 91" press imported by JK in 2004-05 and 48" Imported by Apollo in 2005-06 all other import data is incorrect.
- c. There is major discrepancy between Annexure 1.2 on "Imports of TCP's into India", Annexure 1.6 on "Lost orders of TCPs by Petitioner" and Annexure 1.4 on "IBIS import data".
- d. The data on lost orders is totally baseless. The premise on which the so called list of lost orders has been drawn up is not evident at all.
- e. The Petitioner has kept certain information confidential which does not deserve confidential treatment, such as the data on so-called "lost orders" and the information about the Petitioner on its expansion plans.
- f. Being a public listed company, L&T is required to disclose the information on its expansion plans to the public and investors.
- g. The Antidumping Rules reproduce Article 4.1 of the Antidumping Agreement and also require that injury be conducted for the "major" proportion of domestic manufacturers.
- h. The petitioner has not analyzed the impact of the imports on other significant and important producers on any aspect of injury and presented an injury analysis based solely on their own data, which in itself inconsistent and incorrect.
- i. A comprehensive injury analysis requires that impact of imports be evaluated for a "major" proportion of the total domestic production and the Petitioner was required to conduct an injury analysis taking into account not just their company specific data but also data pertaining to the other domestic manufacturers. The present injury analysis by the petitioner amounts to an incomplete and flawed analysis of the impact

- of imports on the entire domestic industry and for this reason alone should be rejected by the DGAD.
- j. Petitioner has manipulated the volume and value figures of import data just for the purpose of antidumping proceedings.
 - k. There is an error in IV-A with respect to indexed data on total salary and wages.
 - l. The Petitioner has, in violation of the WTO Agreement on Antidumping and the Indian Antidumping Rules, tried to include supposed sales/orders for Chinese presses placed by Indian and delivered after the POI in conducting the injury analysis for the POI.
 - m. The unsubstantiated data submitted by the Petitioner as lost orders should be rejected outright by the Hon'ble DGAD.
 - n. Based on L&T's data, L&T shows no injury or negative growth for most of the injury parameters. All injury parameters integral to a showing of injury have registered positive year to year growth by L&T own admission.
 - o. L&T has not been able to establish a "casual link" between the alleged dumping and the supposed injury caused to it during the POI.
 - p. The steady increase of capacity, capacity utilization, production and sales of TCPs' does not support a conclusion that there has been or that there is potential for decline in capacity, capacity utilization, production or sales of TCPs in India.
 - q. All three critical factors, i.e., domestic production, domestic sales and domestic sales realization have all seen increases, and these increases are not marginal or insignificant but demonstrate the largest increase for the company during the POI compared to any period prior to it.
 - r. The company went on to produce more, sell more, divert larger export sales to the domestic market and earn its highest domestic sale revenue during the POI. This in itself should be ground for the DGAD to terminate the investigation as the first and foremost indicators of injury namely actual or potential decline in production, sales and sales realization have not been proved by L&T.
 - s. L&T's market share also has been consistently increasing in comparison to other domestic producers. Both in terms of volume as well as value of domestic sales, L&T has secured the monopoly share of the market.
 - t. Productivity, employment, salary & wages have increased which is in contradiction to its claim of injury.
 - u. The DGAD must investigate the downward trend in profits and the Petitioner must be made to disclose the manner in which profits have been calculated especially in light of the fact that figures on sales, production and sales realization do not support such a drastic fall in profits.
 - v. The expansion projects undertaken by the petitioner also are a major cause for reduced profits and not imports as the petitioner is contesting.

- w. The fall in profits during the POI can be solely be attributed to the fall in exports volumes and export sales realization which in themselves have been adversely affected by exchange rate fluctuations.
- x. L&T has not even analysed the factor of injury "Ability to raise capital". Its injury analysis is thus incomplete, flawed, manipulated and severely lacking in any proof injury and alleged dumped imports.
- y. L&T has not examined whether there has been price depression or suppression. DGAD must undertake price analysis of "like products" and must find injury only if there is significant price undercutting, price depression or suppression.
- z. The Petitioner have raised a false claim of 'threat of injury' in view of its ability to show negative results on various on various economic parameters as required by the Antidumping Rules.
- aa. Positive growth in the antithesis of injury and for this reason the DGAD should terminate this investigation both on present material injury basis as well as for threat of material injury.
- bb. Petitioner has failed to establish a clear causal link between imports and fall in profits (other factors have not suffered any injury) and for this reason alone, the investigation should be terminated.
- cc. In the event MET treatment is denied to the Chinese exporters, then L&T costing data for its Qingdong factory should be used for the purpose of surrogate value.
- dd. While arriving at the export price, DGAD should not allow any deduction on account of commission of traders as the products have been imported directly. As regards the deduction on account of VAT, the Petitioner have to establish that product in question gets a VAT refund.
- ee. Hon'ble Authority must compel L&T to atleast disclose the method of allocating and apportioning costs to the LTM division so that the reasonableness of the same may be examined.

53. **Submissions by Apollo Tyres Ltd., on Preliminary Findings**

- a) The petitioner. has displayed the monopolistic practices. Anti-dumping duty on TCP will further strengthen the Monopoly of Petitioner and hurt the Domestic Tyre Industry severely.
- b) TCP are customized capital goods, made to customer's specific requirements. Prices vary significantly based on the scope of supply agreed between supplier and customer. Before calling any two presses as 'Like Presses', one should have adequate information about its size, type, VCL, SMO, Surge Conveyor, Centre mechanism, Piping module, Control System. Thus before attempting DM analysis or IM analysis for price we should ensure that the Presses being compared are 'Like'
- c) It is clear from the price comparison of 48" imported press and 48" domestic press that the imported press from China has a higher landed

price than the net price of press from Domestic Press Producer (LTM). Therefore, there is no injury to the Petitioner.

- d) DI has not manufactured certain sizes of presses during the POI and even today some sizes are not being manufactured. There is no basis for injury analysis of press sizes, which petitioner has not made or lacks manufacturing capability.
- e) Correct source of data must be used for injury analysis, when the same is available on record. Data for imports must be taken from 'Bill of Entry' and invoices. Price and quantity given in IBIS and Petition are not reliable, hence must not be considered for any analysis.
- f) There is no injury as most parameters have shown growth be it Sales by Nos. (154%), Production (114%), Market Share (22%). Cash profits also increased. It cannot be seen as a sign of injury.
- g) In the current environment of unfavourable exchange rates, anti-dumping duty will make the imports more expensive and will further hurt the domestic tyre manufacturing industry severely.
- h) LTM shall give evidence to prove the Capacity Utilization of 30% in 2006-07 and 36.67% in 2007-08 as stated in the petition.
- i) As the petitioner has increased its market share by 8% approx., there is no injury to the petitioner on this ground. It should be investigated that other producers have lost 15% market share, but have not shared their data with the Authority in the Investigation.
- j) For determining price undercutting, Authority has used a conversion factor of 1.086% (Customs duty & handling charges) to convert the Assessable value to landed price. The conversion factor used is not correct. The correct conversion factor should be in the range of 1.14 to 1.19 depending upon customs duty and the other related taxes. Using these factors will increase the landed price by 5 to 10%, thus reducing the price undercutting from 5-20% to 0-10%.
- k) In case of 91% press, all the transactions have not been considered for price undercutting. Some transactions have a higher value and they would significantly reduce the price-undercutting % further.
- l) It has been requested to disclose the basis for arriving at Non-injurious prices and the error in the estimation process.
- m) The ineffective management of resources and in-efficient raw material purchase by Domestic industry is the cause of price suppression and depression. This could not be analysed due to lack of access to the correct absolute financial data.
- n) With so many products being manufactured in the same division, the accuracy and authenticity of the financial data cannot be relied upon. A

thorough audit of records by a competent Authority would be required to confirm the correct financial data.

54. Submissions by M/s Automotive Tyre Manufacturers' Association, Apollo Tyres Ltd. & JK Tyres & Industries after Preliminary Findings

- a) Various fallacies, which were brought in light during preliminary investigations, in the domestic industry's petition have not been considered by the DGAD while proposing to levy provisional anti-dumping duty @ 15% ad valorem.
- b) The DGAD has erred in its examination of the instant anti-dumping investigation, and is incorrect in holding that the import of TCPs from China PR has caused material injury to the domestic industry.
- c) The data furnished by the Domestic Industry is not authentic and unreliable and the DGAD should not have initiated the present investigation at all.
- d) The data so provided by IBIS does not even remotely match with the actual import data of the importers. It is submitted that DGAD ought to have relied on the primary data submitted by us, in the form of bills of entry, invoices, etc. rather than relying on the secondary source data from IBIS.
- e) The preliminary findings do not whisper anything about our objection as to discrepancy of data in Annexure 1.2 on "Imports of TCPs into India", Annexure 1.6 on "Lost orders of TCPs by Petitioner" and annexure 1.4 on "IBIS import data".
- f) Tyre curing presses are capital goods whose quality and availability at competitive price are critically important to the procuring industry, namely tyre manufacturers.
- g) The petitioners' own data state that the share of other manufacturers was higher than the domestic industry on value-basis, i.e., to say in value terms other domestic manufacturers claim higher status than L&T alone.
- h) The anti-dumping proceedings are not the proceedings whereunder one domestic industry should be allowed to create monopoly situation in the market. The main objective of anti-dumping investigations to look beyond one industry and should take into account the impact of alleged dumping on all players in the domestic TCP manufacturing industry.
- i) The DGAD ought not to have allowed the confidential treatment to the data pertaining to "lost orders" in as much as the said orders must have been placed by the user industry only and when the said data is based on market intelligence of the domestic industry. This has denied an

opportunity to verify the authenticity of the Petitioner's claims and resulting in a gross violation of their right to a fair hearing.

- j) There seems to be an inherent fallacy in the preliminary findings wherein despite all injury parameters showing upward trend, provisional anti-dumping duty has been recommended.
- k) The impugned injury has been decided on merely one factor, i.e., profitability of the domestic industry. Thus, the DGAD has not adopted a comprehensive approach to determine injury.
- l) If the profitability is re-calculated on Earning before Interest, Tax, Depreciation & Amortisation (EPITDA) basis rather than Profit before Interest and Tax (PBIT) basis, even the profits parameter might yield different results, in view of capital expansion.
- m) There are various other factors, which would have had an adverse impact on the profitability of the petitioners. The fall in profits during the POI can be solely attributed to the fall in exports.
- n) The exchange rate fluctuations have also had an effect on profits of domestic industry.
- o) The DGAD has erred in holding PBIT has fallen merely because of imports as the above displayed data has clearly established that this contention is entirely untenable and insupportable.
- p) The findings pertaining to price undercutting and underselling effects faced by the domestic industry are incorrect and miscalculated. The data employed by the DGAD is limited in scope and the resultant analysis cannot be universally applied for the purpose of determining the alleged margin of injury.
- q) Owing to the peculiar nature of TCPs machines of different specifications cannot be termed as "like" products, the price undercutting and underselling ratio arrived at by the DGAD during the course of the Preliminary Findings is largely insufficient and also incorrect. Further, price undercutting and underselling effect of various TCP machines imported by the user industry during POI has not been analysed.
- r) Owing to the above submissions, there is no suggestion or any imminent threat of material injury faced by the domestic industry. Moreover, the DGAD in its preliminary findings has not discussed the existence of "threat of material injury". Failure to evaluate the "threat of material injury" raises serious doubts on the bona fides of the present investigation.
- s) The injury margin computed by the Authority is incorrect as the data employed by the DGAD for computing the same is misleading and capable of being manipulated.

- t) The DGAD in its examination has not commented on the reservations put forward by the importers on the data supplied by the Petitioner.
- u) The share of domestic industry has increased and the share of other producers has declined. This factors merits due consideration before imposing provisional duty is the monopolistic position enjoyed by the petitioners in the domestic market, since such imposition would further strengthen this monopolistic position.

55. Post disclosure, no fresh injury submissions have been made by the interested parties.

Examination by the Authority

56. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, ".... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

57. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the rules supra.

A) Volume Effects of Dumped Imports: Import volumes and market shares

a) Import volumes and share of subject countries:

58. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

59. The Authority received transaction-wise information from DGCIS. On perusal of the data it was noted that the data has not captured any transaction of TCP imports under relevant custom tariff head. The Authority therefore examined the volume of imports of the subject goods from the subject country and other countries based on the transaction-wise import data provided by IBIS data for the

purpose of the findings (though data of IBIS has also not captured all imports), however, the Authority has relied on one set of data for injury analysis.

Quantity in Nos.				
Period	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Country	Quantity	Quantity	Quantity	Quantity
CHINA PR	1	2	4	24
Others	0	0	0	0
Trend	-	-	-	-
Total	1	2	4	24
Share of subject country	100%	100%	100%	100%

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Imports	Nos.	1	2	4	24
Imports	MT	54	109	76	1225
Indian Production volumes	Nos.	257	316	355	417
Indian Production volumes	MT	4980	6600	8626	9685
Indian Demand	Nos.	162	204	224	338
Indian Demand	MT	2,386	3,556	5,015	8,006
Imports in relation to Indian production on number basis	%	0.39%	0.63%	1.13%	5.76%
Imports in relation to demand on number basis	%	0.62%	0.98%	1.79%	7.09%
Imports in relation to Indian production- on wt basis	%	1.09%	1.65%	0.88%	12.65%
Imports in relation to domestic consumption- on wt basis	%	2.28%	3.06%	1.52%	15.30%

60. The imports data has provided units in number. The same has been converted into unit of weight depending upon size of machines for the purpose of calculating ratios.

61. The above data indicates that imports of the subject goods from the subject country have increased substantially during the injury examination period. The imports increased from 1 number in 2004-05 to 24 in POI. There was no imports from other countries during the injury period. In relation to production, imports increased, in number, to 5.76% in POI from 0.39% in 2004-05. In terms of weight, it increased from 1.09% to 12.65%. In relation to demand, it increased,

in number, from 0.62% to 7.09%; in terms of weight, it increased from 2.28% to 15.30%.

Actual and potential effect on production and capacity utilization:

62. The volume of domestic production and effects of dumped imports on the domestic operation of the domestic industry have been examined in terms of total production, capacity utilization and domestic sales of the domestic industry.

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
In terms of Numbers					
Production volumes	Nos.	117	162	183	217
	Index	100	138	156	185
Domestic sales volumes	Nos.	59	89	95	150
	Index	100	151	161	254
In terms of Weight					
Production volumes	MT	3032	4309	6046	6793
	Index	100	142	199	224
Domestic sales volumes	MT	1403	2256	3422	4787
	Index	100	161	244	341

Capacity Utilization

63. The Authority notes that in this case capacity to manufacture TCP depends on number of factors, such as technical manpower, equipments in fabrication, machining and assembly shops, etc. The actual production may vary depending on size of machine produced and add on required by customers. It has been stated by the domestic industry that depending upon requirements, it is possible to outsource some manufacturing processes. Therefore, it is not possible to correctly assess capacity and capacity utilization.

64. The Authority, however, has examined the overall equipment efficiency based on records of the company and notes that the equipment utilization was in the range of 70-80%. In this regard, Authority notes that equipments have been added by Domestic Industry by making further investments. The Authority notes that in view of submissions of domestic industry, it is possible to manufacture

machines without any further addition of capacity, as the capacity to manufacture is not contingent upon only one aspect, i.e., equipment utilization.

Actual and potential effect on market share:

65. Effects of the dumped imports on the domestic sales and market shares have been examined as follows:

Demand – number basis		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Sales of Domestic industry	Nos.	59	89	95	150
	Index	100	151	161	254
Sale of Other Indian Producers	Nos.	102	113	125	164
	Index				
Imports from China	Nos.	1	2	4	24
	Index	100	200	400	2400
Demand	Nos.	162	204	224	338
	Index	100	126	138	209
Demand – weight basis					
Sales of Domestic industry	MT	1403	2256	3422	4784
	Index	100	161	244	341
Sale of Other Indian Producers	MT	929	1191	1516	1995
	Index	100	128	163	215
Imports from China	MT	54	109	76	1225
	Index	100	202	141	2268
Demand	MT	2386	3556	5015	8006
	Index	100	149	210	336
Market Share in Demand on number basis					
Domestic industry	%	36.47%	43.71%	42.45%	44.33%
	Index	100	120	116	122
Other Indian Producers	%	62.91%	55.31%	55.76%	48.58%
	Index	100	88	89	77
China	%	0.62%	0.98%	1.79%	7.09%
	Index	100	159	289	1147
Market Share in Demand on Weight basis					
Domestic industry	%	58.78%	63.44%	68.24%	59.79%
	Index	100	108	116	102

Other Indian Producers	%	38.94%	33.49%	30.24%	24.91%
	Index	100	86	78	64
China	%	2.28%	3.06%	1.52%	15.30%
	Index	100	134	67	671

66. The domestic demand has been assessed by taking into account sales by domestic industry, sale of other producers (estimate provided by domestic industry) and imports from all countries. The Authority notes that demand has increased by 109% in terms of numbers, however, in terms of weight the demand has increased by 226%.

Production

67. From the data, the Authority notes that the production has increased by 85% in terms of numbers; however, in terms of weight, the production has increased by 124% in POI as compared to base year.

Sales

68. The domestic sales of domestic industry has increased by 154% in terms of numbers from base year to POI. In terms of weight, the sales has increased by 241% during the same period.

69. The Authority notes that with the increase in imports in absolute terms, the share of imports have gone up from just 0.6% to 7% on volume basis and from 2% to 15% on weight basis.

70. The domestic industry has increased the share in demand from 36.47% to 44.33% whereas share of other producers have declined from 62.91% to 48.58% in terms of numbers. In terms of weight, the share of domestic industry has increased from 58.78% to 59.79% whereas the share of other Indian producers declined from 38.94% to 24.91%. The share of the subject country increased from .62% in 2004-05 to 7.09% in POI in terms of number whereas it increased from 2.28% to 15.3% in terms of weight.

Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

71. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Price undercutting and underselling effects

72. To determine price undercutting, the comparisons have been made by comparing the presses with same size. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the IBIS data and importers' data of imports from the subject country.

73. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

74. Price undercutting has been determined while making comparison of sizes of machines imported during POI. Weighted average price undercutting is as under:

Price undercutting

TCP with dia size	Net Selling price – Domestic (Rs./No.)	Landed Value (China PR)	Price undercutting (Rs./No)	Price undercutting (%)
48" TCP+VCL+SMO	***	***	***	***
65.5" TCP+VCL+SMO	***	***	***	***
78" TCP+VCL W/o Controls	***	***	***	***
91" TCP	***	***	***	***
93" TCP	***	***	***	***
104" TCP	***	***	***	***
Price undercutting range in %				(-)1 to (+)19%

75. Price underselling has been determined by comparing the weighted average landed price of imports of size of the machine from subject country with the Non-injurious selling price of the same size and add on of machine produced by the domestic industry during the POI. Weighted average price underselling is as under:

Price underselling

TCP with dia size	Non-injurious price (Rs./No.)	Landed Value (China PR)	Price underselling (Rs./No)	Price underselling (%)
48" TCP+VCL+SMO	***	***	***	***
65.5"	***	***	***	***

TCP+VCL+SMO				
78" TCP+VCL W/o Controls	***	***	***	***
91" TCP	***	***	***	***
93" TCP	***	***	***	***
104"	***	***	***	***
Price underselling range in %				(-)7% to (+)18%

76. The above data shows that the landed value of the dumped imports is significantly were below the net sales realization of the domestic industry and were undercutting in the range of (-)1 to 19% of the selling prices of the domestic industry depending upon the sizes of the press. The landed values were also below the non-injurious prices of comparable seizures of presses, resulting in underselling in the range of (-) 7% to 18%.

ii) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI	Increase in POI over 2004-05
Cost of Sales	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Index	100	191	190	321	221%
Selling Price	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Index	100	137	155	256	156%

77. Cost of sales has increased by 221% in POI as compared to base year. In terms of rupees, cost has increased by Rs. *** lacs, corresponding sales value has increased by 156%, in terms of Rs. It increased by Rs. *** lacs. This indicates that domestic industry could not increase sales value in proportion to increase in cost indicating the suppression of prices.

Examination of other injury factors

78. After examining volume and price effect in the previous section, the Authority has examined the other mandatory injury parameters as follows:

a) Profits/Loss and Return on investments

79. Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as follows: -

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Domestic Cost of Sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	191	190	321
Domestic Sales Value	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	137	155	256
Profit/ Loss before Tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	-44	35	34
Interest	Rs. Lacs	***	***	***	***
Profit/ Loss before Tax & Interest	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	-38	38	38
Capital Employed for domestic sales					
Net Fixed Assets	Rs. Lacs	***	***	***	***
Net Working Capital	Rs. Lacs	***	***	***	***
Total Capital Employed for domestic sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Return on capital employed	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	-28	16	9
Return on capital employed without considering additions during POI	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	-28	16	10

80. The Capital Employed has increased during POI as compared to base year on account of increase in net fixed assets as well as working capital. To discount the effect of increase in NFA, the same has been deducted to calculate the return on capital employed.

81. The above data shows that the domestic sales realization of the domestic industry has not increased in line with the increase in cost of production. The profit (PBIT) of the domestic industry has declined over the injury investigation period. As compared to 100 (indexed) of the base year, it declined to 38 in POI. However, as compared to base year, it declined to (-) 38 in 2005-06. Regarding losses in 2005-06, it has been explained that the domestic industry suffered financial losses in this period because of miscalculation of actual cost estimates in respect of hydraulic presses which was introduced for the first time in that year and the competition offered by Chinese suppliers. Thereafter, it improved to 38 in 2006-07 and POI. Consequently, the return on the capital employed (without considering addition during POI) for domestic sales of the domestic industry has declined significantly during the POI as compared to the base year. The return on capital employed declined to (-) 28 in 2005-06 as compared to 100 of base year. The negative return has also been attributed to loss made on the sale of hydraulic machines which was introduced in that year. The position improved in 2006-07 to 16 and declined again in POI to 10 (indexed). However, as compared to base year, the performance of the domestic industry declined significantly in POI which cannot be attributed to the losses due to introduction of hydraulic presses introduced in 2005-06.

82. It has been argued that the domestic industry continues to be in profits. The Authority however considers that the Rules do not provide that the domestic industry must suffer financial losses before a positive finding of injury can be recorded. The Rules instead requires the Authority to consider whether the performance of the domestic industry deteriorated in respect of profits and return on investment. Further, the investigation has shown that whereas the production & sales of the domestic industry have improved (a natural consequence of which should have been improvement in profits and return on capital employed), the profits and return on capital employed has declined.

b) Cash Flow

83. Cash flow for the subject goods have not been worked out separately for the product under consideration. Therefore, cash profits of the domestic industry for the subject goods over the injury period have been shown as under:

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Profit/ Loss before Tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Depreciation on Domestic Sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Cash profit for domestic sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	-33	41	45

84. It is seen from the above that the cash profits of the domestic industry has significantly deteriorated over the injury period.

c) Employment and Wages

85. Number of employees and wages paid indicates that employment has increased. The wages have also increased compared to the base year.

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Employment	Nos.	***	***	***	***
Trend	Index	100	107	125	133
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	132	133	174
Average wages per employee	Rs.	***	***	***	***
Trend	Index	100	122	107	131

d) Inventories

86. Authority notes that Inventories of the product are not an appropriate parameter in the present case as the goods are produced against specific customer orders.

e) Loss of orders

87. It has been alleged by the domestic industry that they had lost the orders. On perusal of the evidence submitted by the domestic industry, it has been noted that there appears to be some substance in the evidence submitted by the domestic industry as the negotiation about particular size of press with one particular buyer, later on imported from the China PR.

f) Productivity

88. The domestic industry produces the subject machines of different sizes and types and the requirement of labour hours vary from size to size and type to type. Authority therefore notes that the productivity per day or employee is not an appropriate parameter in the present case.

(g) Growth

89. The domestic industry has shown positive growth in terms of absolute volume of production and sales of the domestic industry over the injury period. However, the growth is negative when examined in terms of profitability, including return on investment and cash flow.

h) Ability to raise fresh Investment

90. The Authority notes that there is a healthy growth in domestic demand for the subject goods and the domestic industry has made fresh capital investments for expansion during the investigation period apparently keeping in view significant growth in demand for the product.

i) Magnitude of Dumping

91. The dumping margin determined for the subject country and the applicant exporter is above de minimis level.

j) Factors affecting prices

92. The cost of sales has increased during POI as compared to the base year whereas the selling price has not increased in proportion to the cost of sales. The undercutting of selling price by imports continued throughout injury period. It has also been noted that the basic custom duty also declined from 20% in 2004-05 to 7.5% in POI.

Conclusion on injury

93. The demand of goods in terms of numbers has increased from 162 in base year to 338 in POI, i.e., increase by 109%. In terms of weight also, it increased by 236%. The domestic sales have increased by 154% during the same period. As noted earlier, the equipment utilization is in the range of 70-80%. Therefore, the domestic industry continues to take advantage of increase in demand in the market. However, the domestic industry has lost orders to Chinese manufacturers. The under-cutting is in the range of (-)1% to 19%. The cost of sales increased by 221% whereas sales value increased only by 156%. Consequently, the profit (PBIT) declined by 62% as compared to base year and the return on investment declined sharply by 90%. It has been noted that in 2005-06, there was sharp decline in financial performance. It has been explained that the domestic industry suffered financial losses in this period because of miscalculation of actual cost estimates in respect of hydraulic presses which was introduced for the first time in that year and the competition offered by Chinese suppliers. This factor was missing in subsequent years, therefore performance improved in 2006-07. However, as compared to base year, the financial performance of domestic industry declined significantly in POI.

94. The above analysis indicates that though domestic industry was in position to increase sales both in value and volume basis, however, there was sharp decline in profitability showing injury to the domestic industry.

95. The Authority has noted that on production and sales, the domestic industry has been able to show improvement in performance. However, Examination of the imports of the product and performance of domestic industry clearly shows that the imports of the product under consideration have increased in absolute terms and as also in relation to production and consumption in India. The imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market and the effect of the dumped imports was to suppress the prices of the domestic industry in the market. The prices have not increased in proportion to the increase in the cost of production. It is thus concluded that there has been a significant increase in the dumped imports both in absolute terms and relative to production or consumption in India. Further, there has been a significant price under cutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India and the effect of such imports is prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, performance of the domestic industry deteriorated from the base year in terms of market share, profits, cash profits & return on investments. Imports are affecting the domestic prices. Even though performance of the domestic industry improved in terms of production, sales, capacity utilization, the Authority considers that these positive improvements were off-setted by negative developments in profits and return on investments. The Authority notes that the profits and return on capital employed should have improved as a result of increase in production and sales. However, the same have instead declined significantly indicating the material injury suffered by the domestic industry as can be seen from the trend from the base year.

96. The Authority notes that the Rules require examination and assessment of performance of the domestic industry over the period, by considering a number of parameters listed under the Rules. Further, while the Rules provide for examination and assessment of all listed parameters, it does not provide that the performance of the domestic industry must deteriorate in terms of each and every parameter. Further, the Rules provide for assessment of whether the performance of the domestic industry has deteriorated or declined in respect of these parameters and whether such deterioration is significant. The Rules however do not provide, for example, that the domestic industry must suffer financial losses for concluding that the domestic industry has suffered material injury. In case the performance of the domestic industry has deteriorated in respect of one or few parameters only, the Authority must conclude that the domestic industry has suffered material injury, provided that the Authority comes to a conclusion that the deterioration in these parameter more than off-sets the

improvement in other parameters. Therefore, in context of injury to the domestic industry in an anti-dumping investigation, the overall assessment of injury is required to be made on the basis of performance of the domestic industry in respect of various parameters. The domestic industry may respond to unfair practice of dumping depending upon the means available and strength of domestic industry. It is not necessary that decline should be recorded in all or majority of the lego-economic parameters. Even one or more of lego-economic parameter indicating injury may be sufficient to assess that domestic industry has suffered injury (Article 3.2 of Anti-dumping Agreement). It is further noted that it is not necessary that domestic industry may immediately approach the Authority for initiation of investigation on the commencement of dumping. The domestic industry may respond differently depending upon the strength of the domestic producers. However, when the domestic industry is unable to compete with unfair trade, then it may approach the Authority for investigation. The sign of injury in such a case would be available in the preceding years as well and the sharp decline would be missing in the period of investigation. That is why the injury analysis is conducted for more than one year whereas for the purpose of determination of dumping margin, the period is only one year.

I. Causal link and other factors

97. Having examined the existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti Dumping have been examined to see whether these any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry. Accordingly, the following parameters have been examined:

i) Volume and prices of imports from other sources

98. IBIS data shows that the subject goods are not being imported from other countries not under investigation. Therefore, the imports from other countries do not affect the prices in the domestic market;

ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

99. Demand for the subject goods shows a healthy growth during the entire injury investigation period and therefore, the injury to the domestic industry has nothing to do with the lack of demand in the country. The data on consumption and demand does not show any change in the pattern of consumption of the product.

iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

100. The goods are freely importable. The applicant is the one of the major producer of the subject goods and account for significant domestic production and sales. No other evidence of conditions of competition or trade restrictive practices has come to the knowledge of the Authority.

iv) Development in technology

101. There is no allegation of significant changes in technology, which could have caused injury to the domestic industry.

v) Export performance of the domestic industry

102. The Authority notes that the export sale of the domestic industry is significant. In respect of production and capacity, the Authority notes that domestic industry is improving its performance as overall equipment utilization was in range of 80%. However, the analysis of financial performance has been done for domestic sales only. Hence, export performance has not captured the injury to the domestic industry on its domestic sales. Therefore, the export performance cannot be considered as factor causing injury to the domestic industry.

Exports	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Export sales	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	146	157	130

vi) Productivity of the Domestic Industry

103. Productivity of the domestic industry has improved in terms of total output. Therefore, this cannot be attributed to the injury to the domestic industry.

104. The above non-attribution analysis shows that no other known factors, other than the dumped imports, appear to have affected the domestic industry.

Causal link

105. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated. Therefore, the causal links between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- a. The volume of dumped import from the subject country has sharply increased at significantly lower prices during the injury investigation

period, resulting in significant price undercutting and underselling. As a direct consequence, the domestic industry could not increase its prices in line with increase in the cost of production resulting in financial losses.

- b. Increase in import volumes and suppression of domestic prices adversely affected the profits, cash flow and return on investments of the company.
- c. Significant positive price undercutting resulted in increase in market share of imports from the subject country. The domestic industry appears to have responded to decline in import prices by suppressing its prices and suffered financial losses.

106. Therefore, the Authority concludes that the domestic industry suffers material injury and the injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports from the subject country.

I. Magnitude of Injury and injury margin

107. Post disclosure, M/s Luthra & Luthra submitted that the DGAD have erroneously withheld the disclosure of injury margin from interested parties. The same is particularly perplexing that the dumping margin arrived at has been provided to all interested parties. They further submitted that determination of non-injurious price has been made on some assumptive figures, details of which are not known to us.

108. The non-injurious prices for TCP of different sizes produced by the domestic industry as determined by the Authority on the basis of verified data of domestic industry has been compared with the landed value of the exports from the subject country for the same size and description of TCP for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exporters from the subject country and their injury margins have been worked out as follows:

	Injury Margin
All exporters from China PR	5% to 15%

J. Conclusions

109. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority, as recorded in this finding, the Authority concludes that:

- i) The subject goods have entered the Indian market from the subject country at prices less than their normal values in the domestic market of the exporting country;

- ii) The dumping margins of the subject goods imported from the subject country are substantial and above de minimis;
- iii) The domestic industry has suffered material injury and the injury has been caused to the domestic industry, both by volume and price effect of dumped imports of the subject goods originating in or exported from the subject country.

K. Indian industry's interest & other issues

110. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

L. Recommendations

111. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on various aspects of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry, in terms of the Rules laid down, and having established positive dumping margin against the subject country, and having concluded that the domestic industry suffers material injury due to such dumped imports.

112. Therefore, Authority considers it necessary and recommends imposition of the anti-dumping duty on imports of subject goods, from the subject country, in the form and manner described hereunder.

113. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. The Authority further notes that there is a significant differentiation of the product in terms of its capacity and prices, hence, a duty in terms of reference price or fixed duty would not be appropriate in this case. Therefore, the Authority recommends imposition of the measure as an ad valorem duty, to be worked out as a percentage of the CIF value of imports of the subject goods from the subject country. Accordingly, the antidumping duty equal to the amount arrived at by applying the percentage indicated in Col 9 of the duty table is recommended to be imposed from the date of issue of this findings, on imports of all types of Tyre Curing Presses (upto 130") originating in or exported from China PR.

Duty Table

Sl. No	Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	% of CIF Value
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1.	8477.5100	Tyre Curing Presses	All sizes upto 130"	China PR	China PR	Any	Any	10
2	8477.5100	Tyre Curing Presses	All sizes upto 130"	China PR	Any	Any	Any	10
3	8477.5100	Tyre Curing Presses	All sizes upto 130"	Any	China PR	Any	Any	10

114. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 5th march, 2009.

115. An appeal against the findings after its acceptance by the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

R. GOPALAN, Designated Authority